मासिक पत्रिका RAJHIN/2007/21229 वर्ष–02, अंक नं. 01

जयपुर टाइम्स

राजस्थान की रग–रग से निकली बात
जयपुर टाइम्स मैग्जीन के साथ

भजनलाल शर्मा के ग्राम विकास रथ 04

भजनलाल शर्मा के ग्राम विकास रथ और रात्रि चौपाल कार्यक्रम ग्रामीण विकास और सुशासन के प्रभावी माध्यम बने

नावां की हिस्ट्री में विजयसिंह चौधरी 11

नावां की हिस्ट्री में विजय सिंह चौधरी ने अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवाया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अच्छे सारथी.... 17

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अच्छे सारथी बने हैं अखिल अरोड़ा

नवाचारों से जेडीए का किया आधुनिकरण..... 23

अपने नाम के भावार्थ को साकार कर रहे "सिद्धार्थ महाजन": नवाचारों से जेडीए का किया आधुनिकरण

डॉ. समित शर्मा ऐसे आईएएस जिनके 30

डॉ. समित शर्मा ऐसे आईएएस जिनके अभूतपूर्व कार्यों, नवाचार और योजनाओं को पूरी दुनिया ने किया सैल्यूट

जमवारामगढ़ क्षेत्र में नए पेड़ों से ले आए 37

जमवारामगढ़ क्षेत्र में नए पेड़ों से ले आए बहार

जयपुर पश्चिम में साइबर ठग 45

जयपुर पश्चिम में साइबर ठग और गैंगस्टर पर प्रशांत किरण का हंटर

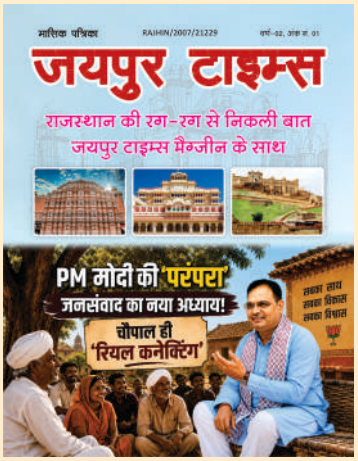

प्रकाशक, मुद्रक
रामेश्वर लाल जाट

संपादक
नीतू चौधरी

उप संपादक
कुमकुम रंगा, रूपचंद गुर्जर, रोहित शर्मा

ग्राफिक डिजाईनर
रजत जाखड़

स्वत्वाधिकारी

केम्ब्रिज मल्टी मीडिया के लिए प्रकाशक, मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा केम्ब्रिज मल्टी मीडिया प्रा.लि. सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़ जयपुर से प्रकाशित

संपर्क
संपादक
जयपुर टाइम्स (मासिक)
सी-588, सी-4सी स्कीम,
न्यू लोहा मण्डी रोड़
जयपुर-302013

E-mail
jaipurtimes2007@gmail.com

website
www.jaipurtimes.org

मो. 7014217770

मूल्य:- 100/- प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता- 1251 (पोस्टल चार्ज सहित)

सुधी पाठकों के लिए जयपुर टाइम्स का विशेष संदेश

युद्ध नहीं, संवाद ही भविष्य का मार्ग

अमेरिका और ईरान के बीच हाल के वर्षों में बढ़ते तनाव और सैन्य टकराव ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि आधुनिक विश्व में किसी भी युद्ध का प्रभाव केवल युद्धरत देशों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसकी गूंज पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था, राजनीति और सामाजिक व्यवस्था पर सुनाई देती है। यह सही है कि इस संघर्ष से कोई स्पष्ट और स्थायी राजनीतिक परिणाम नहीं निकला। न तो किसी पक्ष को निर्णायक विजय प्राप्त हुई और न ही क्षेत्रीय समस्याओं का कोई स्थायी समाधान सामने आया। इसके बावजूद इस युद्ध और तनावपूर्ण परिस्थितियों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने, निवेशकों के विश्वास को कमजोर करने और अनेक देशों को आर्थिक चुनौतियों के दौर में धकेलने का कार्य अवश्य किया है।

आज की दुनिया पहले की तुलना में कहीं अधिक परस्पर जुड़ी हुई है। वैश्वीकरण के इस युग में किसी एक क्षेत्र में उत्पन्न संकट का प्रभाव हजारों किलोमीटर दूर स्थित देशों पर भी पड़ता है। अमेरिका और ईरान के बीच तनाव का सबसे बड़ा असर ऊर्जा क्षेत्र पर देखने को मिला। ईरान विश्व के प्रमुख तेल उत्पादक देशों में से एक है और मध्य-पूर्व वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति का केंद्र माना जाता है। जब भी इस क्षेत्र में युद्ध या संघर्ष की आशंका बढ़ती है, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें तेजी से बढ़ने लगती हैं। तेल की कीमतों में वृद्धि का सीधा प्रभाव परिवहन, उद्योग, कृषि और उपभोक्ता वस्तुओं की लागत पर पड़ता है। परिणामस्वरूप महंगाई बढ़ती है और आम नागरिकों की क्रय शक्ति कमजोर होती है। इस संघर्ष ने वैश्विक व्यापार पर भी नकारात्मक प्रभाव डाला। समुद्री मार्गों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ी, विशेषकर होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण मार्गों पर। यह मार्ग विश्व के तेल व्यापार का एक बड़ा हिस्सा संभालता है। यदि यहां किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न होता है तो पूरी दुनिया की ऊर्जा आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। ऐसी आशंकाओं के कारण अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक गतिविधियों में अनिश्चितता बढ़ी और कई देशों की आर्थिक योजनाएं प्रभावित हुईं। युद्ध का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव निवेश और वित्तीय बाजारों पर दिखाई देता है। जब किसी क्षेत्र में संघर्ष बढ़ता है तो निवेशक जोखिम लेने से बचते हैं। वे अपने निवेश को सुरक्षित विकल्पों की ओर स्थानांतरित करने लगते हैं। इससे शेयर बाजारों में गिरावट आती है, विदेशी निवेश कम होता है और विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। अमेरिका-ईरान तनाव के दौरान भी विश्व के कई प्रमुख शेयर बाजारों में अस्थिरता देखी गई। यह स्थिति बताती है कि युद्ध केवल सैनिकों के बीच नहीं लड़ा जाता, बल्कि इसका प्रभाव उद्योगों, व्यापारियों, निवेशकों और आम नागरिकों तक पहुंचता है।

सबसे दुखद पहलू यह है कि युद्धों में सबसे अधिक नुकसान आम जनता को उठाना पड़ता है। चाहे कोई भी पक्ष विजयी घोषित हो, मानव जीवन की क्षति, विस्थापन, मानसिक तनाव और आर्थिक कठिनाइयों का सामना सामान्य नागरिकों को ही करना पड़ता है। युद्ध के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और विकास जैसी प्राथमिक आवश्यकताएं पीछे छूट जाती हैं। जिन संसाधनों का उपयोग विकास परियोजनाओं, अनुसंधान, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक कल्याण पर किया जा सकता था, वे सैन्य खर्चों में खर्च हो जाते हैं। परिणामस्वरूप समाज का समग्र विकास प्रभावित होता है। इस पूरे घटनाक्रम से विश्व समुदाय को कई महत्वपूर्ण सीख लेने की आवश्यकता है। पहली और सबसे बड़ी सीख यह है कि युद्ध किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। इतिहास गवाह है कि अधिकांश युद्ध अंततः बातचीत और समझौतों के माध्यम से ही समाप्त हुए हैं। यदि वही संवाद पहले शुरू कर दिया जाए तो अनावश्यक विनाश और आर्थिक क्षति से बचा जा सकता है। इसलिए सभी देशों को कूटनीति, संवाद और शांतिपूर्ण समाधान को प्राथमिकता देनी चाहिए। दूसरी सीख यह है कि किसी भी देश को अपनी अर्थव्यवस्था को अत्यधिक रूप से एक ही संसाधन या क्षेत्र पर निर्भर नहीं बनाना चाहिए। ऊर्जा संकट ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का विकास और ऊर्जा आत्मनिर्भरता भविष्य की आवश्यकता है। सौर, पवन और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में निवेश बढ़ाकर देश बाहरी संकटों के प्रभाव को कम कर सकते हैं। तीसरी सीख यह है कि वैश्विक संस्थाओं की भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। यदि अंतरराष्ट्रीय समुदाय समय रहते मध्यस्थता करे तो अनेक संघर्ष बड़े युद्धों में बदलने से रोके जा सकते हैं। चौथी और अत्यंत महत्वपूर्ण सीख यह है कि आर्थिक स्थिरता और राष्ट्रीय सुरक्षा एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। केवल सैन्य शक्ति किसी देश को सुरक्षित नहीं बना सकती। मजबूत अर्थव्यवस्था, स्थिर सामाजिक व्यवस्था, तकनीकी आत्मनिर्भरता और मजबूत अंतरराष्ट्रीय संबंध भी राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। इसलिए देशों को संतुलित विकास की नीति अपनानी चाहिए।

आज विश्व अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है-जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा संकट, महामारी का खतरा और आर्थिक असमानता इनमें प्रमुख हैं। ऐसे समय में युद्ध और संघर्ष मानवता की समस्याओं को और अधिक जटिल बना देते हैं। दुनिया को हथियारों की दौड़ नहीं, बल्कि सहयोग और साझेदारी की आवश्यकता है। संसाधनों का उपयोग विनाश के बजाय विकास के लिए होना चाहिए। अमेरिका-ईरान संघर्ष ने भले ही कोई स्पष्ट विजेता तय नहीं किया हो, लेकिन इसने पूरी दुनिया को यह अवश्य दिखा दिया कि आधुनिक युग में युद्ध की कीमत बहुत अधिक होती है। इसका भुगतान केवल युद्धरत देश ही नहीं, बल्कि पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था और आम नागरिक करते हैं। इसलिए समय की मांग है कि राष्ट्र अपने मतभेदों को बातचीत, कूटनीति और सहयोग के माध्यम से सुलझाएं। शांति, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि ही वह मार्ग है जिस पर चलकर विश्व एक सुरक्षित और बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकता है। युद्ध किसी की जीत नहीं, बल्कि मानवता की सामूहिक हार साबित होता है।

-प्रधान संपादक
रामेश्वरलाल जाट

भजन लाल शर्मा के ग्राम विकास रथ और रात्रि चौपाल कार्यक्रम ग्रामीण विकास और सुशासन के प्रभावी माध्यम बने

प्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री जिन्होंने प्रदेश भर में भीषण गर्मी में एक नहीं, बल्कि अनेक गांवों में रात्रि चौपाल आयोजित करके ग्रामीणों से संवाद ही नहीं किया, बल्कि किसान के घर में भोजन ग्रहण कर रात्रि विश्राम भी गांव में ही किया। भीषण गर्मी में संपादित किए गए रात्रि चौपाल और ग्रामीण विकास रथ कार्यक्रमों ने भजनलाल सरकार के ग्रामीण विकास और सुशासन के संकल्प को साकार किया। मुख्यमंत्री के इन कार्यक्रमों से प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में भी ऊर्जा का संचार हुआ। प्रदेश के सभी जिला कलेक्टर और सभी सरकारी विभाग के अधिकारी भीषण गर्मी में फील्ड में उतरकर किसान, महिला, मजदूर और युवाओं से संवाद करके उनकी समस्याओं का निस्तारण करते आए नजर। रात्रि चौपाल में ग्रामीणों की शिकायत पर अधिकारियों के खिलाफ लिया एक्शन, रात्रि चौपाल में ग्रामीण विकास के लिए आर्थिक स्वीकृतियां दीं और नई घोषणाएं भी की।

जयपुर। प्रदेश में कई लोकप्रिय मुख्यमंत्री हुए हैं, जिन्हें जनता का खूब प्यार और आशीर्वाद भी मिला, लेकिन सिर्फ सवा दो साल के अपने मुख्यमंत्री पद के अब तक के छोटे से कार्यकाल में ही मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आमजन के बीच जो लोकप्रियता हासिल की है, ऐसी लोकप्रियता प्रदेश में पहले किसी मुख्यमंत्री के प्रति देखने को नहीं मिली। मुख्यमंत्री पद के इस छोटे से कार्यकाल में ही कई बड़ी उपलब्धियां अपने अकाउंट में क्रेडिट कर भजन लाल शर्मा ने अपने उत्कृष्ट कार्यों और उल्लेखनीय जन कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों से राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश के मुख्यमंत्रियों में अपनी अमिट छाप छोड़ दी है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा हाई कमान को भी अपने उस दिन के फैसले पर फक्र हो रहा है जब भजन लाल शर्मा को राजस्थान में भाजपा विधायक दल का नेता चुने जाने का फैसला लिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह तो प्रदेश में कई बार सार्वजनिक सभा में भजनलाल सरकार के कार्यों की खुलकर प्रशंसा भी कर चुके हैं। पिछले दिनों केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी जोधपुर में अपने प्रवास के दौरान एक कार्यक्रम में भजन लाल शर्मा की जमकर प्रशंसा की थी, और कहा था कि राजस्थान के इतिहास में भजन लाल शर्मा का कार्यकाल हमेशा-हमेशा याद किया जाएगा। इसलिए यह तो मानना ही पड़ेगा कि भजनलाल शर्मा पार्टी के कुशल संगठनकर्ता ही नहीं हैं, बल्कि मुख्यमंत्री पद के कार्यकाल की छोटी सी अवधि में ही उन्होंने खुद को एक श्रेष्ठ कुशल शासक के रूप में भी सिद्ध करके दिखाया। यह उस समय और भी महत्वपूर्ण और अचरज वाला विषय बन जाता है, जब वे पहली बार के विधायक और मुख्यमंत्री बनाए जाने के बावजूद भी उन्होंने प्रदेश में शासन की बागडोर को बहुत ही खूबसूरती और मजबूती के साथ संभाला ही नहीं, बल्कि कई बड़े-बड़े ऐसे चमत्कारिक और क्रांतिकारी निर्णय और फैसले लिए जिनके बारे में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। इन अद्भुत निर्णय और फैसलों ने प्रदेश के विकास को तेजी से आगे बढ़ाया है, जिससे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के सपने को साकार करने की दिशा में राजस्थान विकसित स्टेट बनने की दिशा में मेट्रो ट्रेन की रफ्तार से तेजी से दौड़ रहा है।

प्रदेश में पिछले सवा दो साल में पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा, फॉरेस्ट, खनन, पर्यावरण, परिवहन, राजस्व, कृषि, उद्योग, चिकित्सा, महिला सुरक्षा, शांति और कानून व्यवस्था, अपराधों पर नियंत्रण, स्किल डेवलपमेंट, रोजगार, टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, पुलिसिंग

इत्यादि सभी क्षेत्रों में प्रदेश में तेजी से विकास और सुधार हुआ है। भजनलाल सरकार की ओर से इन सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कई बड़े निर्णय और कई बड़ी नई योजनाएं शुरू की गई हैं, जिसकी वजह से प्रदेश में एक भी क्षेत्र विकास की दृष्टि से अछूता नहीं बचा। हर क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास कार्य हुए, जिससे प्रदेश में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिला है। इसीलिए प्रदेश की विकास की यात्रा का यह सुनहरा सफर पूरे देश में चर्चा का विषय भी बना हुआ है। यहां तक की भजनलाल सरकार की ओर से लिए गए कुछ फैसलों को देश की अन्य राज्यों की सरकारों ने भी अपने यहां लागू किया है। इसलिए राजस्थान स्टेट का यह बदलता हुआ अंदाज और कलेवर देश और विदेश के इन्वेस्टर को भी खूब आकर्षित कर रहा है। इसीलिए पिछले सवा दो साल में प्रदेश में बड़ी संख्या में विभिन्न क्षेत्रों में करोड़ों-अरबो रुपए के निवेश हुए हैं, जो प्रदेश के विकास को बुलंदी पर ले जा रहे हैं। इन सब के बीच मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अपने सरल, सहज और मधुर व्यवहार से प्रदेश की जनता में तो काफी लोकप्रिय हो गए हैं, बल्कि अपने व्यक्तित्व से केंद्र सरकार के तमाम मंत्रियों का भी दिल जीत लिया है। इसलिए जब भी दिल्ली जाते हैं, वहां केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात करके राजस्थान के विकास के लिए कुछ ना कुछ बड़ी सौगात लेकर जरूर लौटते हैं। उनकी यही अदा उन्हें अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री से बिल्कुल अलग करती है।

आगामी पंचायत और नगर निकाय चुनाव में भाजपा उम्मीदवारों को बेनिफिट मिलने की पूरी उम्मीद

प्रदेश में आने वाले महीनों में पंचायत और नगर निकाय के चुनाव भी होने वाले हैं। हालांकि हाईकोर्ट ने तो 31 जुलाई तक पंचायत और नगर निकाय के चुनाव करवाने के सरकार को निर्देश दिए हैं। अब यह देखने वाली बात होगी कि प्रदेश में पंचायत और नगर निकाय के चुनाव कौन से महीने में होंगे, लेकिन इतना जरूर है प्रदेश भर में हाल ही में संपादित हुई ग्राम विकास रथ यात्रा और मुख्यमंत्री के रात्रि चौपाल कार्यक्रमों से प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों में प्रदेश की भजन लाल सरकार ने अच्छी पकड़ बना ली है। इसका बेनिफिट भाजपा के उम्मीदवारों को आगामी पंचायत और नगर निकाय के चुनाव में मिल सकता है। क्योंकि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक तरफ जहां अपने सरल, सीधे और अच्छे व्यवहार से प्रदेश के लोगों में एक मुख्यमंत्री के रूप में नहीं, बल्कि एक सच्चे जनसेवक के रूप में खुद की पहचान बनाई है, तो दूसरी तरफ सरकार के पिछले सवा दो साल के कामकाज, उपलब्धियां और जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी उन्हें प्रभावी रूप से जानकारी मिली। जिसकी वजह से प्रदेश के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के लोग सरकार के कामकाज से काफी संतुष्ट और प्रभावित दिख रहे हैं, जो निश्चित रूप से पंचायत और नगर निकाय चुनाव में भाजपा के लिए एक अच्छी खबर मानी जा सकती है। हालांकि इसमें कोई संदेह नहीं पिछले सवा दो साल में भाजपा सरकार ने प्रदेश के विकास और जनता की भलाई के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी और हर क्षेत्र में प्रदेश के विकास को तेजी से आगे बढ़ाया। लेकिन यह भी सत्य है कि प्रदेश के अधिकांश आबादी गांव में रहती है, और गांव तक प्रशासनिक स्तर पर हर तरह से प्रयास और कोशिश करने के बावजूद भी कई लोगों तक सरकार की योजनाएं नहीं पहुंच पातीं। जिसकी वजह से शानदार काम करने के बावजूद भी कई बार ग्रामीण क्षेत्र के उन लोगों को ऐसा लगता है कि सरकार उनकी नहीं सुन रही। लेकिन ग्राम विकास रथ कार्यक्रम और मुख्यमंत्री के खुद गांव में जाकर रात्रि चौपाल का आयोजन कर सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी देने से प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को सरकार की योजनाओं को समझने में काफी मदद मिली। साथ-साथ प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को यह भी लगने लगा है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजमान भजनलाल शर्मा ग्रामीण क्षेत्र के विकास और ग्रामीण जनता को लेकर बहुत ज्यादा चिंतित हैं। इसीलिए भीषण गर्मी में भी गांव गांव जाकर लोगों की पीड़ा को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं। तो मुख्यमंत्री के इस अच्छे और सरल व्यवहार और उनके इन शानदार प्रयासों से प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के दिलों में भजन लाल शर्मा ने अपना एक अलग मुकाम बना लिया है, जो निश्चित रूप से आगामी पंचायत और नगर निकाय चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के लिए फायदे का सौदा साबित हो सकता है।

ग्राम विकास रथ कार्यक्रम से ग्रामीण विकास को लगे पंख, ग्रामीणों के चेहरों पर आई चमक

जानकार लोगों का कहना है कि भजनलाल सरकार की ओर से प्रदेश भर में संपादित की गई ग्राम विकास रथ यात्रा निश्चित रूप से प्रदेश के ग्रामीण विकास को पंख लगाएगी। क्योंकि केंद्र की मोदी और प्रदेश की भजनलाल सरकार की ओर से संचालित की जा रही विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं, सरकार के कार्यक्रमों को जिस प्रभावी तरीके से इस रथ यात्रा के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को बताया गया, उससे निश्चित रूप से वह ग्रामीण जो अब तक इन योजनाओं के बारे में जानते नहीं थे, उन्हें भी योजनाओं की जानकारी मिली, जिससे वे लोग भी अब सरकारी योजनाओं का फायदा उठा सकेंगे। इसके अलावा इन ग्राम विकास रथ से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों, किसानों, महिलाओं, और युवाओं को खेती, पशुपालन, मत्स्य पालन, मछली पालन, डेरी सेक्टर, स्किल डेवलपमेंट इत्यादि के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारियां दी गईं। इन रथ यात्रा के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में किसानों को खेती में आधुनिक तरीकों, यंत्र उपकरण का उपयोग करने के साथ-साथ खेतों में मिट्टी का नियमित रूप से कृषि वैज्ञानिक से परीक्षण करवा कर कृषि वैज्ञानिक की सलाह के आधार पर ही फसल उगाना, खाद का उपयोग करना, सिंचाई में फवारा पद्धति का उपयोग करना, जैविक खेती को बढ़ावा देना जैसे विषयों पर किसानों को सरल और सीधे शब्दों में जानकारी दी गई। इसके अलावा किसानों को सौर ऊर्जा संयंत्र लगाने के बारे में भी सरकार की ओर से उपलब्ध की जाने वाली सुविधाओं के बारे में बताया गया। किसान अपनी इनकम को कैसे बढ़ा सकता है, इसके लिए उन्हें पशुपालन, मछली पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन जैसे छोटे-छोटे उद्योगों के बारे में भी जानकारी देकर यह बताया गया कि सरकार इसके लिए हर तरह से मदद कर रही है। इसके अलावा आधुनिक खेती को बढ़ावा देने के साथ-साथ कृषक को फल सब्जियां ज्यादा से ज्यादा उत्पादित करने के लिए किसानों को प्रेरित किया गया, और यह बताया गया कि किस तरह से छोटी जमीन में और कम पानी में भी किसान अच्छी इनकम कर सकता है। इसलिए यह ग्राम विकास रथ यात्रा ग्रामीणों के लिए वरदान सी बन गई। ग्रामीणों ने इन ग्राम विकास रथ यात्रा का अच्छा स्वागत भी किया। गांव में पहुंचने पर ग्राम विकास रथ यात्रा के साथ मौजूद अधिकारियों और कर्मचारियों का भी ग्रामीणों ने सम्मान किया। इस ग्राम विकास रथ यात्रा में सरकार की ओर से एक सुझाव पेटी भी स्थापित की गई थी, ताकि ग्रामीण अपनी समस्याएं और सुझाव कागज में लिखकर इस पेटी में डाल दें। जिस पर ग्रामीणों ने भी बड़ी संख्या में अपनी शिकायत और सुझाव पेटी के माध्यम से सरकार तक पहुंचाया, जिन्हें सरकार काफी गंभीरता से ले रही है। यह ग्राम विकास रथ प्रदेश के करीब 175 विधानसभा क्षेत्र में संपादित किए गए, और हर विधानसभा क्षेत्र में इन ग्राम विकास रथ का मार्ग इस तरह से तैयार किया गया कि यह रथ यात्रा ज्यादा से ज्यादा गांव तक पहुंचे। इसके अलावा क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों और भारतीय जनता पार्टी के संगठन से जुड़े नेताओं को भी इस ग्राम विकास रथ यात्रा के सफलतापूर्वक संपादन के लिए पूरा सहयोग देने को निर्देशित किया गया था। जिस पर भारतीय जनता पार्टी के विधायकों और संगठन से जुड़े नेताओं ने इस रथ यात्रा के सफलतापूर्वक संपादन में अपनी अच्छी भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों, जिला कलेक्टर और जिला स्तर पर तैनात छोटे बड़े सभी अधिकारियों को इस रथ यात्रा के सफलतापूर्वक संपादन के लिए निर्देशित किया था। जिस पर विभिन्न जिलों के कलेक्टरों ने इस रथ यात्रा के सफलतापूर्वक संपादन में अपनी अच्छी भूमिका भी निभाई। कुल मिलाकर 17 अप्रैल से 16 मई तक प्रदेश के अधिकांश विधानसभा क्षेत्र में संपादित की गई ग्राम विकास रथ यात्रा प्रदेश में ग्रामीण विकास का एक बहुत बड़ा माध्यम बन गई है। इस रथ यात्रा ने ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जीवन को खुशहाल बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है।

भीषण गर्मी में गांव की अपनी रात्रि चौपाल कार्यक्रम से भजनलाल शर्मा लोगों को पहुंचा रहे ठंडक

प्रदेश में भीषण गर्मी का प्रकोप जारी है। मई के महीने में प्रदेश के सभी जिलों में दिन और रात का तापमान हाई लेवल पर रहा, लेकिन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की समस्याओं का निस्तारण करने के लिए तपती धूप में मुख्यमंत्री आवास से निकल पड़े। एक के बाद एक, प्रदेश में कई जिलों में गांव में जाकर उन्होंने रात्रि चौपाल कार्यक्रम का आयोजन करके ग्रामीणों से कई घंटे तक बातचीत की। बातचीत के दौरान उन्होंने ग्रामीणों से उनकी समस्याओं के बारे में भी पूछा, तो सरकार की योजनाओं के बारे में भी सवाल-जवाब करके सरकारी योजनाओं का ग्रामीणों से फीडबैक लिया। ग्रामीण विकास के लिए सरकार आगे और क्या कदम उठाए, इसके बारे में भी ग्रामीण लोगों से सुझाव लिए, ताकि बजट तैयार करते समय इन सुझावों के आधार पर जनकल्याणकारी योजनाओं का ड्राफ्ट तैयार किया जा सके।

मुख्यमंत्री शर्मा ने मई जैसे भीषण गर्मी वाले महीने में सीकर, बांसवाड़ा, जालौर, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, अजमेर इत्यादि जिलों के विभिन्न गांव में जाकर रात्रि चौपाल का आयोजन करके ग्रामीण लोगों के दुख दर्द जाने, और उनकी तकलीफों का निस्तारण भी करवाया। मुख्यमंत्री शर्मा ने अजमेर के कड़ेल, जालौर के पंसेरी, सीकर के जाजोद, बांसवाड़ा के चूड़ेदा, डूंगरपुर के धंबोला इत्यादि गांवों में जाकर उन्होंने ग्रामीणों से सीधे मुलाकात ही नहीं की, बल्कि गांव में ही किसान और मजदूर के घर में भोजन ग्रहण करके गांव में ही रात्रि विश्राम भी किया। और फिर सुबह जल्दी उठकर मॉर्निंग वॉक के दौरान गांव की फेरी लगाते हुए ग्रामीणों से बातचीत की, और ग्रामीणों की समस्याएं सुनने के साथ-साथ सरकार की योजनाओं के बारे में भी फीडबैक लिया। मुख्यमंत्री शर्मा का यह रात्रि चौपाल का कार्यक्रम ग्रामीणों के लिए हमेशा-हमेशा यादगार लम्हा बन गया, क्योंकि चुनाव के दौरान तो सभी दलों के राजनेता चुनाव प्रचार के लिए गांव-गांव आते ही हैं, लेकिन यह पहली बार था जब किसी मुख्यमंत्री ने किसी गांव में आकर ग्रामीणों से कई घंटे तक सीधे बातचीत की हो, और फिर गांव में ही भोजन करके रात्रि विश्राम किया हो। अन्यथा ग्रामीण तो एसडीएम के दर्शन के लिए ही तरस जाते हैं, लेकिन जब उन्होंने रात्रि चौपाल में प्रदेश के मुख्यमंत्री को अपने सामने देखा, तो यह दृश्य हर ग्रामीण के लिए यादगार लम्हा बन गया। बड़ी बात

यह है कि मुख्यमंत्री का यह कार्यक्रम सिर्फ दिखावे का नहीं था, बल्कि मुख्यमंत्री इस कार्यक्रम को लेकर काफी संवेदनशील और गंभीर रहे। ग्रामीणों से बातचीत के दौरान अगर ग्रामीणों ने किसी अधिकारी के खिलाफ कोई शिकायत की, तो तुरंत मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की। जैसे बांसवाड़ा जिले में आयोजित रात्रि चौपाल में ग्रामीणों ने जब बीसीएमएचओ की शिकायत की, तो मुख्यमंत्री ने तुरंत ही बीसीएमएचओ के खिलाफ कार्रवाई की। इसी तरह से डूंगरपुर में जब लोगों ने डूंगरपुर नगर निगम के आयुक्त के खिलाफ शिकायत की, तो मुख्यमंत्री ने तुरंत इस मामले में आयुक्त के खिलाफ एक्शन लिया। इस तरह से अपने इन कार्यक्रमों में मुख्यमंत्री ने एक तरफ लोगों की शिकायत और समस्याओं का त्वरित गति से निस्तारण करवाया, तो दूसरी तरफ मौके पर ही मुख्यमंत्री ने ग्रामीणों की डिमांड पर विकास कार्यों के लिए आर्थिक स्वीकृति भी मंजूर की और ग्रामीणों की डिमांड पर कई नई घोषणाएं भी कीं।

रात्रि चौपाल में इलेक्ट्रिक गाड़ी में ही सवार होकर गांव में पहुंच रहे भजनलाल शर्मा, मोदी की अपील को फॉलो करने में पूरे देश में अव्वल

जिस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की जनता को पेट्रोल और डीजल का कम उपयोग करने की अपील की थी, मोदी की इस अपील को फॉलो करने में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा पहले दिन से ही सबसे आगे दिखाई दे रहे हैं। मुख्यमंत्री शर्मा ने पेट्रोल और डीजल बचाने तथा सरकारी खर्च को कम करने की दिशा में एक तरफ जहां अपने सुरक्षा प्रोटोकॉल की गाडियों में कई गाडियां हटा दीं, और वर्तमान में सिर्फ इलेक्ट्रिक गाड़ी का ही आने-जाने में इस्तेमाल कर रहे हैं, तो उन्होंने राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों को भी सुरक्षा प्रोटोकॉल में गाडियों की संख्या कम करने को कहा। इसके बाद सरकार के सभी मंत्रियों ने अपने सुरक्षा प्रोटोकॉल से गाडियों के काफिले को हटा दिया और मुख्यमंत्री की तरह मंत्री भी इलेक्ट्रिक गाडियों में बैठकर आवागमन करते हुए दिख रहे हैं। इसके अलावा प्रदेश में अधिकारियों ने भी काफी हद तक पहले की तुलना में पेट्रोल और डीजल का कम उपयोग किया जाना सुनिश्चित कर दिया। पीएम मोदी की अपील को मुख्यमंत्री शर्मा इतनी गंभीरता से ले रहे हैं कि पिछले दिनों जब जयपुर के निकट बगरू में ठीकरिया गांव में रात्रि चौपाल का आयोजन था, तो वे एक इलेक्ट्रिक गाड़ी में ही विभिन्न सरकारी विभागों के अधिकारियों के साथ सवार होकर ठीकरिया गांव पहुंचे थे। मुख्यमंत्री का यह सरल और सहज अंदाज देखकर अधिकारी भी काफी हैरान रह गए, और ग्रामीणों और मीडिया में भी काफी देर तक चर्चा का विषय बन रहे। मुख्यमंत्री शर्मा ने एक आदेश जारी करके सरकार के मंत्रियों, अधिकारियों, निगम बोर्ड इत्यादि संस्थानों में तैनात पदाधिकारी के लिए विदेश दौरे पर पूरी तरह से फिलहाल पाबंदी लगा दी है। इसके अलावा चरणबद्ध तरीके से प्रदेश में सरकारी विभागों में पेट्रोल और डीजल की गाडियों को इलेक्ट्रिक गाडियों में बदलने के लिए निर्देश दिए हैं, तथा मंत्रियों और अधिकारियों को वर्चुअल मीटिंग आयोजित करने के अलावा ऑनलाइन तरीके से ज्यादा से ज्यादा सरकारी कामकाज कंप्लीट करने के निर्देश दिए हैं। कारपूलिंग और अन्य तरीकों से पेट्रोल और डीजल का कम से कम उपयोग किया जाना अधिकारियों के लिए सुनिश्चित किया है। मुख्यमंत्री शर्मा ने सरकारी खर्चे में ज्यादा से ज्यादा कटौती करने के लिए कई कड़े निर्देश जारी किए हैं, जिन्हें देख कर प्रदेश की जनता में भी काफी अच्छा मैसेज गया है। प्रदेश की जनता भी अब यह सोचने लगी है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सिर्फ जनसेवा और राष्ट्र प्रथम की भावना को ही आत्मसात किए हुए हैं, और प्रदेश के अधिकारियों, कर्मचारियों और आमजन को भी राष्ट्र प्रथम की भाव से काम करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इसीलिए राजस्थान पेट्रोल और डीजल का कम उपयोग करने के मामले में देश के अन्य राज्यों से काफी आगे चल रहा है। इसका पूरा श्रेय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को दिया जा सकता है।

मुख्यमंत्री के रात्रि चौपाल और ग्राम विकास रथ कार्यक्रमों से ब्यूरोक्रेसी में भी नई ऊर्जा का हुआ संचार

जानकार लोगों का कहना है कि प्रदेश में जिला कलेक्टरों की ओर से रात्रि चौपाल का आयोजन किए जाने के निर्णय पूर्व की सरकारों में भी देखने को मिले थे, लेकिन तत्कालीन सरकारों की उम्मीद के मुताबिक इन रात्रि चौपाल के आयोजन का मकसद कभी भी पूरा नहीं हुआ। इसलिए इस बार मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इन रात्रि चौपाल को प्रभावी रूप से संपादित करने के लिए खुद बीड़ा उठाया, और खुद रात्रि चौपाल का आयोजन करने के लिए भीषण गर्मी में भी गांव में रात बिताने लगे। जिस पर जिला कलेक्टरों ने भी यह देखा कि सरकार का मुखिया ही रात में ग्रामीणों के साथ संवाद करके गांव में ही रात्रि विश्राम कर रहा है, तो फिर उन्हें भी जिले का मुखिया होने के नाते अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से निभाने की शिक्षा मुख्यमंत्री से मिली। इसीलिए एक तरफ जहां मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश भर में अलग-अलग जिलों में जाकर भीषण गर्मी में रात्रि चौपाल का आयोजन कर रहे थे, तो प्रदेश में विभिन्न जिलों के कलेक्टर भी अपने-अपने जिलों में रात्रि चौपाल का आयोजन करके लोगों की समस्याओं का निस्तारण करते हुए देखे गए। साथ-साथ जिला कलेक्टरों की मॉनिटरिंग में ग्राम विकास रथ यात्रा भी संपादित होती गई। इस तरह से इन दोनों महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की वजह से प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। जिसमें जिले से जुड़े छोटे-बड़े अधिकारी से लेकर शासन सचिवालय और विभिन्न सरकारी संस्थाओं और विभागों में नियुक्त छोटे बड़े अधिकारी पिछले दो महीनों में प्रदेश में ज्यादातर फील्ड में ही नजर आए, जो प्रदेश की जनता की भलाई और प्रदेश के विकास के लिए काफी फायदेमंद साबित हुए। इस तरह से प्रदेश के छोटे बड़े सभी सरकारी विभागों में नियुक्त अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्यशैली और व्यवहार में पहले की तुलना में काफी कुछ बदलाव भी नजर आने लगा है। क्योंकि मुख्यमंत्री प्रदेश के लोगों की भलाई और विकास के लिए खुद भी भाग दौड़ कर रहे हैं, और अधिकारियों को भी भाग दौड़ के लिए प्रेरित किया है, इसकी वजह से प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है।

रात्रि चौपाल और ग्रामीण विकास रथ कार्यक्रमों से भजनलाल शर्मा की पूरे देश में चर्चा

जानकार लोगों का कहना है कि देश अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान में गर्मी सबसे ज्यादा पड़ती है। इसमें मई और जून इन दो महीनों में तो गर्मी पूरे प्रदेश में जानलेवा होती है, ग्रामीण क्षेत्रों में तो रात के समय गर्म हवा, धूल भरी आंधी से लोगों का जीना मुश्किल हो जाता है। ऐसे कठिन और विपरीत हालातों में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने खुद आगे बढ़कर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों से सीधा संवाद करना मुनासिब समझा, और मई जैसे भीषण गर्मी के महीने में प्रदेश के कई जिलों में कई गांव में जाकर ग्रामीणों से खुले में बैठकर संवाद किया। और फिर उन्होंने साधारण किसान के घर साधारण सुविधाओं में ही रात्रि भोजन करके वहीं पर रात्रि विश्राम किया, और फिर सुबह जल्दी उठकर गांव में भ्रमण किया। यह सब सोशल मीडिया के जमाने में राजस्थान की जनता ने ही नहीं, बल्कि पूरे देश की जनता ने अपनी आंखों से एक मुख्यमंत्री को इस तरह से भीषण गर्मी में ग्रामीणों के साथ दिन और रात गुजारते देखा, तो हर कोई हैरान और आश्चर्यचकित रह गया। एक तरफ 16 अप्रैल से प्रदेश में अधिकांश विधानसभा क्षेत्र में गांव-गांव घूम रहे भजनलाल सरकार के ग्रामीण विकास रथ गांव को जगा रहे थे, और ग्रामीणों को सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी देकर उनके जीवन को खुशहाल बनाने का प्रयास कर रहे थे। तो दूसरी तरफ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अपने रात्रि चौपाल कार्यक्रमों से पूरे देश में चर्चा का केंद्र बिंदु बन रहे। पहले भाजपा शासित राज्यों में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ज्यादा चर्चा में रहते थे, लेकिन अब भजन लाल शर्मा अपने कार्यों, अपनी वर्किंग स्टाइल और अपनी सादगी के लिए पूरे देश में चर्चा का केंद्र बिंदु बने हुए हैं।

रात्रि चौपाल और ग्राम विकास रथ कार्यक्रमों से भाजपा के संगठन को भी मिली मजबूती

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर प्रदेश में शुरू किए गए ग्राम विकास रथ कार्यक्रम और मुख्यमंत्री शर्मा और जिला कलेक्टरों की ओर से आयोजित किए गए रात्रि चौपाल के कार्यक्रमों से प्रदेश के लोगों को तो काफी फायदा हुआ ही, इसके अलावा भारतीय जनता पार्टी के संगठन को भी काफी मजबूती मिली है। क्योंकि सरकार की ओर से शुरू किए गए इन महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की वजह से भारतीय जनता पार्टी के संगठन से जुड़े लोग भी इन कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी निभा रहे थे। जिसकी वजह से एक तरफ सरकार से जुड़े लोग प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों से निरंतर मुलाकात कर रहे थे, तो दूसरी तरफ भाजपा के संगठन से जुड़े लोग भी लोगों से नियमित रूप से संपर्क में रहे। जिसकी वजह से सत्ता और संगठन दोनों के लिए यह कार्यक्रम काफी फायदेमंद साबित हुए हैं, जिसका अच्छा असर भाजपा को आगामी चुनाव में देखने को मिल सकता है। जानकार लोगों का कहना है कि मुख्यमंत्री बनने से पहले भजनलाल शर्मा करीब 20 साल तक प्रदेश भाजपा के लगातार महामंत्री रहे। इसलिए वे इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि जनता का मिजाज जानने के लिए और जनता का दिल जीतने के लिए अगर लोगों से नियमित रूप से मुलाकात करते रहें और उनके सुख-दुख में शामिल होकर उनकी समस्याओं का निवारण करने का प्रयास करते रहें, तो यह सरकार और पार्टी दोनों के लिए काफी फायदे का सौदा होता है। इसीलिए अपने पुराने अनुभव का इस्तेमाल करते हुए मुख्यमंत्री शर्मा ने रात्रि चौपाल और ग्रामीण विकास रथ कार्यक्रमों की योजना तैयार करके उन्हें धरातल पर उतरा, जिसमें सरकार के साथ-साथ भारतीय जनता पार्टी के संगठन से जुड़े नेताओं और पार्टी के जनप्रतिनिधियों को भी एकजुट करने में एक मंच पर लाने में रात्रि चौपाल और ग्राम विकास कार्यक्रम काफी सहायक और महत्वपूर्ण साबित हुए हैं।

नावां की हिस्ट्री में विजय सिंह चौधरी ने अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवाया

पिता की तरह लोगों का पा रहे सम्मान, नावां को दिलाई नई पहचान, नावां के पहले ऐसे विधायक जिन्हें राजस्थान सरकार के मंत्रिमंडल में मिली जगह और अपनी जमीनी मजबूत पकड़ के दम पर इलाके में भारतीय जनता पार्टी का शान से लहरा रहे झंडा, पिता रामेश्वर लाल चौधरी के अधूरे कार्यों और सपनों को कर रहे पूरा

जयपुर। प्रदेश में पिछले गहलोत सरकार में काफी प्रभावशाली विधायक रहे महेंद्र चौधरी को पिछले विधानसभा चुनाव में बड़े मतों के अंतर से पराजित कर राजस्थान विधानसभा में दूसरी बार पहुंचे, विजय सिंह चौधरी ठीक उसी तरह से अपने निर्वाचन क्षेत्र नावां और आसपास के निर्वाचन क्षेत्र के लोगों से भरपूर प्यार और सम्मान पा रहे हैं, जैसे पूर्व में इनके पिता दिवंगत रामेश्वर लाल चौधरी ने कई सालों तक क्षेत्र की जनता से पाया था। हालांकि, यह बात अलग है कि इनके स्वर्गवासी पिता चार बार कांग्रेस पार्टी से विधायक रहे थे, लेकिन 2001 में इनके निधन के बाद कांग्रेस पार्टी ने इन्हें और इनके परिवार को पूरी तरह से भुला दिया। जबकि रामेश्वर लाल चौधरी 1972 से 1977, 1977 से 1980, 1980 से 1985 और 1993 से 1998 तक नावां से कांग्रेस पार्टी से विधायक चुने गए। इसलिए इतने सालों तक कांग्रेस पार्टी की समर्पित भाव से सेवा करने और चार बार कांग्रेस पार्टी से विधायक रहने के बावजूद भी, इनके निधन के बाद जब इनके बेटों विजय सिंह और दारा सिंह, को कांग्रेस पार्टी ने गले नहीं लगाया, तो फिर दिवंगत रामेश्वर लाल चौधरी के दोनों बेटों, विजय सिंह और दारा सिंह के पास दूसरी पार्टी ज्वाइन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। अपने पिता के निधन के बाद, अपने पिता की विरासत को मजबूती से संभालने और क्षेत्र के लोगों की सेवा करने तथा अपने पिता के अधूरे कार्यों को पूरा करने की नीयत से विजय सिंह ने 2003 और 2008 के विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस पार्टी से टिकट की मांग की थी। लेकिन पार्टी ने इन्हें टिकट नहीं दिया, तो क्षेत्र की जनता की सलाह और सुझाव के बाद विजय सिंह ने भाजपा को ज्वाइन करना मुनासिब समझा, फिर 2013 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने इन्हें नावां से चुनाव मैदान में उतारा, जिसमें विजय सिंह ने तत्कालीन कांग्रेस प्रत्याशी महेंद्र चौधरी को पराजित किया और पहली बार विधानसभा में दमदार तरीके से अपनी एंट्री मारी। तब से लेकर आज तक विजय सिंह भाजपा के संगठन को तो लगातार मजबूती प्रदान कर ही रहे हैं, इसके अलावा क्षेत्र के लोगों में अपने पिता की तरह लगातार पॉपुलर होते जा रहे हैं। निरंतर लोगों से संवाद और अपने पिता की तरह सहज और सरल दिखने वाले विजय सिंह अपने निर्वाचन क्षेत्र की छोटी-बड़ी सभी तरह की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार प्रयास करते रहते हैं। वर्ष 2013 से 2018 तक अपने विधायक रहने के दौरान, अपनी पार्टी की तत्कालीन वसुंधरा राजे सरकार के शासनकाल में भी इन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में काफी विकास कार्य करवाए। और वर्ष 2018 का विधानसभा चुनाव हारने के बावजूद भी इन्होंने अपने क्षेत्र के लोगों से मिलने जुलने का सिलसिला लगातार जारी रखा। रोजाना लगातार कार्यक्रम तैयार करके क्षेत्र में हर जाति और बिरादरी के लोगों से निरंतर मुलाकात करना और लोगों के सुख-दुख के अवसर पर अपनी उपस्थिति दिखाते रहे, जिसकी वजह से कभी भी इनका क्षेत्र के लोगों में जमीनी पकड़ और जुड़ाव कम नहीं हुआ। उसी का नतीजा रहा कि वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में विजय सिंह ने दोबारा से कांग्रेस प्रत्याशी महेंद्र चौधरी को करीब 23000 मतों से पराजित किया। इस शानदार जीत के बाद, विजय सिंह ने नावां की हिस्ट्री में एक ऐसे पहले विधायक के रूप में अपना नाम स्वर्णपन्नों में लिखवा लिया है, जिन्हें राजस्थान सरकार के मंत्रिमंडल में शामिल होने का नावां विधायक के रूप में पहली बार मौका मिला। विजय सिंह की इस उपलब्धि से क्षेत्र का प्रत्येक व्यक्ति खुद को तो खुद गौरवान्वित महसूस कर ही रहा है, इसके अलावा मंत्रिमंडल में जगह मिलने से क्षेत्र के विकास को भी तेजी से गति मिली है।

कांग्रेस के महेंद्र चौधरी को पराजित करना था काफी चुनौती पूर्ण

राजनीतिक विश्लेषक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में महेंद्र चौधरी को पराजित करना कोई मामूली नहीं था, क्योंकि पिछली गहलोत सरकार में महेंद्र चौधरी मंत्रिमंडल में तो शामिल नहीं थे, लेकिन उनकी भूमिका सरकार में कैबिनेट मंत्री की तरह ही थी। विधानसभा में कांग्रेस पार्टी के उप सचेतक जरूर थे, लेकिन राजस्थान विधानसभा की कार्रवाई, सत्ता तथा संगठन हर जगह महेंद्र चौधरी का पूरे 5 साल तक काफी प्रभाव देखने को मिला। इसके साथ साथ तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के भी काफी करीबी और विश्वासपात्र नेता रहे, इसलिए वर्ष 2023 का विधानसभा चुनाव जीतना विजय सिंह के लिए काफी चुनौती से भरा हुआ था। लेकिन यह कोई पहला अवसर नहीं था जब उनका महेंद्र चौधरी से चुनाव में मुकाबला हो रहा हो। इससे पहले 2013 के विधानसभा के चुनाव में भी विजय सिंह महेंद्र चौधरी को पराजित कर चुके थे। इसलिए विजय सिंह को अपनी मेहनत, समर्पित भाव से लोगों की सेवा करने का भाव, क्षेत्र की जनता से अपना गहरा जुड़ाव और पूर्व में क्षेत्र का विधायक रहने के दौरान किए गए अपने उल्लेखनीय विकास कार्यों से यह पूरा विश्वास था कि उन्हें फिर से चुनाव में जीत मिलेगी। उनका यह विश्वास क्षेत्र की जनता ने बनाए रखा और विजय सिंह भारी मतों के अंतर से चुनाव जीते। हालांकि, उनकी इस शानदार जीत में उनके पिता की शानदार और मजबूत राजनीतिक पृष्ठभूमि की भी भूमिका रही। इसके अलावा 2013 में विधायक रहने के दौरान इनकी ओर से क्षेत्र के विकास के लिए किए गए कार्यों को भी लोग याद कर रहे थे। तो दूसरी तरफ, कुचामन

विजय सिंह चौधरी नावां के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम लिखवाने में रहे कामयाब

विजय सिंह चौधरी के पिता रामेश्वर लाल चौधरी चार बार कांग्रेस पार्टी से चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंचे। बार-बार उनके चुनाव जीतने के बाद भी कांग्रेस पार्टी सरकारों के मंत्रिमंडल में उन्हें जगह नहीं मिल पाई। इसके अलावा वर्ष 2023 से पहले भाजपा और कांग्रेस किसी भी पार्टी के नावां के विधायक को राजस्थान सरकार के मंत्रिमंडल में कभी भी जगह नहीं मिली। लेकिन वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार का गठन होने के बाद और भजनलाल शर्मा के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजमान होने के बाद, विजय सिंह को सरकार के मंत्रिमंडल में जगह मिली। यह नावां के इतिहास में पहला मौका है जब यहां से चुने गए किसी विधायक को सरकार के मंत्रिमंडल में जगह मिली हो। इसलिए विजय सिंह की यह उपलब्धि अपने आप में काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इसीलिए विजय सिंह चौधरी के निर्वाचन क्षेत्र का हर व्यक्ति आज खुद को काफी गौरवान्वित महसूस कर रहा है। बड़ी बात यह है कि अगर किसी क्षेत्र का विधायक सरकार के मंत्रिमंडल का हिस्सा रहता है, तो उसे अपने निर्वाचन क्षेत्र के किसी भी विकास कार्य के लिए किसी भी विभाग के मंत्री के पास ज्यादा भागदौड़ नहीं करनी पड़ती, यह बड़ा फायदा होता है। इसीलिए विजय सिंह पिछले सवा दो साल में अपने निर्वाचन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर विकास कार्य करवाने में सफल हुए। बताया गया है कि विजय सिंह के पिता रामेश्वर लाल चौधरी जहां कांग्रेस से चार बार विधायक रहे, तो इसी सीट से हरिश्चंद्र कुमावत भी चार बार विधायक रहे, लेकिन कुमावत को भी कभी राजस्थान सरकार के मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिली। हालांकि, एक बार वसुंधरा राजे सरकार के शासनकाल में कुमावत को शिल्पकला, माटी बोर्ड का अध्यक्ष जरूर बनाया गया था, लेकिन सीधे तौर पर उन्हें कैबिनेट मंत्री या राज्य मंत्री नहीं बनाया गया। यह सम्मान और उपलब्धि अब तक वर्तमान विधायक विजय सिंह के अकाउंट में ही दर्ज हुई है।

पंचायत समिति के प्रधान पद पर रहने के दौरान भी विजय सिंह ग्रामीण विकास और ग्राम पंचायत के समुचित विकास के लिए कड़ी मेहनत और प्रयास करते हुए दिखे थे। इसी का परिणाम रहा कि उन्होंने 2023 के चुनाव में महेंद्र चौधरी को शिकस्त देने में कामयाबी मिली।

ईमानदार, कर्मठ और कड़ी मेहनत करने वाले मंत्री के रूप में विजय सिंह ने खुद को साबित किया

राजस्थान विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री हासिल करने वाले विजय सिंह चौधरी काफी समझदार और अनुभवी राजनेता है। अपने पिता की तरह ईमानदार और जनसेवा के कार्यों में हमेशा खुद को सबसे आगे रखते हैं, इसलिए इनकी ईमानदारी और समर्पित भाव से काम करने की हैबिट से सब परिचित हैं। इसीलिए इनकी अच्छी पर्सनैलिटी और चुनाव में इनकी शानदार जीत को देखते हुए ही इन्हें भजनलाल सरकार के मंत्रिमंडल में जगह दी गई। विजय सिंह खुद भी यह अच्छी तरह से जानते हैं कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और दिल्ली में बैठे भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेताओं ने काफी भरोसे और विश्वास के साथ इन्हें यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी है। इसके अलावा विजय सिंह यह भी जानते हैं कि वह पहले ऐसे नावा के विधायक हैं जिन्हें पहली बार राजस्थान सरकार के मंत्रिमंडल में जगह मिली है, इसलिए वे वे अपनी इस जिम्मेदारी को भली-भांति समझते हैं। इनके पास राजस्व, उपनिवेशन और सैनिक कल्याण विभाग की जिम्मेदारी राज्य मंत्री के रूप में है। अब तक मंत्री के रूप में इनका परफॉर्मेंस बहुत ही शानदार रहा है और इन अपने इन विभागों के सीनियर मंत्री के साथ इनका बहुत ही अच्छा समन्वय और तालमेल बना हुआ है, जिसके माध्यम से इन्हें अपने सीनियर मंत्री और मुख्यमंत्री की ओर से विभागों के संदर्भ में जो भी कार्य और जिम्मेदारी अब तक इन्हें दी गई है, उन्हें बहुत ही शानदार तरीके से निभाया है। इसमें कोई संदेह नहीं, एक मंत्री के रूप में इनके कारों और परफॉर्मेंस से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी काफी प्रभावित हैं। इन्होंने खुद को एक सक्रिय मंत्री के रूप में पूरी तरह से स्थापित किया हुआ है। बड़ी बात यह है कि विजय सिंह चौधरी अब तक दूसरी बार विधायक चुने गए हैं और पहली बार इस बार मंत्री के रूप में भी काम कर रहे हैं, लेकिन इतने लंबे पीरियड में किसी ने भी इनकी ईमानदारी पर सवाल खड़े नहीं किया। विधायक और मंत्री के रूप में इनका कार्यकाल अब तक पूरी तरह से बेदाग रहा है। वर्ष 2013 में जब मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे हुआ करती थी, उस समय विजय सिंह चौधरी पहली बार विधायक बनकर विधानसभा पहुंचे थे और अपनी पार्टी की सरकार होने का इन्होंने भरपूर फायदा उठाया था और जमकर अपने निर्वाचन क्षेत्र में विकास कार्य करवाए, लेकिन कभी भी किसी ने उनकी ईमानदारी पर सवाल खड़े नहीं किया। जो भी पैसा जिस भी योजना के लिए इनके निर्वाचन क्षेत्र में सरकार से स्वीकृत हुआ, उस एक एक पैसे का इन्होंने सदुपयोग करवाया। सरकार की ओर से अपने निर्वाचन क्षेत्र में संचालित हो रही विभिन्न तरह की विकास योजनाओं और विकास कार्यों काम मौके पर जाकर वर्ष 2013 में भी निरीक्षण किया करते थे और आज भी अपने निर्वाचन क्षेत्र में हो रहे सभी विकास कार्यों का नियमित रूप से मौके पर जाकर निरीक्षण करते हैं, ताकि अनियमितता और भ्रष्टाचार जैसी कोई गुंजाइश मौके पर पैदा ना हो। इनका यही भाव और यही सोच इन्हें क्षेत्र के लोगों में एक ईमानदार मंत्री के रूप में प्रसिद्ध किया हुआ है।

पिता से मिली राजनीतिक सीख ने विजय सिंह चौधरी को एक श्रेष्ठ और कुशल जनाधार वाला नेता बना दिया

राजस्थान विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान अपने अच्छे व्यवहार और कोऑपरेटिव नेचर से विजय सिंह चौधरी ने बड़ी संख्या में युवाओं को अपने साथ जोड़ लिया था। इसमें नागौर जिले के युवा भी बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान ही इनके साथ जुड़ गए थे, जो आज तक कदम कदम पर इनका साथ दे रहे हैं। बाद में पढ़ाई के बाद अपने पिता के निधन के बाद जब इन्होंने राजनीति में कदम रखा, तब भी शुरुआती दिनों में ही बड़ी संख्या में युवा इनके अच्छे व्यवहार से इनके साथ हमेशा खड़े रहे। विजय सिंह चौधरी ने बचपन से ही अपने पिता रामेश्वर चौधरी को जन सेवा के प्रति समर्पित भाव से कार्य करते हुए देखा था। सुबह से लेकर देर रात तक अपने पिता को लोगों की सेवा करते हुए देखकर इनके दिल में भी अपने पिता की तरह लोगों की सेवा करने का भाव जाग उठा था। इसीलिए जब भी मौका मिलता, अपने पिता के साथ क्षेत्र के दौर में निकल जाते थे। इसलिए विजय सिंह के इस बेहतरीन व्यक्तित्व में इनके पिता से इन्हें मिला राजनीतिक सीख और पिता के आदर्श, सिद्धांतों और विचारों की अच्छी छाप देखने को मिलती है। इसलिए आज विजय सिंह चौधरी अपने निर्वाचन क्षेत्र के हर जाति और बिरादरी के लोगों में अपने पिता की तरह काफी पॉपुलर और सम्मानित राजनेता बन चुके हैं। एक बहुत बड़ा जनाधार इनकी एक बहुत बड़ी राजनीतिक ताकत बन चुकी है, जिसकी वजह से विजय सिंह चौधरी का खुद का पॉलिटिकल फ्यूचर तो चमक ही रहा है, इसके अलावा भारतीय जनता पार्टी के संगठन को भी जबरदस्त तरीके से नावा और जिले की अन्य विधानसभा क्षेत्र में जोरदार तरीके से गति मिली हुई है। भले ही वर्तमान में सरकार के मंत्री हो, लेकिन अपने निर्वाचन क्षेत्र का लगातार भ्रमण करते रहते हैं, लोगों से पहले की तरह लगातार मुलाकात करते रहते हैं। अपने जयपुर के सरकारी निवास और अपने निर्वाचन क्षेत्र के निवास के दरवाजे 24 घंटे क्षेत्र के लोगों के लिए खुला रखते हैं। इनका स्टाफ क्षेत्र के लोगों का बहुत अच्छी तरह से वेलकम करता है और क्षेत्र के लोगों की समस्याओं का निस्तारण करने में जुटा रहता है। अगर विजय सिंह चौधरी किसी कारणवश घर पर नहीं भी होते हैं, तब भी इनके निजी स्टाफ के लोग किसी भी व्यक्ति को दरवाजे से निराश होकर नहीं लौटने देते। यही खासियत विजय सिंह चौधरी को लोगों में काफी पॉपुलर बनाए हुए हैं।

बजट में नावां विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न विकास कार्यों के लिए समुचित अच्छी राशि स्वीकृत करवाने में कामयाब रहे विजय सिंह

प्रदेश में अगर पिछले 2 साल के शासनकाल में अपनी पार्टी की सरकार से अपने निर्वाचन क्षेत्र के विकास कार्यों के लिए हर बजट में ज्यादा से ज्यादा पैसा और ज्यादा से ज्यादा विकास योजनाएं मंजूर करवाने में विजय सिंह चौधरी काफी सफल रहे। इसी का परिणाम है कि पिछले सवा दो साल में इन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा, पुलिसिंग इत्यादि सभी क्षेत्रों में करोड़ों रुपए के विकास कार्य संपादित करवाए हैं। भजनलाल सरकार की ओर से अब तक राजस्थान विधानसभा में तीन बजट प्रस्तुत किए गए, इन सभी बजट में विजय सिंह ने अपने निर्वाचन क्षेत्र के विकास के लिए ज्यादा से ज्यादा समुचित पैसा मंजूर करवाने में सफलता हासिल की। इसके पीछे कुछ विशेष कारण है, जिसकी वजह से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी नावा विधानसभा क्षेत्र पर विशेष मेहरबानी की है। जिसमें एक वजह तो यह है कि विजय सिंह ने महेंद्र चौधरी जैसे नेता को भारी मतों के अंतर से पराजित किया। महेंद्र चौधरी पिछली गहलोत सरकार में पूरे 5 साल तक काफी प्रभावी भूमिका में थे, इसके अलावा इनके पिता भी विधायक रह चुके थे। नागौर जिला कांग्रेस में महेंद्र चौधरी का रुतबा और प्रभाव लगातार बढ़ रहा था, लेकिन पिछली विधानसभा चुनाव में विजय सिंह चौधरी ने जिस तरह से इन्हें भारी मतों के अंतर से हराया, उससे राजस्थान बीजेपी और दिल्ली में बैठे भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेता भी विजय सिंह चौधरी की पॉलीटिकल ताकत से काफी प्रभावित हुए। इसीलिए उन्हें मंत्री बनाया गया और फिर अब उनके निर्वाचन क्षेत्र में भी उनके कहे अनुसार भजनलाल सरकार उनकी हर डिमांड को पूरा कर रही है। इसी का परिणाम है कि नावा विधानसभा क्षेत्र में पिछले सवा दो साल में हर क्षेत्र में बड़ी संख्या में विकास कार्य हुए और इन विकास कार्यों की सतत प्रक्रिया लगातार जारी भी है।

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट और ग्रामीण विकास रथ कार्यक्रम को लेकर भी काफी गंभीर विजय सिंह चौधरी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एक तरफ देश में जगह-जगह जाकर ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट का आयोजन करके राजस्थान में कृषक और खेती के विकास और कल्याण का एक नया अध्याय लिखने जा रहे हैं, तो दूसरी तरफ मुख्यमंत्री शर्मा ने राजस्थान सरकार के सभी मंत्रियों, पार्टी के विधायकों, सांसदों और जनप्रतिनिधियों तथा पार्टी के संगठन से जुड़े लोगों को भी पूरे प्रदेश में सरकार की ओर से संचालित की जा रही ग्राम विकास रथ यात्रा को शानदार और सफलतापूर्वक तरीके से संपादित करने के लिए निर्देशित किया हुआ है। इसी क्रम में राज्य मंत्री होने के नाते विजय सिंह चौधरी भी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कहीं अनुसार ग्लोबल राजस्थान एग्रोटेक मीट आयोजन तथा राजस्थान के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में सरकार की ओर से निकाली जा रही ग्रामीण विकास रथ यात्रा के सफलतापूर्वक संपादन के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। इसके लिए ग्रामीण विकास रथ यात्रा संपूर्ण नावा विधानसभा क्षेत्र के संपूर्ण इलाके को कवर करें, इस बाबत विजय सिंह चौधरी पार्टी के संगठन से जुड़े नेताओं, जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन और रथ यात्रा कार्यक्रम आयोजन से जुड़े लोगों से लगातार संवाद करके ग्रामीण विकास रथ यात्रा का रूट निर्धारित किया है। ताकि विधानसभा क्षेत्र के सभी लोगों और किसानों को सरकार की ओर से संपादित की जा रही विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं के अलावा कृषि और खेती के क्षेत्र में सरकार की ओर से किया जा रहे नवाचार, आधुनिकरण इत्यादि के बारे में किसानों को अच्छी जानकारी मिल सके, ताकि किसान अपना उत्पादन और अपनी इनकम को बढ़ा सके। इस पूरे कार्यक्रम को लेकर विजय सिंह पिछले कुछ दिनों से हमेशा व्यस्त नजर आ रहे हैं। इसके अलावा ग्लोबल राजस्थान एग्रीकेट मीट के सफल आयोजन को लेकर भी इलाके के किसानों को जागरूक कर रहे हैं। चालू महीने में ही राजधानी जयपुर में आयोजित होने वाली इस महत्वपूर्ण एग्री टेक मीट के बहुत अच्छे परिणाम सामने आएंगे, जो प्रदेश की खेती और कृषक दोनों के विकास और उत्थान के लिए यह एग्रीटेक मीट काफी महत्वपूर्ण साबित होने वाली है। इसीलिए इस कार्यक्रम को लेकर भी विजय सिंह चौधरी अपने निर्वाचन क्षेत्र के किसानों को ज्यादा से ज्यादा इस कार्यक्रम में भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास में जुटे हुए हैं।

भाजपा के संगठन को मजबूती देने के साथ साथ सरकार के कामकाज और योजनाओं का प्रचार प्रसार करने में है अव्वल

नागौर जिले की राजनीति को कवर करने वाले मीडिया जगत से जुड़े लोगों का भी कहना है कि जिस दिन से विजय सिंह ने भाजपा में कदम रखा है, उस दिन से ही उन्होंने खुद को पूरी तरह से भाजपा के लिए समर्पित किया हुआ है। विजय सिंह की पारिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि काफी मजबूत रही है। इनके पिता के नाम के साथ इनका नाम जुड़ा है, इसलिए जाहिर तौर पर यह भी माना जा सकता है कि भले ही इनके पिता सालों तक कांग्रेस पार्टी के विधायक रहे हो, लेकिन इनके पिता के निधन के बाद जिस तरह से कांग्रेस पार्टी ने इनके परिवार से पूरी तरह से मुंह मोड़ लिया, तो कांग्रेस के रणनीतिकारों का यह व्यवहार इस क्षेत्र के उन कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भी अच्छा नहीं लगा जो सालों से रामेश्वर लाल चौधरी के साथ जुड़कर कांग्रेस को मजबूती दे रहे थे। ऐसे कांग्रेसी और क्षेत्र के लोगों का विजय सिंह को पूरा सपोर्ट मिला। इन्हीं लोगों की सलाह और सुझाव पर विजय सिंह ने भाजपा को ज्वाइन किया था। अब विजय सिंह भाजपा को ही अपनी मातृभूमि और कर्मभूमि मानकर समर्पित भाव से सेवा कर रहे हैं, और पार्टी के छोटे बड़े सभी कार्यकर्ताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पार्टी से जुड़ी हर छोटी बड़ी मीटिंग में हर हाल में अपनी उपस्थिति दिखाते हैं। भले ही सरकार में मंत्री हो और काफी व्यस्त रहते हो, लेकिन संगठन को सर्वोच्च प्राथमिकता दिए हुए हैं। इसीलिए जिले के पार्टी के संगठन से जुड़े छोटे-बड़े सभी नेताओं में इनका अच्छा सम्मान और प्रभाव है। साथ-साथ केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित की जा रही विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं और पिछले दो साल में भजनलाल सरकार की ओर से किए गए विकास कार्यों, बड़े-बड़े निर्णय तथा उपलब्धियां का अपने निर्वाचन क्षेत्र में लगातार खुद भी जन संवाद के माध्यम से प्रचार प्रसार करते रहते हैं। इसके अलावा प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया के माध्यम से सरकार की योजनाओं और उपलब्धियां का प्रभावी तरीके से प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

विजय सिंह जैसे सक्रिय भाजपा नेताओं की वजह से नागौर जिले में भाजपा लगातार हो रही मजबूत

इसमें कोई संदेह नहीं, राजस्थान स्टेट के गठन के बाद से ही राजस्थान की राजनीति में नागौर जिले का जबरदस्त प्रभाव रहा है। यह भी सत्य है कि नागौर जिले में कांग्रेस पार्टी का सालों तक जबरदस्त वर्चस्व और प्रभाव रहा, लेकिन अब हालात काफी बदल चुके हैं। नागौर जिला जो पहले सालों तक कांग्रेस पार्टी का बड़ा किला माना जाता था, अब मामला बिल्कुल उलट होता जा रहा है। एक तरफ जहां कांग्रेस पार्टी के जिले के कई बड़े नेता कांग्रेस पार्टी को छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए हैं, तो दूसरी तरफ विजय सिंह चौधरी जैसे गतिशील और ऊर्जावान नेताओं की पॉलिटिकल गतिविधियां जिले में भाजपा के संगठन को मजबूती प्रदान करने में जबरदस्त भूमिका निभा रही है। हालांकि, नागौर जिले में भाजपा को अभी और मेहनत करने की जरूरत है, क्योंकि जिले में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी भी खुद का प्रभाव जमाने की जबरदस्त कोशिश कर रही है। इसलिए इन कठिन और चुनौती पूर्ण राजनीतिक हालातो में विजय सिंह जैसे नेताओं का क्षेत्र के लोगों से मजबूत जमीनी जुड़ाव और लोगों से निरंतर संवाद करने के भाव से जिले में भाजपा का माइक्रो मैनेजमेंट देखते ही बनता है, जो कहीं ना कहीं जिले में भाजपा की जड़ों को लगातार मजबूत कर रहा है। विजय सिंह की बेटी सविता चौधरी कुचामन पंचायत समिति की वर्तमान में प्रधान हैं। इससे पहले वर्ष 2011 से 2013 तक विजय सिंह भी इस पंचायत समिति के प्रधान रह चुके हैं। इसके अलावा विजय सिंह के दिवंगत पिता रामेश्वर लाल चौधरी भी इसी पंचायत समिति से पूर्व में प्रधान भी रह चुके हैं। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में विजय सिंह चौधरी और इनके परिवार की मजबूत और अच्छी राजनीतिक पारिवारिक पृष्ठभूमि कहीं ना कहीं भाजपा के संगठन को मजबूती प्रदान करने में भी बड़ी भूमिका अदा कर रही है। इसलिए राजनीतिक विश्लेषक भी मानते हैं कि जिस तरह से पहले कई सालों तक नागौर जिले में कांग्रेस पार्टी का अच्छा प्रभाव रहा, वैसा ही प्रभाव अब आने वाले दिनों में भाजपा का भी देखने को मिल सकता है। अगर यहां कांग्रेस पार्टी के रणनीतिकारों ने अपनी रणनीति नहीं बदली और जिले में कांग्रेस जनों में बिखराव और मनमुटाव की स्थिति ऐसी ही बनी रही, तो यहां कांग्रेस पार्टी को बुरा दौर देखने को मिल सकता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अच्छे सारथी बने हैं अखिल अरोड़ा

अशोक गहलोत के बाद भजनलाल शर्मा के भी आखिर कैसे भरोसेमंद अधिकारी बन गए अखिल अरोड़ा, वर्ष 1993 से लेकर अब तक अपनी लंबी आईएएस की नौकरी में कई बड़ी बड़ी उपलब्धियां और रिकॉर्ड बनाने वाले अरोड़ा ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विकसित राजस्थान के विजन और संकल्प को पूरा करवाने की चुनौती को दृढ़तापूर्वक किया है स्वीकार। प्रदेश में सबसे ज्यादा बार राजस्थान सरकार का बजट तैयार करवाकर नया रिकार्ड बनाने वाले अखिल अरोड़ा का वित्त प्रबंधन में कोई मुकाबला नहीं, अपनी माता के अंतिम संस्कार के दिन भी दफ्तर में आकर बजट तैयार करवानेवाले इस अधिकारी की कर्तव्य परायणता देखते ही बनती है।

जयपुर। प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में शायद ऐसा पहले कभी नहीं देखा गया, जब कोई बड़ा अधिकारी अपनी माता का अंतिम संस्कार करने के तुरंत बाद अपने दफ्तर आया हो, फिर सरकारी कामकाज निपटाया हो, लेकिन सीनियर आईएएस अधिकारी अखिल अरोड़ा वर्ष 2022 में फरवरी माह में अपनी माता का अंतिम संस्कार करने के तुरंत बाद शासन सचिवालय पहुंचे और वहां अपने दफ्तर में सरकार के बजट तैयार करने की प्रक्रिया में बड़ी भूमिका निभाई। अरोड़ा की यह कर्तव्यपरायणता की अनूठी मिसाल आज भी शासन सचिवालय के गलियारों में अक्सर सुनने को मिल जाती है। अरोड़ा का अपनी लंबी सरकारी सर्विस में अपने कर्तव्य और दायित्वों के प्रति इतने समर्पित भाव से जुड़े रहना, उन्हें एक ऐसे अलग अधिकारी की श्रेणी में स्थापित किया हुआ है, जिन्हें हर पार्टी की सरकार ने पूरा सम्मान, इज्जत और जनता से जुड़े सभी महत्वपूर्ण विभागों की जिम्मेदारी दी, ताकि प्रदेश की जनता का भी भला हो और सरकार का विजन तथा संकल्प भी पूरा हो। अरोड़ा का फाइनेंशियल मैनेजमेंट का तरीका और आइडिया काफी बेजोड़ है, उन्हें वित्त प्रबंधन का मास्टरमाइंड माना जाता है, इसीलिए प्रदेश में उनकी देखरेख में सबसे ज्यादा बार राजस्थान सरकार का बजट तैयार किया गया और विधानसभा में प्रस्तुत भी हुआ। अरोड़ा की देखरेख में छह बार राजस्थान विधानसभा का बजट तैयार हुआ, जिसमें चार बार कांग्रेस पार्टी की सरकार के समय और दो बार वर्तमान भजनलाल सरकार के समय अरोड़ा की ओर से तैयार किए गए बजट राजस्थान विधानसभा में प्रस्तुत किए गए, जो प्रदेश के इतिहास में एक नई रिकॉर्ड के समान है। वजह यही है कि अरोड़ा लंबी सरकारी सर्विस में जनता से जुड़े सभी महत्वपूर्ण विभागों में बड़े पदों पर तैनात रहे और अलग-अलग विभागों में कार्य करने के दौरान जनता और जनप्रतिनिधियों की आकांक्षाओं, विभागीय व्यवस्थाओं, भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों और सरकार की तिजोरी के हालातो इत्यादि के बारे में भरपूर नॉलेज रखते हैं, जो उन्हें बजट तैयार करवाने में काफी सहायक साबित होती है। इसीलिए पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के भी अरोड़ा काफी भरोसेमंद और विश्वासपात्र अधिकारी बने रहे, अब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के भी काफी भरोसेमंद अधिकारी बने हुए हैं। इसीलिए मुख्यमंत्री शर्मा ने उन्हें अपना अतिरिक्त मुख्य सचिव बनाया हुआ है। इस पद पर काम करते हुए अरोड़ा को अभी ज्यादा महीने नहीं हुए हैं, लेकिन इस कम अवधि में भी अरोड़ा ने अपने लंबे प्रशासनिक अनुभव, कार्यकुशलता, नए आइडिया, नवीन प्रयोग, बुद्धिमता से राजस्थान सरकार की योजनाओं को तैयार करवाने में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के एक अच्छे सारथी बने हुए हैं और सरकार के बजट तैयार करवाने में भी बड़ी भूमिका निभाई है और मुख्यमंत्री शर्मा के भरोसे और उम्मीद पर खरे उतर रहे हैं।

राजस्थान सरकार का बजट तैयार करवाने में पूर्व आईएएस आदर्श किशोर का तोड़ा रिकॉर्ड

जानकारी के अनुसार, वर्ष 2011 में जब प्रदेश में अशोक गहलोत के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की सरकार थी, उस समय फाइनेंशियल सेक्रेटरी के रूप में अखिल अरोड़ा के नेतृत्व में ही राजस्थान सरकार का बजट तैयार किया गया था। इसके बाद, वर्ष 2020 से 2023 के बीच अशोक गहलोत के नेतृत्व में ही राजस्थान विधानसभा में जो तीन बजट प्रस्तुत किए गए, यह सभी बजट अखिल अरोड़ा की देखरेख में ही तैयार किए गए थे। इसके बाद, वर्तमान भजनलाल सरकार में भी अखिल अरोड़ा की देखरेख में 2 बजट तैयार किए गए। इस तरह से, अखिल अरोड़ा की देखरेख में राजस्थान सरकार की ओर से 6 बजट तैयार किए गए, जबकि इससे पहले पूर्व आईएएस आदर्श किशोर की देखरेख में राजस्थान सरकार के चार बजट तैयार किए गए थे और पूर्व आईएएस राजीव महर्षि की देखरेख में राजस्थान सरकार के तीन बजट तैयार हुए थे। इस तरह से, प्रदेश के इतिहास में अखिल अरोड़ा राजस्थान सरकार के सबसे ज्यादा बजट तैयार करने के मामले में एक नया रिकॉर्ड कायम किया है, जो उनकी फाइनेंशियल मैनेजमेंट की मजबूत क्षमता को दर्शाता है। अरोड़ा बेहद ही गंभीर, सहज और संजीदा अधिकारी माने जाते हैं, लेकिन वित्त प्रबंधन के मामले में उनका कोई मुकाबला नहीं। कैसे और किस तरह से प्रदेश की इकोनॉमी को गति देनी है, कैसे और किस तरह से और किन तरीकों से पैसों की व्यवस्था करनी है, पैसों का कैसे और किस तरह से समुचित रूप से जनता के हितों के लिए खर्च करना है, कैसे और किस तरह से पैसों की बचत करनी है, इन सब मामलों में अखिल अरोड़ा का कोई जवाब नहीं। इसीलिए प्रदेश में चाहे भाजपा की सरकार रही हो या फिर कांग्रेस पार्टी की, हर सरकारों ने उन्हें वित्त विभाग के प्रमुख शासन सचिव पद पर लंबे समय तक पोस्टिंग दी। करीब 6 साल 8 महीने से ज्यादा समय तक अखिल अरोड़ा राजस्थान में वित्त विभाग के प्रमुख शासन सचिव पद पर नियुक्त रहे। अरोड़ा ने अपनी बुद्धिमत्ता, चतुराई और नवाचारों से एक तरफ जहां प्रदेश में एक से बढ़कर एक जन कल्याणकारी योजनाओं की संरचना तैयार करने में अपनी जबरदस्त भूमिका निभाई, तो दूसरी तरफ प्रदेश सरकार की तिजोरी में लक्ष्मी माता का निरंतर अच्छा वास हो, इस दिशा में भी उन्होंने अपने नवाचारों और नवीन प्रयोगों से प्रदेश की आर्थिक व्यवस्था को मजबूती देने का प्रयास किया। उनकी इसी निपुणता को देखकर मुख्यमंत्री शर्मा ने उन्हें सीएमओ का सबसे बड़ा ताकतवर अधिकारी बनाया, ताकि सरकार से जुड़े हर छोटे-बड़े निर्णय में अरोड़ा की सलाह ली जा सके।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अच्छे सारथी बने हुए हैं अखिल अरोड़ा

जिस उम्मीद और भरोसे के साथ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अखिल अरोड़ा को करीब 5 महीने पहले अपना अतिरिक्त मुख्य सचिव बनाया था, उस भरोसे और उम्मीद पर अरोड़ा बिल्कुल खरे उतर रहे हैं। वैसे तो पिछले सवा दो साल में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने हर क्षेत्र में बहुत ही शानदार उल्लेखनीय कार्य किए हैं और कई बड़े-बड़े डिसीजन लिए हैं, जिनका असर प्रदेश में देखने को भी मिल रहा है। पानी, बिजली, सड़क, सौर ऊर्जा, युवा विकास, उद्योग, शिक्षा, कृषि, पुलिसिंग, महिला कल्याण और सुरक्षा इत्यादि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। लेकिन करीब 5 महीने पहले जब अरोड़ा को मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव पद पर नियुक्ति दी गई, उसके बाद प्रदेश सरकार की ओर से प्रदेश के विकास को तेज गति से आगे बढ़ाने और प्रदेश की जनता की समस्याओं का ज्यादा से ज्यादा निस्तारण करने के लिए और भी कई नई-नई योजनाएं लागू की गई हैं। कई बड़े-बड़े निर्णय पानी, बिजली, उद्योग, युवा, कृषि, वन, खनन, पर्यावरण इत्यादि क्षेत्रों में सरकार की ओर से लिए गए हैं, इन सब योजनाओं और बड़े फैसलों में अखिल अरोड़ा की बड़ी भूमिका मानी जा रही है। अरोड़ा ने कई महत्वपूर्ण विषय, अंतर राज्य विवादों और योजनाओं के संदर्भ में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को अच्छे सलाह और सुझाव दिए हैं, जिन पर मुख्यमंत्री शर्मा ने काफी गंभीरता से विचार करके उन्हें आत्मसात ही किया है। इसलिए इस तरह से महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन की जीत को सुनिश्चित करने के लिए एक अच्छे सारथी की भूमिका निभाई थी, ठीक उसी तरह से अखिल अरोड़ा पिछले पांच महीनो से मुख्यमंत्री शर्मा के एक अच्छे सारथी बने हुए हैं और सरकार से जुड़े हर छोटे-बड़े विषय और मामलों में मुख्यमंत्री शर्मा अरोड़ा से सुझाव और सलाह भी लेते हैं। इसके अलावा, प्रदेश के सभी सरकारी विभागों में हो रहे कामकाज का फीडबैक भी अरोड़ा लगातार संबंधित अधिकारियों से लेकर मुख्यमंत्री तक नियमित रूप से भिजवा रहे हैं, ताकि प्रदेश भर में जो कुछ चल रहा है उसके बारे में सरकार के मुखिया को लगातार जानकारी मिलती रहे। जानकार लोगों का कहना है कि चाहे ग्रामीण विकास रथ कार्यक्रम की बात हो या फिर रात्रि चौपाल, या फिर ग्लोबल एग्रीटेक राजस्थान मीट कार्यक्रम, या फिर शहर और गांव में सरकार की ओर से लगाए जाने वाले शिविर, या फिर पानी को लेकर हरियाणा, मध्य प्रदेश और पंजाब राज्यों से चल रही बातचीत का विषय हो, इन सब मामलों में अखिल अरोड़ा की सलाह और सुझाव को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा हमेशा प्रमुखता देते हैं, जो निश्चित रूप से प्रदेश जनता की भलाई और विकास के लिए काफी फायदेमंद माना जा रहा है।

लो- प्रोफाइल के धनी अखिल अरोड़ा का विभागीय मीटिंग लेने का अंदाज देखने लायक

प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में अखिल अरोड़ा लो -प्रोफाइल के अधिकारी माने जाते हैं, जो दिखावे की जगह चुपचाप काम करने में ज्यादा विश्वास रखते हैं। विभागीय फाइलों के निस्तारण की प्रक्रिया को सतत रूप से जारी रखने के मामले में अखिल अरोड़ा का कोई जवाब नहीं। कोई भी फाइल हो, जब तक वह पूरी तरह से निस्तारित नहीं हो जाती, तब तक उसका पीछा करते रहते हैं। विभाग की मीटिंग लेने का भी इनका एक अलग अंदाज देखने को मिलता है। प्रदेश की भजनलाल सरकार ने अरोड़ा को जब जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की जिम्मेदारी दी थी, उस समय जल भवन में आयोजित विभागीय बैठक में अरोड़ा की वर्किंग स्टाइल और तेज तर्रार रवैया को देखकर अधिकारी भी काफी हैरान रह गए थे, क्योंकि पिछली सरकार में जल जीवन मिशन घोटाले की खबर पूरे देश में सुर्खियों में रही थी। इसलिए इस विभाग को नई गति और दिशा देने के लिए इस बैठक में अरोड़ा ने अधिकारियों को अपना विजन और संकल्प भी बताया। इसके अलावा, सरकार का विजन भी बैठक में अधिकारियों के समक्ष रखा और साफ कह दिया, जल जीवन मिशन और अमृत योजना में अब किसी भी तरह की लापरवाही, कमी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। योजना से जुड़े सभी छोटे-बड़े प्रोजेक्ट समय पर और पारदर्शक तरीके से कंप्लीट हो और इन योजनाओं से जुड़े एक-एक पैसे का सदुपयोग हो, तथा प्रोजेक्ट के निर्माण में किसी भी विषय को लेकर किसी भी तरह का कोई भी समझौता नहीं हो। इस बैठक में अरोड़ा पूरी तैयारी के साथ आए थे, प्रदेश के सभी जिलों में जल जीवन मिशन और अमृत योजना से जुड़े सभी कार्यों की लिस्ट लेकर आए थे और कई जगहों पर ठीक तरह से कार्य नहीं होने पर संबंधित अधिकारियों को फटकार भी लगाई थी और चेताया भी था। कुछ अधिकारियों ने जब अपनी ओर से सफाई देने की कोशिश की, तो अरोड़ा ने साफ कह दिया था, मुझे कागज पर नहीं बल्कि डिजिटल जवाब चाहिए। बैठक में मौजूद अधिकारी आज भी अरोड़ा की इस बैठक के अंदाज को नहीं भूले हैं।

अखिल अरोड़ा 2022 में कर्तव्य परायणता की अनूठी मिसाल बन गए

वर्ष 1994 बैच के आईएएस अधिकारी अखिल अरोड़ा शुरू से ही अपनी ड्यूटी और अपने फर्ज को लेकर काफी संवेदनशील और गंभीर रहे हैं। जितने गंभीर, सहज, सरल, अनुशासित और नेक दिल इंसान हैं, उतने ही अपनी ड्यूटी और कर्तव्य को लेकर निष्ठावान रहे, इसका जीवंत उदाहरण उस दिन देखने को मिला जब 20 फरवरी 2022 को इनकी माता का निधन हो गया था। उन दिनों राजस्थान सरकार की ओर से बजट तैयार करने की प्रक्रिया जबरदस्त तरीके से संपादित हो रही थी, अरोड़ा उस समय प्रदेश में वित्त विभाग के प्रमुख शासन सचिव पद पर नियुक्त थे और अरोड़ा की देखरेख में ही बजट तैयार हो रहा था। लेकिन जैसे ही माता के निधन की सूचना अरोड़ा को मिली, वे तुरंत अपनी मां के अंतिम संस्कार में शामिल हुए, मां की अर्थी को कंधा भी दिया और फिर वापस अपने दफ्तर में आकर बजट तैयार करवाने में जुट गए। एक तरफ मां के निधन का गम तो दूसरी तरफ सरकारी फर्ज, इस कठिन और विपरीत परिस्थितियों में अरोड़ा ने एक तरफ जहां अपने परिवार को संभाला, तो दूसरी तरफ सरकार के बजट को भी तैयार करवाते रहे। यहां तक अपनी मां की तीए की बैठक की बैठक भी संपन्न नहीं हुई थी, इसके बावजूद भी जब 22 फरवरी को तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ बजट को अंतिम रूप देते हुए नजर आए। अरोड़ा के फर्ज के प्रति इतनी दीवानगी और निष्ठा को देखकर तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी उनकी काफी प्रशंसा की थी और शासन सचिवालय के गलियारों और राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों में भी अरोड़ा अपने इस व्यवहार और कार्य शैली को लेकर प्रशंसा और चर्चा के पात्र बने।

कोरोना के प्रबंधन में भी अखिल अरोड़ा निभा चुके हैं महत्वपूर्ण भूमिका

प्रदेश, देश और दुनिया में जब कोरोना महामारी का प्रकोप था, उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अखिल अरोड़ा के हाथों में ही चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग की कमान दी थी। इस कठिन और विपरीत परिस्थिति में अरोड़ा ने बहुत ही बुद्धि कौशल, गंभीरता और चिंतन के साथ विभाग को संभाले रखा। इस महामारी से मुकाबला करने के लिए प्रदेश में जितने भी और जो भी संसाधन, यंत्र, उपकरण और मानव श्रम उपलब्ध थे, उनका बहुत ही प्रभावपूर्ण तरीके से प्रदेश में विभिन्न जिलों में जरूरत के हिसाब से उपयोग और वितरण सुनिश्चित करने की दिशा में रोजाना सतत रूप से कार्य करते रहे, जिसकी वजह से देश में अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान में कोरोना का मैनेजमेंट काफी प्रभावपूर्ण और अच्छा रहा था, जिसकी तारीफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी की थी। इसके अलावा, कोरोना महामारी के फैलने को रोकने की दिशा में भी अरोड़ा ने चिकित्सा विभाग के साथ-साथ पुलिस, जिला प्रशासन, राजनीतिक दलों, स्वयंसेवी संस्थाओं, दानदाताओं, भामाशाह, सरकारी कर्मचारी संगठनों, मजदूर संगठनों, सामाजिक संगठन इत्यादि सभी के साथ नियमित रूप से वर्चुअल तरीके से बातचीत करके कोरोना की गाइडलाइन को ठीक तरह से लोगों के बीच प्रचारित करने और जरूरतमंद लोगों की सेवा करने की पुरजोर अपील और कोशिश करते रहे। केंद्र सरकार से जुड़े लोगों तथा केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय से जुड़े अधिकारियों के साथ भी रोजाना संवाद करके प्रदेश के हालातो के बारे में जानकारी देते रहे और आवश्यक मदद लेने के लिए प्रभावपूर्ण तरीके से राजस्थान का पक्ष रखते रहे, जिसकी वजह से केंद्र से भी लगातार जरूरत के मुताबिक सहायता मिलती रही। इन सब की वजह से प्रदेश में कोरोना का मैनेजमेंट बहुत ही शानदार रहा, जिसकी वजह से यहां अन्य राज्यों की तुलना में लोगों की बहुत ही कम मौत हुई। कह सकते हैं कि अखिल अरोड़ा ने कठिन और विपरीत परिस्थिति में भी स्वास्थ्य डिपार्टमेंट को बहुत ही अच्छे तरीके से संभाले रखा।

24 साल के ही आईएएस अफसर बन गए, जयपुर, बीकानेर, डूंगरपुर जिलों के कलेक्टर के अलावा सभी प्रमुख विभागों में पोस्टेड रहे

अखिल अरोड़ा मुख्य रूप से राजस्थान के रहने वाले हैं और बीई इलेक्ट्रिकल डिग्रीधारी है। पढ़ने में बचपन से ही मेधावी छात्र रहे, इसी का परिणाम रहा कि 24 साल की आयु में ही भारत की सबसे प्रमुख और बड़ी भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा को पास करके आईएएस अधिकारी बन गए। वर्ष 1993 बेच के आईएएस अधिकारी अखिल अरोड़ा की अब तक की यह हाई प्रोफाइल नौकरी इनकी उपलब्धियां और उत्कृष्ट प्रदर्शन की कहानी बयां कर रही है। इन्हें जो भी जिम्मेदारी और जो भी विभाग काम करने के लिए दिया गया, उस कार्य को 100 प्रतिशत बखूबी से संपादित किया और अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से सरकारों को भी प्रभावित किया और जनता को भी भरपूर फायदा पहुंचाया। अरोड़ा का वर्किंग स्टाइल और व्यवहार बेमिसाल और शानदार है, इसी वजह से जिस भी विभाग में जिम्मेदारी मिली, वहां अपने कार्यों से एक नया अध्याय लिख डाला। उनकी इसी अदा पर सरकार भी खूब फिदा रही, प्रदेश में चाहे भाजपा की सरकार रही हो या फिर कांग्रेस पार्टी की, हर सरकार में इन्हें जनता से जुड़े महत्वपूर्ण विभाग में काम करने की जिम्मेदारी दी गई। अखिल अरोड़ा जयपुर के जिला कलेक्टर भी रहे, इसके अलावा बीकानेर और डूंगरपुर जिलों के भी कलेक्टर रहे। अपनी इस लंबी सरकारी सर्विस में अरोड़ा वित्त विभाग में भी लंबे समय तक पोस्टेड रहे, इसके अलावा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग, जयपुर मेट्रो, माइंस एंड मिनिरल, एक्साइज डिपार्टमेंट इत्यादि कई विभागों में अपने उत्कृष्ट कार्यो से विभागों को गतिशील और क्रियाशील बनाए रखा। जयपुर और अन्य जिलों में कलेक्टर पद पर रहने के दौरान सरकार की योजनाओं का बेहतर तरीके से क्रियान्वयन और ग्रामीण विकास को लेकर हमेशा अलर्ट मोड पर नजर आए और लोगों के लिए अपने दफ्तर के दरवाजे हमेशा खुले रखे। लोगों से नियमित संवाद और ज्यादा से ज्यादा जनसुनवाई कार्यक्रमों का शहरी और ग्रामीण इलाकों में आयोजन करके गरीब मजदूर किसान और महिलाओं को राहत देने के लिए हमेशा सतत प्रयास करते नजर आए। उनका यह प्रयास आज भी जब वे मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव पद पर नियुक्त हैं, जारी हैं।

भजनलाल सरकार की योजनाओं का दमदार और प्रभावपूर्ण तरीके से प्रचार प्रसार करने में अखिल अरोड़ा की महत्वपूर्ण भूमिका

अखिल अरोड़ा पूर्व में प्रदेश के सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय के कामकाज को भी देख चुके हैं, इसलिए इस विभाग की उपयोगिता और इंपॉर्टेंसी को अखिल अरोड़ा अच्छी तरह से जानते हैं। इसके लिए सूचना और जनसंपर्क निदेशालय, सरकार के मंत्रियों और मुख्यमंत्री के बीच रोजाना नियमित रूप से अच्छा समन्वय, सामंजस्य और तालमेल बना रहे और सूचनाओं का नियमित रूप से रोजाना आदान-प्रदान होता रहे, तथा सरकार की योजनाओं और उपलब्धियां के बारे में प्रदेश की जनता को प्रिंट, इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया इत्यादि के माध्यम से नियमित रूप से जानकारी मिलती रहे। शहरों के अलावा ग्रामीण क्षेत्र में भी सरकार की योजनाओं, कार्यक्रमों और आगामी योजनाओं के बारे में किसान, युवा, मजदूर, महिलाओं को जानकारी मिलती रहे, इन सब विषयों पर अखिल अरोड़ा प्रभावी रूप से कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा सरकार और मीडिया जगत से जुड़े लोगों के बीच भी आपस में अच्छा कनेक्शन और व्यवहार बना रहे, इन सब विषयों पर अखिल अरोड़ा मुख्यमंत्री कार्यालय में बैठकर नियमित रूप से संबंधित अधिकारियों से फीडबैक लेते रहते हैं और इस पूरी प्रक्रिया पर नियमित रूप से कड़ी निगरानी करते हैं, ताकि सरकार की योजनाओं का प्रचार प्रसार प्रभावी रूप से प्रदेश में हर घर तक पहुंचे। इसमें कोई संदेह नहीं, पिछले पांच महीनो में प्रदेश की भजनलाल सरकार और केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार पहले की तुलना में और भी प्रभावपूर्ण तरीके से संपादित हो रहा है। पूरे प्रदेश में शहर से लेकर छोटे कस्बे और गांव तक लोगों के पास सरकार की योजनाओं की जानकारी पहुंच रही है, इसकी वजह से जिन लोगों को सरकार की योजनाओं की जानकारी नहीं थी, उन्हें भी जानकारी मिली है। ग्राम विकास रथ और ग्रामीण चौपाल जैसे कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने में अरोड़ा की अच्छी भूमिका मानी जा रही है। इस तरह से अरोड़ा जनकल्याणकारी योजनाओं, महत्वपूर्ण बिल और कानून के ड्राफ्ट तैयार करवाने जैसे मामलों में भी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का काफी सहयोग कर रहे हैं, जो अरोड़ा को एक श्रेष्ठ और कुशल अधिकारी के रूप में सुशोभित कर रहा है।

अपने नाम के भावार्थ को साकार कर रहे "सिद्धार्थ महाजन": नवाचारों से जेडीए का किया आधुनिकरण

पिछले चार महीना में जेडीए में हुए नवाचारों और नवीन प्रयोगों से जेडीए की कार्यशैली में आया क्रांतिकारी बदलाव, ई-जनसुनवाई और फाइलों पर डिजिटल मॉनिटरिंग से आमजन को मिल रही है राहत, भ्रष्टाचार में जीरो टॉलरेंस की नीति पर भी जेडीए में प्रभावी रूप से हो रहा कार्य, जेडीए के प्रोजेक्ट में गुणवत्ता और समय प्रतिबद्धता की दिख रही साफ झलक।

जयपुर। वर्ष 2003 बैच के आईएएस अफसर सिद्धार्थ महाजन ने केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार में सेवाएं देते हुए अपने नाम के भावार्थ को साबित करके दिखाया है। अपनी करीब पिछले 23 साल की सर्विस में महाजन जहां भी और जिस भी विभाग में पोस्टेड रहे, वहां उन्होंने अपने सिद्धार्थ नाम के भावार्थ को साकार किया। प्रखंड विद्वानों के अनुसार, सिद्धार्थ का अर्थ बुद्धिमता, सफलता और आध्यात्मिकता का प्रतीक है। भगवान महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम भी सिद्धार्थ था। महात्मा बुद्ध का मतलब है इच्छाओं और लक्ष्य को प्राप्त किया जाना, या फिर यूं कहें, सिद्धार्थ का मतलब एक जो लक्ष्य है, सफल पूरा किया है। वैसे भी सिद्धार्थ नाम के व्यक्ति विचारशील, आत्मविश्वासी और लक्ष्य के प्रति अटल रहते हैं। शायद इसीलिए वर्ष 2003 बेच के इस होनहार, कर्मठ, इमानदार आईएएस अफसर के माता-पिता ने किसी बड़े पंडित और ज्योतिष से सलाह लेकर ही नाम रखा, जो पिछले करीब 23 साल से राजस्थान और दिल्ली में विभिन्न विभागों और विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए अपने 'सिद्धार्थ' नाम के भावार्थ को साकार कर रहे हैं। बात करें वर्तमान में जयपुर विकास प्राधिकरण के कामकाज और कार्य शैली की, तो यहां पिछले करीब चार माह में जयपुर विकास प्राधिकरण की कार्य शैली में आधुनिकता का जो जबरदस्त समावेश हुआ है, उसकी वजह से जेडीए की प्रशासकीय व्यवस्था में एक नए क्रांतिकारी युग की शुरुआत हुई है, जिसकी वजह से आमजन को तो राहत मिल ही रही है। इसके अलावा जेडीए की कार्यशैली और जेडीए में पोस्टेड अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्य शैली पर जो लोग सवाल खड़े किया करते थे, अब उन्हें भी जेडीए के प्रति भरोसा होने लगा है। यह अद्भुत करिश्मा सिद्धार्थ महाजन की ही देन है, जिन्हें अभी जेडीए में कमिश्नर पद पर विराजमान हुए मुश्किल से करीब चार माह से ज्यादा का समय ही हुआ है, लेकिन इतने कम समय में इन्होंने अपने बुद्धि कौशल, नवाचारों और नए प्रयोगों से जेडीए के कामकाज को जो नई दिशा और गति प्रदान की है, ऐसा चमत्कारिक प्रदर्शन इतने कम समय में पहले जेडीए में कभी देखने को नहीं मिला। इसीलिए लोगों में भी चर्चा है कि सिद्धार्थ महाजन अपने नाम के अनुरूप ही काम कर रहे हैं।

जेडीए में फाइलों पर ऑनलाइन नजर, डिजिटल मॉनिटरिंग से जयपुर विकास प्राधिकरण का मॉडल लुक

सिद्धार्थ महाजन ने जयपुर विकास प्राधिकरण में फाइलों की प्रक्रिया को पारदर्शक, गतिशील और मजबूत बनाने के लिए अब फाइलों पर डिजिटल मॉनिटरिंग के माध्यम से तीसरी आंख के समान नजर रखेगी। जयपुर विकास प्राधिकरण में विभिन्न सेवाओं के तहत ऑनलाइन तरीके से दर्ज होने वाले आवेदन को लेकर जेडीए में जो फाइल प्रक्रिया में चलेगी, उस फाइल पर शुरू से लेकर उसके संपादित होने तक ऑनलाइन तरीके से काम करने की प्रक्रिया पर डिजिटल मॉनिटरिंग के माध्यम से तीसरी आंख की नजर रहेगी। कौन सी फाइल किस शाखा में और किसी अधिकारी के पास टेबल पर रखी हुई है, किस अधिकारी के पास कितने दिनों तक फाइल रही, अगर किसी अधिकारी ने फाइल पर नोटिंग की है, तो उसकी जानकारी भी आवेदक को ऑनलाइन जेडीए सर्विस डैशबोर्ड पर नजर आएगी। इस तरह से कोई भी व्यक्ति घर बैठे अपने आवेदन के बारे में जेडीए प्रशासन की ओर से की जा रही कार्रवाई को ऑनलाइन तरीके से देख सकेगा, अन्यथा उसे अपने काम के लिए बार-बार जयपुर विकास प्राधिकरण के चक्कर काटने पड़ते थे। इसके अलावा कई बार ऐसा भी होता था कि बिना किसी कारण के आवेदक की फाइल को एक कोने में पटक दिया जाता था, लेकिन इस नई व्यवस्था से अब फाइल के प्रक्रिया की हर गतिविधि पर डिजिटल पहरा रहेगा। जिसकी वजह से ना तो भ्रष्टाचार की गुंजाइश रहेगी और ना ही आवेदक के काम में देरी होने के चांस रहेंगे, क्योंकि आवेदक को लगातार उसकी फाइल की गतिविधि के बारे में ऑनलाइन तरीके से जानकारी मिलती रहेगी। इस दौरान जेडीए में फाइल प्रक्रिया के दौरान अगर कोई गड़बड़ी करना भी चाहे, तो वह जेडीए प्रशासन से जुड़े बड़े अधिकारियों की नजर में अपने आप ही आ जाएगा। महाजन की इस पहल को भी जयपुर के लोग काफी शानदार और अच्छा बता रहे हैं, क्योंकि फाइलों पर ऑनलाइन नजर रहने से फाइलों के निस्तारण का कार्य काफी तेजी से और ईमानदारी से संपादित होगा।

जयपुर से जुड़े गांव के जनप्रतिनिधियों से सिद्धार्थ महाजन का नियमित रूप से हो रहा संवाद, अब ग्रामीण जनप्रतिनिधियों को प्रशिक्षित भी करेगा जेडीए

जयपुर विकास प्राधिकरण का विस्तार जयपुर शहर से निकलकर जयपुर से जुड़े दूर दराज के गांव तक हो गया है। सैकड़ो की संख्या में गांव प्राधिकरण के तहत आ गए हैं, इसलिए जयपुर विकास प्राधिकरण में जयपुर शहर के अलावा जयपुर के आसपास के गांव के लोग अपनी समस्याएं लेकर बड़ी संख्या में जेडीए कार्यालय में आ रहे हैं। इसमें कई बार लोग अपनी समस्याओं को लेकर अपने क्षेत्र के जनप्रतिनिधि के साथ भी कार्यालय पहुंच जाते हैं, जिसमें कई बार ऐसा भी होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के जनप्रतिनिधि और ग्रामीणों को जयपुर विकास प्राधिकरण के कामकाज, नियम, सिद्धांत, काम की प्रक्रिया इत्यादि के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती, और वे गुस्से में प्राधिकरण के दफ्तर में आकर उस कार्य का भी दबाव बनाने लग जाते हैं जो तब प्राधिकरण के कार्य क्षेत्र में आता ही नहीं है। इसलिए सिद्धार्थ महाजन प्राधिकरण से जुड़े विभिन्न गांव के जनप्रतिनिधियों और विशिष्ट जनों से लगातार संवाद करते रहते हैं, और उन्हें जेडीए की कार्य पद्धति, जेडीए की व्यवस्थाएं, जेडीए का अधिकार क्षेत्र इत्यादि के बारे में बारीकी से जानकारी अवगत करवाते हैं। इसके लिए बाकायदा अब ग्रामीण क्षेत्र में जनप्रतिनिधियों को इस मामले में प्रशिक्षित करने के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से अपनी ओर से भी विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करने की बात महाजन ने कही है।

सिद्धार्थ महाजन की ई-जनसुनवाई कार्यक्रम ने जयपुर के लोगों में जेडीए के प्रति भरोसे को किया मजबूत

इसमें कोई संदेह नहीं, जब से जयपुर विकास प्राधिकरण का गठन हुआ है, तब से ही प्राधिकरण की कार्यशैली को लेकर जयपुर के लोग ज्यादा संतुष्ट नजर नहीं आए। लोगों में अक्सर यही चर्चा सुनने को मिलती रही कि जेडीए में काम के लिए कई कई चक्कर दफ्तर के काटने के बाद भी काम नहीं होते, फाइलें कई महीनो तक प्राधिकरण की विभिन्न शाखाओं में अटकी पड़ी रहती हैं, दफ्तर के बार-बार चक्कर काट कर लोग आखिर में दफ्तर में आना ही बंद कर देते हैं। इस तरह की शिकायत लोगों की ओर से लगातार भेजी जाती रही हैं। इस दौरान कई बार जयपुर विकास प्राधिकरण की कार्यशैली को मजबूत और पारदर्शी बनाने के लिए कई कदम भी उठाए गए, लेकिन कोई ठोस नतीजा नहीं निकला। इसलिए करीब 4 साल पहले सिद्धार्थ महाजन ने जब जेडीसी का कार्यभार संभाला, तो उन्हें यह अच्छी तरह से पता था कि जब तक जयपुर के लोगों का जेडीए के प्रति भरोसा और विश्वास मजबूत नहीं करेंगे, तब तक जेडीए अपने लक्ष्य को ठीक तरह से प्राप्त नहीं कर पाएगा। इसीलिए महाजन ने सबसे पहले जेडीए की कार्य शैली और जेडीए में नियुक्त अधिकारियों और कर्मचारी के व्यवहार को ज्यादा सहज, सरल और मधुर बनाने के विषय पर ज्यादा फोकस रखा। इसके लिए महाजन एक तरफ जहां लगातार ज्यादा से ज्यादा संवाद कार्यक्रम आयोजित करके लोगों से जेडीए की कार्य शैली को सुधारने और जयपुर के सुनियोजित और सुव्यवस्थित विकास के लिए सुझाव और सलाह ले रहे हैं, तो दूसरी तरफ उन्होंने जयपुर विकास प्राधिकरण में ही ई-जनसुनवाई कार्यक्रम का शुभारंभ करवाया। इस नई व्यवस्था के तहत, जेडीए को लेकर अगर किसी व्यक्ति को किसी भी तरह की कोई शिकायत है, तो वह ऑनलाइन तरीके से अपनी शिकायत जेडीए के पोर्टल और वेबसाइट पर घर बैठे दर्ज करवा सकता है। इसके बाद जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से पोर्टल और वेबसाइट पर आई शिकायत को संबंधित जोनल ऑफिस या और शाखा में ऑनलाइन तरीके से ही भेजा जाता है। इस प्रक्रिया में पूरा कार्य विभाग में ऑनलाइन तरीके से संपादित होता है। किसी व्यक्ति की शिकायत पर जेडीए की ओर से की गई कार्रवाई के बारे में ऑनलाइन तरीके से ही पीड़ित व्यक्ति को अवगत करवाया जाता है। अगर किसी शिकायत पर जेडीए काम नहीं कर पता है, तो जेडीए ने पीड़ित व्यक्ति की शिकायत पर हाथ खड़े क्यों किया, इसका कारण भी बाकायदा पीड़ित व्यक्ति को बताया जाता है। कई बार पीड़ित व्यक्ति और जेडीए प्रशासन से जुड़े अधिकारियों के बीच ऑनलाइन कॉन्फ्रेंसिंग ही करवाई जाती है। इस पूरे कार्यक्रम की वकायदा रिकॉर्डिंग करवाई जाती है। इस तरह से प्रभावपूर्ण तरीके से ही ई-जनसुनवाई कार्यक्रम को संपादित किया जा रहा है, जिससे लोगों का भरोसा और विश्वास जयपुर विकास प्राधिकरण के प्रति पहले की तुलना में ज्यादा मजबूत हुआ है। ऑनलाइन तरीके से शिकायतों का समाधान होने से एक तरफ जहां लोगों को जेडीए के बार-बार चक्कर काटने नहीं पढ़ते, तो दूसरी तरफ जेडीए की कार्यशैली में पारदर्शिता और ईमानदारी का प्रभाव जबरदस्त तरीके से देखने को मिल रहा है। क्योंकि जब ऑनलाइन तरीके से शिकायत पर जेडीए की ओर से काम किया जाता है, तो उसमें किसी भी तरह की कोई गड़बड़ी और लापरवाही तथा कमी की गुंजाइश नहीं होती। इस पूरी प्रक्रिया पर और इस कार्यक्रम पर सिद्धार्थ महाजन खुद नियमित रूप से फीडबैक लेते रहते हैं और एक तीसरी आंख की तरह जनसुनवाई कार्यक्रम पर नजर रखे हुए हैं। इसलिए महाजन की ओर से किया गया यह नवाचार जयपुर के लोगों को काफी राहत दे रहा है। बताया गया है कि राजस्थान सरकार की ओर से शासन सचिवालय में संपर्क पोर्टल पर जयपुर विकास प्राधिकरण से संबंधित शिकायतें भी बड़ी संख्या में लोगों की ओर से दर्ज करवाई जाती है। राजस्थान सरकार के संपर्क पोर्टल पर जेडीए से संबंधित शिकायतों का संकलन करके उन्हें जेडीए के पोर्टल और वेबसाइट पर भेजा जाता है, जिसके बाद पीड़ित व्यक्ति घर बैठे ही जेडीए की ई-जनसुनवाई के तहत अपनी शिकायत से संबंधित आवश्यक जानकारी घर बैठे ही जेडीए से हासिल कर लेता है। इसलिए इस नई व्यवस्था से लोगों इस समय और धन दोनों की बचत हो रही है।

अवैध निर्माण और अतिक्रमण पर भी डिजिटल मॉनिटरिंग

विश्व मानचित्र पर जयपुर सालों से पर्यटन के क्षेत्र में जबरदस्त तरीके से अपनी उपस्थिति दिख रहा है। जयपुर की चारदिवारी की बसावट, चारदीवारी क्षेत्र के व्यवस्थित तरीके से बसाए गए बाजार, ऐतिहासिक पर्यटन स्थल, बड़े-बड़े किले, स्मारक, सब कुछ जयपुर की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। लेकिन आबादी और विस्तार के मामले में जयपुर अब मुंबई दिल्ली जैसे महानगरों की श्रेणी में आ गया है, जयपुर शहर के चारों दिशाओं में नेशनल हाईवे हैं, जयपुर के चारों तरफ ही दूर-दूर तक रियल एस्टेट कारोबार से जुड़े लोग कालोनियां विकसित कर रहे हैं। इस स्थिति में जयपुर की खूबसूरती बिगड़े नहीं और जयपुर का विस्तार भी व्यवस्थित तरीके से हो, साथ-साथ जयपुर में अवैध निर्माण और अतिक्रमण नहीं हो, इन सबको लेकर सिद्धार्थ महाजन शुरू से ही काफी गंभीर रहे हैं। महाजन यह भी जानते हैं कि अवैध निर्माण और अतिक्रमण कहीं ना कहीं जयपुर की खूबसूरती और जयपुर की व्यवस्थित बसावट में बाधा खड़ी करते हैं। इसलिए अवैध निर्माण और अतिक्रमण के खिलाफ जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से की जाने वाली कार्रवाई को प्रभावी बनाने के लिए भी ऑनलाइन नजर रखी जाना सुनिश्चित किया हुआ है। क्योंकि अवैध निर्माण और अतिक्रमण को लेकर जयपुर विकास प्राधिकरण की प्रवर्तन शाखा की कार्यशैली को लेकर समय-समय पर जयपुर के लोग सवाल खड़े करते रहे हैं, इसलिए जयपुर विकास प्राधिकरण में भ्रष्टाचार में जीरो टॉलरेंस की नीति पर प्रभावी रूप से कार्रवाई करते हुए अवैध निर्माण और अतिक्रमण पर भी डिजिटल मॉनिटरिंग के माध्यम से तीसरी आंख का पहरा दिया जाना सुनिश्चित किया हुआ है। जयपुर विकास प्राधिकरण में प्रवर्तन शाखा की कमान पुलिस महानिरीक्षक आनंद शर्मा के हाथों में हैं। शर्मा खुद काफी ईमानदार और कर्मठ आईपीएस माने जाते हैं, इसलिए सिद्धार्थ महाजन और आनंद शर्मा दोनों की ओर से ही अवैध निर्माण और अतिक्रमण के खिलाफ प्रभावी तरीके से कार्यवाही की जा रही है। इसके लिए जयपुर विकास प्राधिकरण की सोशल मीडिया की टीम की ओर से भी विषय पर अपने स्तर पर बारीकी से कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा जयपुर विकास प्राधिकरण के पोर्टल पर ऑनलाइन तरीके से अवैध निर्माण और अतिक्रमण को लेकर आने वाली शिकायतों के निस्तारण के लिए प्रवर्तन शाखा की ओर से प्रभावी कार्रवाई जारी है, लेकिन अब भी जेडीए के प्रवर्तन शाखा के कामकाज और कार्यशैली में काफी कुछ सुधार होने की गुंजाइश है। इसलिए सिद्धार्थ महाजन समय-समय पर प्रवर्तन शाखा से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बैठक आयोजित करके उन्हें इमानदारी से कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए भी दिखे हैं, जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं। पिछले कुछ महीनो में जेडीए की प्रवर्तन शाखा की ओर से करोड़ रुपए की सरकारी जमीन से जहां अतिक्रमण हटाए गए, तो दूसरी तरफ बड़ी संख्या में जेडीए प्रशासन को मिले अवैध निर्माण को भी ध्वस्त किया गया है। जेडीसी सिद्धार्थ महाजन प्रवर्तन शाखा को पूरी तरह से डिजिटल तरीके से काम करने की दिशा में तेजी से प्रयास कर रहे हैं, ताकि प्रवर्तन शाखा का समस्त कार्य अगर ऑनलाइन तरीका से संपादित होने लग जाए, तो फिर इस शाखा में भी भ्रष्टाचार की गुंजाइश बिल्कुल भी नहीं रहेगी। इसीलिए जेडीसी सिद्धार्थ महाजन ने जयपुर विकास प्राधिकरण के सभी जोनल कमिश्नर और प्रवर्तन शाखा से जुड़े अधिकारियों को अवैध निर्माण, अतिक्रमण को चिन्हित करने से लेकर उनके ध्वस्त करने तक सारा कार्य डिजिटल प्रक्रिया को अपनाते हुए करने को कहा है, ताकि जयपुर विकास प्राधिकरण की कार्रवाई को लेकर किसी को किसी भी तरह का कोई संदेह नहीं हो।

प्रदेश में आधा दर्जन जिलों के कलेक्टर रहे दिल्ली में 4 साल तक प्रतिनियुक्ति पर भी रहे

सिद्धार्थ महाजन मूल रूप से दिल्ली के निवासी हैं। पढ़ाई में बचपन से ही काफी इंटेलिजेंट रहे और बैचलर ऑफ आर्ट ऑनर्स अर्थशास्त्र, एलएलबी, एलएलएम डिग्रीधारी है। वर्ष 2003 में इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए चुना गया और राजस्थान कैडर दिया गया। प्रदेश में अपनी लंबी सर्विस में इन्हें प्रदेश के आधा दर्जन जिलों का कलेक्टर बनाया गया, जिसमें वर्ष 2016 से 2018 तक जयपुर कलेक्टर के रूप में भी महाजन ने बहुत ही शानदार कार्य करके दिखाया। जयपुर के अलावा महाजन सिरोही, बारां, जोधपुर, सवाई माधोपुर जिलों के कलेक्टर रहे। जिला कलेक्टर रहने के दौरान जिस भी जिले में रहे, वहां इन्होंने अपने कार्यों और जनता से सीधा संवाद बनाए रखा, लोगों की समस्याओं को सुनकर उनका निस्तारण करने का प्रयास करते रहे, जनसुनवाई कार्यक्रमों का ज्यादा से ज्यादा आयोजन करके लोगों के दिलों में अपना अलग मुकाम बनाते रहे। इसके अलावा केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित की जा रही सभी तरह की योजनाओं का नियमित रूप से फीडबैक लेते रहे और लोगों से भी योजनाओं के बारे में सवाल जवाब पूछते रहे, जिसकी वजह से लोग आज भी जिला कलेक्टर के रूप में इनके कार्यों को याद करते हैं। महाजन के बारे में कहा जाता है कि सुर्खियों में रहने के बजाय काम करने में ज्यादा विश्वास रखते हैं, और चुपचाप फाइलों की प्रक्रिया पर लगातार फीडबैक लेकर विभाग के कामकाज को गतिशील बनाए रखते हैं। उनकी इस निपुणता को देखकर ही प्रदेश में चाहे किसी भी पार्टी की सरकार रही हो, इन्हें हमेशा जनता से जुड़े विभागों में काम करने का मौका दिया गया। जिला कलेक्टर के अलावा सिद्धार्थ महाजन प्रदेश में वित्त विभाग के सचिव पद पर भी रहे, कार्मिक और प्रशासन विभाग के अलावा श्रम विभाग में भी इन्हें काम करने का मौका दिया

गया। बाद में 2021 से लेकर 2024 तक केंद्र में प्रति नियुक्ति पर चले गए। केंद्र में प्रति नियुक्ति के दौरान दिल्ली में लोकसभा सचिवालय में संयुक्त सचिव पद और केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय में भी संयुक्त सचिव पद पर पोस्टेड रहे। केंद्र में प्रतिनियुक्ति के दौरान भी इन्होंने अपने कार्यों, व्यवहार और नवाचारों से केंद्र सरकार से जुड़े बड़े लोगों को भी खूब प्रभावित किया। बाद में पिछले दिसंबर महीने में महाजन वापस राजस्थान आ गए। सिद्धार्थ महाजन की पिछली उपलब्धियां और उनकी कार्य कुशलता को देखकर यह पहले से ही अंदाजा लगाया जा रहा था कि इस बार महाजन को प्रदेश की भजन लाल सरकार राजस्थान में कोई बहुत बड़ी जिम्मेदारी देने वाली है। इसी क्रम में जब उन्हें जयपुर विकास प्राधिकरण का आयुक्त बनाया गया, तो किसी को भी कोई हैरानी नहीं हुई, क्योंकि सभी को यह पहले से ही अंदाजा था कि महाजन को कोई प्रभावशाली विभाग और पद दिया जाएगा। इसलिए महाजन ने भी जयपुर विकास प्राधिकरण में अपना कार्यभार ग्रहण किया और कार्यभार ग्रहण करने के तुरंत बाद ही उन्होंने जेडीए के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ सामूहिक मीटिंग आयोजित करके अपने विजन और संकल्प को सबके सामने रखा। जॉइनिंग के पहले दिन से ही महाजन पूरे समर्पित तरीके से कार्य करते हुए नजर आए, इसी का परिणाम है कि पिछले 4 महीने में ही जयपुर विकास प्राधिकरण को एक नए कलेवर और अंदाज में बदलकर रख दिया है। आज लोग जेडीए को बड़ी उम्मीद की निगाह से देख रहे हैं।

जयपुर की ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने में गंभीरता से काम कर रहे सिद्धार्थ महाजन

आबादी और विस्तार के मामले में जयपुर तेजी से आगे बढ़ रहा है। आबादी और विस्तार के बढ़ने से छोटे-बड़े सभी वाहनों की संख्या भी जबरदस्त तरीके से बढ़ रही है। जयपुर में ट्रैफिक की समस्या सालों से बनी हुई है, जयपुर पुलिस के लिए ट्रैफिक व्यवस्था हमेशा ही बड़ी चुनौती रही है। इसके सुधार के लिए जिला प्रशासन, जयपुर विकास प्राधिकरण, ट्रैफिक पुलिस, नगर निगम, राजस्थान हाउसिंग बोर्ड और स्वयं से भी संस्थाएं लगातार काम तो कर रही हैं, लेकिन ट्रैफिक समस्या का ठीक तरह से निवारण नहीं हो पाया है। हालांकि जयपुर में बड़ी संख्या में एलिवेटेड रोड, फ्लाई ओवर, पुलिया निर्माण, जयपुर मेट्रो का संचालन इत्यादि के माध्यम से जयपुर की ट्रैफिक व्यवस्था को कंट्रोल करने और सुधारने का प्रयास किया गया है, लेकिन अब भी जयपुर की ट्रैफिक व्यवस्था में काफी कुछ सुधार की गुंजाइश है। क्योंकि जयपुर के लोगों को अब भी ठीक तरह से ट्रैफिक व्यवस्था नहीं मिल पा रही, इसलिए घर से ऑफिस और ऑफिस से घर आने जाने में लोगों को भीड़ भरे इलाकों, व्यस्त बाजारों और व्यस्त सड़क मार्गों पर काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस परेशानी को सिद्धार्थ महाजन काफी गंभीरता से ले रहे हैं, इसलिए वे जयपुर में ट्रैफिक व्यवस्था के सुधार के लिए संबंधित एजेंसियों और संबंधित विभाग के अधिकारियों के साथ लगातार बैठक आयोजित करके कुछ ठोस सुझाव, नवाचार और नए तरीके के आधार पर जयपुर की ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने की प्रक्रिया पर प्रभावित तौर पर कार्रवाई कर रहे हैं। इसके लिए उन इलाकों में जहां वाहनों की ज्यादा आवाजाही रहती है और लोगों की भीड़ रहती है, वहां पर भीड़ को कंट्रोल करने और वाहनों को डाइवर्ट करने में मौके पर अंडरबाईपास, ओवर ब्रिज, पुलिया इत्यादि का निर्माण करने जैसे बिंदुओं पर तेजी से कार्य कर रहे हैं। महाजन जिला प्रशासन और ट्रैफिक पुलिस से संवाद करके इस विषय पर भी गंभीरता से काम कर रहे हैं कि जयपुर में ट्रैफिक पॉइंट कम किया जाए, ताकि लोग जल्दी से जल्दी और सुगमता से निश्चित जगह पर पहुंच सके।

सांगानेर, विद्याधर नगर और अन्य विधानसभा क्षेत्र में जेडीए के विकास कार्यों का मौके पर जाकर किया अवलोकन

सिद्धार्थ महाजन को जयपुर विकास प्राधिकरण में आयुक्त पद का काम का संभाले ज्यादा दिन नहीं हुए हैं, लेकिन महाजन ने इतने कम समय में ही जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से जयपुर की सभी विधानसभा सीटों के तहत चल रहे विकास कार्यों का मौके पर जाकर निरीक्षण किया है, और इन सभी कार्यों की गुणवत्ता के साथ-साथ निश्चित समय पर काम को पूरा करने के निर्देश भी अधिकारियों को दिए हैं। महाजन ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्वाचन क्षेत्र सांगानेर में भी जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से संपादित की जा रही कई योजनाओं और निर्माण कार्यों का अवलोकन किया है, जिसमें द्रव्यवती नदी, रिंग रोड, ओवर ब्रिज, फ्लाईओवर इत्यादि का बारीकी से निरीक्षण किया और मौके पर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसी तरह से उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी के निर्वाचन क्षेत्र विद्याधर नगर में जेडीए की ओर से संपादित किए जा रहे स्वर्ण जयंती पार्क का भी पिछले दिनों महाजन ने निरीक्षण किया था। इस स्वर्ण जयंती पार्क को ऑक्सीजन पार्क के रूप में विकसित करने की दिशा में जेडीए यहां कई तरह के कार्य करवा रहा है। इस पार्क के विकास के लिए 65 करोड रुपए का बजट स्वीकृत किया गया था। यह पार्क आने वाले दिनों में जयपुर का सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थल के रूप में भी नजर आने वाला है, इसलिए इस स्वर्ण जयंती पार्क को लेकर महाजन भी काफी अलर्ट मोड पर दिखे। उन्होंने इस पार्क की डिजाइन, आकार और प्रकार तैयार करने वाले आर्किटेक्ट से भी काफी देर तक बातचीत की थी। इसके अलावा उन्होंने मुरलीपुरा में रोड संख्या 5 पर जेडीए की ओर से संपादित किया जा रहे हैं कार्यों का निरीक्षण किया और लोहा मंडी का भी बारीकी से अवलोकन करके इस मामले में भी अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। इसके अलावा शहर के अन्य विधानसभा क्षेत्र में भी जेडीए की ओर से संपादित किए जा रहे विकास कार्यों का महाजन लगातार मौके पर जाकर निरीक्षण करके निर्माण कार्य में जुटे लोगों और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दे रहे हैं, जिसकी वजह से जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से संपादित किए जा रहे सभी तरह के छोटे-बड़े निर्माण कार्य व्यवस्थित तरीके से तेजी से संपादित होते दिख रहे हैं, जो आने वाले समय में जयपुर के लोगों के लिए काफी फायदेमंद साबित होंगे।

गुणवत्ता, टाइम पंक्चुअल और समय उपलब्धता पर सिद्धार्थ महाजन का पूरा फोकस

जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से विकसित की जाने वाली कॉलोनी, सार्वजनिक पार्क को डवलप करने और बड़े-बड़े प्रोजेक्ट के निर्माण कार्यों में उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री गुणात्मक तरीके से पूरी तरह से शुद्ध हो और सभी तरह के निर्माण कार्य निर्धारित अवधि में पूरे हो, इसके लिए सिद्धार्थ महाजन ने संबंधित अधिकारियों को डेडलाइन तय की और साफ निर्देशित किया हुआ है कि निर्माण कार्यों में सरकार के एक-एक पैसे का सदुपयोग होना चाहिए। सरकार और आमजन के भरोसे और उम्मीद के अनुसार ही कार्य हो। इसके लिए महाजन नियमित रूप से जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से संपादित किया जा रहे सभी तरह के छोटे-बड़े कार्यों का संबंधित अधिकारियों से फीडबैक लेते रहते हैं और मौके पर जाकर खुद निरीक्षण भी करते हैं। मौके पर अगर उन्हें किसी भी तरह की कोई कमी और गड़बड़ी दिखती है, तो संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश भी देते हैं, और जरूरत पड़ने पर अधिकारियों को कड़ी फटकार भी लगाते हैं।

डॉ. समित शर्मा ऐसे आईएएस जिनके अभूतपूर्व कार्यों, नवाचार और योजनाओं को पूरी दुनिया ने किया सैल्यूट

मेडिसिन मैन के नाम से माने जाने वाले समित शर्मा की चिकित्सा के क्षेत्र में लाई गई सस्ती जेनरिक दवाइयां और निःशुल्क दवा योजना को राजस्थान और भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों ने अपनाया। ऐसे पहले अनुशासित और सिद्धांतों पर चलने वाले अधिकारी जो हमेशा गले में आई कार्ड रखते हैं और जिनका लोगों के दिलों से इतना गहरा जुड़ाव कि चित्तौड़गढ़, नागौर और अन्य कई जगहों पर इनका ट्रांसफर होने पर जनता, व्यापारी और सरकारी कर्मचारी इत्यादि सभी सड़कों पर प्रदर्शन करते देखे गए, जिनकी देश और दुनिया में लोकप्रियता देखकर फिल्म स्टार आमिर खान ने भी अपने सत्यमेव जयते कार्यक्रम में अतिथि के तौर पर बुलाया।

जयपुर। वरिष्ठ आईएएस डॉ. समित शर्मा का नाम सुनते ही एक आत्मीय, सुखद एहसास की अनुभूति होती है। अपनी लंबी आईएएस की नौकरी के दौरान लोगों का इन्हें जितना प्यार, सम्मान मिला, उतना शायद किसी और को नहीं मिला। प्रदेश में अलग-अलग विभागों में नियुक्ति के दौरान इनके नवाचार, नवीन प्रयोग, उत्कृष्ट कार्यों और अभूतपूर्व योजनाओं के चर्चे और तारीफ राजस्थान और पूरे भारतवर्ष में ही नहीं हुई, बल्कि दुनिया के कई देशों ने इनके नवाचार और इनकी ओर से लाई गई योजनाओं को लागू किया, इसीलिए राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष के सबसे काबिल आईएएस अधिकारियों में माना जाता है। चिकित्सा के क्षेत्र में इनके उत्कृष्ट कार्य, नवीन प्रयोगों और इनकी ओर से लाई गई सस्ती जेनेटिक दवाई योजना और निशुल्क दवा योजना के चर्चे राजस्थान और भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में हुए और विदेशों में इनकी योजनाओं को लागू भी किया गया। इतना ही नहीं, प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना और प्रधानमंत्री जन औषधि योजना का जो ड्राफ्ट तैयार किया गया, वह ड्राफ्ट भी सस्ती जेनरिक दवाइयां और निशुल्क दवा योजना के आधार पर ही तैयार किया गया था, इसीलिए चिकित्सा के क्षेत्र में इनके नवीन प्रयोगों और इनकी अभूतपूर्व शानदार योजनाओं को देखकर इन्हें मेडिसिन मैन की उपाधि मिली हुई है। जयपुर, मंसूरी और झालावाड़ में ट्रेनिंग समाप्त करने के बाद इन्हें वर्ष 2006 में जब जोधपुर में एसडीएम पद पर पहली बार नियुक्ति मिली, उसके बाद से लेकर अब तक प्रदेश में कई जिलों में कलेक्टर पद पर रहे। जयपुर और जोधपुर में संभागीय आयुक्त पद पर भी रहे, इसके अलावा विभिन्न महत्वपूर्ण विभागों में बड़े पदों पर नियुक्त रहने के दौरान इन्हें प्रदेश की जनता से जो प्यार और सम्मान मिला, ऐसा सम्मान और प्यार बहुत कम ही किसी अधिकारी के प्रति देखने को मिलता है। लेकिन, लोगों की भलाई और कल्याण के लिए इन्होंने अपनी पूरी सर्विस के दौरान लोगों के प्रति जो संवेदनशीलता जताई और फिर इस संवेदनशीलता से प्रेरित होकर बड़ी-बड़ी सरकारी योजनाओं का ड्राफ्ट तैयार करके लोगों के जीवन को खुशहाल बनाने का जो उत्कृष्ट कार्य किया, उसी का परिणाम है कि डॉ समित शर्मा जहां भी और जिस भी विभाग में पोस्टेड रहे, वहां के लोग इनके ट्रांसफर पर भड़क जाते थे और ट्रांसफर के विरोध में सड़कों पर उतर जाते थे। ऐसा नजारा एक या दो बार नहीं, बल्कि अनेक बार प्रदेश में अलग-अलग जगह पर देखने को मिला, इसीलिए इन्होंने अपनी लंबी सर्विस के दौरान लोगों के दिलों में अपना एक अलग मुकाम बनाया। उसी का नतीजा है कि लोग इनके लिए जीने मरने को तैयार रहते हैं। चित्तौड़गढ़ और नागौर में जब कलेक्टर पद से इनका ट्रांसफर हुआ, तो इनके ट्रांसफर के विरोध में कई दिनों तक बाजार बंद रहे थे और कई दिनों तक लोगों ने सड़कों पर प्रदर्शन किए थे, बाद में इन्हें खुद मौके पर जाकर लोगों को समझाना पड़ा। इनमें कई बड़ी-बड़ी खूबियां हैं, जो इन्हें एक अलग कैटेगरी के अधिकारी के रूप में सुशोभित करती है। इनमें अनुशासन, ईमानदारी, टाइम पंक्चुअल और नियम सिद्धांतों पर आधारित उनकी जीवन शैली और नौकरी करने का इनका स्टाइल इतना खास और अलग है कि अपनी इतनी लंबी सर्विस में एक भी दिन अपने गले में आईडी कार्ड के बिना नजर नहीं आए। हमेशा ड्यूटी के दौरान इनके गले में आईडी कार्ड नजर आता है, जो प्रदेश और देश के किसी अन्य अधिकारी के गले में कभी देखा ही नहीं जाता। ड्यूटी और पद के प्रति इनकी इतनी गंभीरता और सजकता इन्हें अव्वल दर्जे का आईएएस अधिकारी बनाए हुए हैं।

कई महत्वपूर्ण विभागों की जिम्मेदारी को शानदार तरीके से निभाया, सरकार और प्रदेश के लोगों का जीता दिल

जानकारी के अनुसार मंसूरी, जयपुर और झालावाड़ में ट्रेनिंग के बाद डॉ. समित शर्मा को जोधपुर में सबसे पहले एसडीएम पद पर नियुक्ति मिली। इसके बाद कोटा नगर निगम में कार्यकारी अधिकारी, अलवर और भिवाड़ी में यूआईटी सचिव, चित्तौड़गढ़ और नागौर में कलेक्टर पद पर जिम्मेदारी मिली। इसके अलावा, एनआरएचएम मिशन डायरेक्टर पद पर रहे तथा आरएमएससी के प्रबंध निदेशक पद पर भी रहे। जयपुर और जोधपुर के संभागीय आयुक्त पद पर भी नियुक्त रहे। इसके अलावा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग और भूगर्भ जल विभाग, महिला व बाल विकास विभाग में शासन सचिव पद पर नियुक्त रहे। जयपुर मेट्रो के प्रबंध निदेशक पद पर भी कार्य किया। इसके अलावा पशुपालन, मत्स्य, गोपालन जैसे विभागों का उत्कृष्ट तरीके से संचालन किया। वर्तमान में प्रदेश में सहकारिता विभाग के शासन सचिव पद पर नियुक्त हैं। इनकी कार्य कुशलता, ईमानदारी और समर्पित भाव से कड़ी मेहनत से कार्य करने की उनकी प्रवृत्ति को देखकर ही प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इन्हें सहकारिता विभाग की जिम्मेदारी दी है, क्योंकि सहकारिता विभाग सालों से अपने कामकाज और कार्यशैली को लेकर विपक्षी दलों के नेताओं की आलोचना का शिकार होता आया है। कई तरह की गड़बड़ियां, अनियमिताएं और भ्रष्टाचार जैसे एलिगेशन इस विभाग के साथ हमेशा से जुड़े रहे हैं, इसलिए इस विभाग की कार्यशैली को स्वच्छ, साफ सुथरा और पारदर्शी बनाने के लिए मुख्यमंत्री शर्मा ने डॉ समित शर्मा पर काफी भरोसा किया है।

सुरीली आवाज के मालिक हैं डॉ. समित, भजन संध्या में अच्छे भजन गाकर श्रोताओं का जीता दिल

डॉ समित शर्मा एक बेहद सरल, सहज और नेक दिल अधिकारी के रूप में माने जाते हैं। बचपन से ही घर पर अच्छे संस्कार और नैतिक आचरण जैसी अच्छी शिक्षा माता-पिता और अन्य परिजनों से मिली, इसलिए बचपन से घर वालों से मिले अच्छे संस्कारों से लोगों के प्रति इनका आत्मीय और सेवा भाव देखते ही बनता है। ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा और अच्छे कर्म करते रहना इनके जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ है, इसीलिए कई बार जब इन्हें किसी भजन संध्या में

बुलाया जाता है, तो खुद ईश्वर की भक्ति में इतने लीन हो जाते हैं कि खुद गायक से माइक लेकर भजन गाने लग जाते हैं। इनकी जादुई आवाज को सुनकर लोग भी काफी रोमांचित होते हैं। लोगों को यह यकीन नहीं होता कि कोई इतना बड़ा अधिकारी इतनी मधुर वाणी और लय में इतने अच्छे तरीके से एक प्रोफेशनल गायक की तरह भजन प्रस्तुत कर सकता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक मिशन के तहत डॉ. समित शर्मा को सहकारिता विभाग जिम्मेदारी दी

सरकारों के लिए सहकारिता विभाग कितना महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के पास सहकारिता विभाग की भी जिम्मेदारी है, इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक मिशन के तहत सहकारिता विभाग की जिम्मेदारी डॉ.समित शर्मा को दी है। क्योंकि सहकारिता विभाग को लेकर अमित शाह भी काफी गंभीर और चौकस है, इस विभाग के कामकाज को लेकर और विभाग की मॉनिटरिंग को लेकर अमित शाह जयपुर में कार्यक्रम भी कर चुके हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा यह अच्छी तरह से जानते हैं कि सहकारिता विभाग प्रदेश की शहरी और ग्रामीण जनता से सीधा जुड़ा हुआ है। यह विभाग किसान, मजदूर, युवा और महिलाओं से भी सीधा जुड़ा हुआ है। मुख्यमंत्री शर्मा यह भी जानते हैं कि सहकारिता विभाग सालों से अपने कामकाज और कार्य शैली को लेकर आलोचनाओं का शिकार होता आया है। इस विभाग में कई तरह की गड़बड़ियों, कमियां और भ्रष्टाचार हमेशा सरकारों के लिए बड़ी चुनौती बना रहा है, इसलिए इस विभाग की कार्यशैली को साफ सुथरा, स्वच्छ और पारदर्शी बनाने के लिए मुख्यमंत्री शर्मा एक ऐसे अधिकारी को इस विभाग की बागडोर देना चाहते थे जो पूरी मेहनत और ईमानदारी के साथ काम करते हुए सहकारिता विभाग में पोस्टेड अधिकारियों और कर्मचारी को अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करके उनसे अच्छा कार्य करवा सके। इसमें डॉक्टर समित शर्मा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहली च्वाइस बने, क्योंकि डॉक्टर समित एक वरिष्ठ भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी होने के साथ-साथ इन्होंने अपनी लंबी सर्विस में हर विभाग और हर जगह पर दिन रात कड़ी मेहनत करके अच्छे से अच्छा परफॉर्मेंस करके दिखाया और अपनी सर्विस बुक में कई बड़ी-बड़ी उपलब्धियां दर्ज की, जिनके बारे में मुख्यमंत्री शर्मा अच्छी तरह से जानते थे। इसीलिए सहकारिता विभाग की दिशा और दशा सुधारने के लिए उन्होंने डॉक्टर समित को चुना। इसमें कोई संदेह नहीं, इस विभाग की बड़ी-बड़ी चुनौतियां और कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करने में डॉ. समित पूरी तरह से पहले से ही तैयार थे। इस विभाग की काया को बदलने के लिए डॉ.समित ने व्यापक कार्य योजना तैयार करने के साथ-साथ नियमित रूप से मॉनिटरिंग और विभागीय कामकाज को ज्यादा से ज्यादा ऑनलाइन करने की प्रक्रिया पर तेजी से कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा सहकारी समितियां के चुनाव, सहकारी बैंकों के किसानों को ऋण वितरण करने की व्यवस्था, सहकारी संस्थाओं का नियमित रूप से ऑडिट करने, तथा नियम और सिद्धांतों के खिलाफ संचालित हो रही सहकारी संस्थाओं के खिलाफ गड़े कदम उठाने जैसे इत्यादि सभी महत्वपूर्ण विषयों पर डॉ.समित प्रभावपूर्ण तरीके से कार्य करते हुए दिख रहे हैं, जिसके अच्छे नतीजे भी सामने आने लगे हैं। सहकारिता का ज्यादा से ज्यादा आविष्कार करने और ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाने की दिशा में डॉ समित शर्मा का विशेष फोकस है, और ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों का सहकारिता के प्रति भरोसा और विश्वास मजबूत बना रहे, इसके लिए डॉ. समित संकल्पित भाव से प्रयास करते हुए नजर आ रहे हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में सस्ती जेनरिक दवा योजना और नि:शुल्क दवा योजना को लेकर डॉ. समित शर्मा का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित

आईएएस अधिकारी बनने से पहले करीब 5 साल तक डॉ समित शर्मा ने चाइल्ड स्पेशलिस्ट के रूप में सेवाएं दी, इसलिए चिकित्सा क्षेत्र के मामले में इन्हें पहले से ही संपूर्ण गहन जानकारी थी। मरीज और परिजनों की शिकायतों, असुविधाओं, दवाइयां का उत्पादन, दवाई की सरकारी और निजी स्तर पर वितरण व्यवस्था, लोगों की आर्थिक स्थिति, इन सब विषयों के बारे में डॉक्टर समित बहुत अच्छी जानकारी रखते थे। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्र और निर्धन लोगों को उपचार में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, इसके बारे में इन्हें बहुत अच्छी जानकारी थी। सरकारी और निजी अस्पतालों की व्यवस्थाओं इत्यादि सभी के बारे में इन्हें पहले से ही भरपूर नॉलेज था, इसीलिए वर्ष 2008 में जब डॉ. समित शर्मा चित्तौड़गढ़ के कलेक्टर थे, तब इन्होंने लोगों को राहत देने के लिए दिन-रात मेहनत करके सस्ती जेनेरिक दवाई योजना को जमीन पर उतारा, जिसकी पूरे राजस्थान और देश में काफी चर्चा हुई। डॉक्टर समित शर्मा के इस नवाचार को पूरी दुनिया ने सेल्यूट किया, इनके इस अभूतपूर्व नवाचार को देखकर राजस्थान सरकार ने इन्हें निशुल्क दवा योजना का ड्राफ्ट तैयार करने की जिम्मेदारी दी, जिस पर इन्होंने काफी कड़ी मेहनत की और दिन रात रिसर्च और स्टडी करके इन्होंने निशुल्क दवा योजना का ड्राफ्ट तैयार करके सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया। जिसको राजस्थान और भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों ने खुले दिल से इसको अपने यहां लागू किया और देखते ही देखते डॉक्टर समित शर्मा अपने इस नवाचार से भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में पॉपुलर हो गए। बाद में सस्ती जेनरिक दवा योजना और निशुल्क दवा योजना के आधार पर ही भारत सरकार ने प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना और प्रधानमंत्री जन औषधि योजना का ड्राफ्ट तैयार कर किया और देश को समर्पित किया। इस तरह से चिकित्सा के क्षेत्र में डॉक्टर समित शर्मा कि यह प्रयास स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गए।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी किया सम्मानित विख्यात फिल्म अभिनेता आमिर खान ने भी सत्यमेव जयते कार्यक्रम में अतिथि के तौर पर डॉ. समित को बुलाया

जानकारी के अनुसार, चिकित्सा के क्षेत्र में डॉ. समित शर्मा की ओर से किए गए उत्कृष्ट कार्यों, नवीन प्रयोग और सस्ती जेनरिक दवा योजना और निशुल्क दवा योजना का ड्रॉप तैयार करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाने पर वर्ष 2010 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी दिल्ली बुलाकर विशेष रूप से डॉक्टर समित का सम्मान किया।

हालांकि, अब तक की लंबी सर्विस में अलग-अलग विभागों में रहने के दौरान अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए डॉक्टर समित शर्मा को कई बड़े-बड़े पुरस्कार मिल चुके हैं। इसके अलावा व्यापारिक संगठनों, सामाजिक संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं और चिकित्सा के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही संस्थाओं की ओर से कई बार इन्हें सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा, चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर देश और दुनिया में इन्हें जो लोकप्रियता मिल रही थी, उसको देखकर फिल्म स्टार आमिर खान ने भी 2012 में इन्हें अपने ऐतिहासिक सत्यमेव जयते शो के लिए विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। इस ऐतिहासिक शो में आमिर खान ने सस्ती जेनेटिक दवा योजना और निशुल्क दवाई योजना के बारे में भी कई तरह के सवाल जवाब इनसे पूछे। इन योजनाओं को तैयार करने में कितना समय लगा, किस तरह से यह योजनाएं तैयार की गई, इन योजनाओं को तैयार करने में किन-किन विषयों को शामिल किया गया और किस किस विषय को आधार बनाकर यह योजना तैयार की गई, इन सब के बारे में आमिर खान ने इनसे कई बड़े-बड़े महत्वपूर्ण सवाल पूछे, जिनका डॉक्टर समित शर्मा ने बहुत ही प्रभावपूर्ण तरीके से जवाब दिया, जिसको देश व पूरी दुनिया ने सुना और देखा। इस ऐतिहासिक शो को पूरी दुनिया के लोगों ने देखा, जिसकी वजह से समित शर्मा राजस्थान और भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों में एक पॉप्युलर और चर्चित अधिकारी बन गए।

चाइल्ड स्पेशलिस्ट से बने आईएएस अधिकारी

वर्ष 2004 बैच के आईएएस अधिकारी डॉक्टर समित शर्मा मुख्य रूप से अजमेर के रहने वाले हैं। इन्होंने मेडिकल में पोस्ट ग्रेजुएशन किया है और 5 साल तक चाइल्ड स्पेशलिस्ट के रूप में चिकित्सा के क्षेत्र में इन्होंने अपनी सेवाएं दी, लेकिन इनके विज्ञान के टीचर डॉक्टर पीसी जैन, जो बाद में उनके ससुर भी बन गए, उन्होंने इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने को प्रेरित किया और कहा कि डॉक्टरी करने के बाद भी अधिकारी बना जा सकता है। क्योंकि डॉक्टर पीसी जैन डॉ समित शर्मा के पिता सुरेंद्र कुमार शर्मा के गहरे दोस्त थे, इसलिए अपना गुरु और अपने पिता के अच्छे दोस्त होने से समित शर्मा डॉ. पीसी जैन का पितातुल्य सम्मान करते थे। इसलिए उन्होंने पीसी जैन की बात को काफी गंभीरता से लिया और डॉक्टरी की प्रैक्टिस के दौरान ही इन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा भर्ती परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी, और वर्ष 2003 में आयोजित भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में 68वीं रैंक हासिल करके अपने गुरु और पितातुल्य डॉ.पीसी जैन के सपने को पूरा किया। बाद में पीसी जैन की बेटी सोनिका के साथ इनका विवाह भी हुआ। बताते हैं कि इनके ससुर पीसी जैन यह जानते थे कि समित शर्मा एक टैलेंटेड, ऑनेस्ट और आत्मीय भाव रखने वाले इंसान है, इसलिए इस तरह के इंसान का कार्य क्षेत्र काफी विशाल और बड़ा होना चाहिए, ताकि समाज के लोगों की ज्यादा से ज्यादा सेवा हो सके। हालांकि, डॉक्टर समित शर्मा ने भारतीय प्रशासनिक सेवा का अधिकारी बनने से पहले करीब 5 साल तक चाइल्ड स्पेशलिस्ट के बतौर सेवाएं दी और एक अच्छे डॉक्टर के रूप में उन्होंने खुद की पहचान बना ली थी, लेकिन पीसी जैन यह चाहते थे कि समित शर्मा ज्यादा से ज्यादा विभागों और सेक्टर में रहकर लोगों की सेवा करें, इसीलिए उन्होंने इन्हें आईएएस बनने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. समित की आंगनबाड़ी केंद्रों में खेलते-खेलते शिक्षा और मस्ती की पाठशाला का प्रयोग बच्चों की शिक्षा के लिए बन गया वरदान

डॉ .समित शर्मा नवाचार और नवीन प्रयोगों के पर्याय माने जाते हैं। जहां भी और जिस भी विभाग में रहे, वहां इन्होंने हमेशा नवाचार और नवीन प्रयोग करके लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास किया। इसी क्रम में, जब वे महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव पद पर नियुक्त हुए, तब आंगनबाड़ी केंद्रों की दशा और दशा सुधारने में इनके बहुत अच्छे प्रयास रहे। इसके लिए इन्होंने आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों में शिक्षा के प्रति भाव पैदा करने के लिए खेलते खेलते शिक्षा और मस्ती की पाठशाला कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें तीन से 6 साल तक के बच्चों को आंगनबाड़ी केंद्रों में शिक्षा उपलब्ध करवाया जाना सुनिश्चित किया। यह कार्यक्रम देखते ही देखते आंगनबाड़ी केंद्रों में काफी लोकप्रिय बन गया, और क्षेत्र के 3 से 6 साल तक के बच्चे इन केंद्रों में शिक्षा लेने लगे। यह अपने आप में एक अच्छा प्रयोग था, जो ग्रामीण क्षेत्रों में तो निधन, गरीब और मजदूर परिवारों के बच्चों के लिए वरदान बन गया, जिसमें बहुत कम उम्र में ही बच्चे प्रारंभिक शिक्षा से रूबरू होने लगे।

जयपुर संभागीय आयुक्त पद पर दफ्तर के बाहर स्थापित बोर्ड को लेकर काफी चर्चित हुए

अक्सर कोई भी अधिकारी हो, वह अपने दफ्तर के बाहर बोर्ड पर आमजन के लिए मिलने का समय ज्यादातर शाम के 3:00 से 4:00 का समय सुनिश्चित करके रखते हैं, लेकिन समित शर्मा ने हमेशा, चाहे कलेक्टर पद पर रहे हो या फिर संभागीय आयुक्त पद पर या फिर अन्य विभागों में, हर जगह इन्होंने अपने दफ्तर के बाहर बॉर्डर पर साफ लिखवा देते हैं, 'ऑफिस के समय किसी भी समय मुलाकात करें'। इसी तरह का बोर्ड इन्होंने जयपुर संभागीय आयुक्त पद पर रहने के दौरान अपने दफ्तर के बाहर स्थापित किया था, जो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुआ, जिसे लोगों ने खूब अप्रिशिएट किया। यानी समित शर्मा ने आमजन के लिए अपने दफ्तर के दरवाजे हमेशा खुले रखे, आमजन के लिए उन्होंने कोई भी समय निश्चित नहीं किया, बल्कि किसी भी समय लोग आकर उनसे कार्यालय में मिल सकते हैं।

ऋषि मुनियों जैसे पेड़ों से करते हैं प्यार

जमवारामगढ़ क्षेत्र में नए पेड़ों से ले आए बहार

करीब 28 साल की प्रशासनिक सेवा में सभी महत्वपूर्ण विभागों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले आईएएस डॉ. हरसहाय मीणा सालों से सामाजिक सरोकारों के कार्यों में भी निभा रहे अग्रणी भूमिका, नए पेड़ लगाने के मामले में तो पेड़ वाले बाबा के नाम से मशहूर होकर भारतवर्ष में बटोर रहे सुर्खियां, जनहित के कार्यों और लोगों की भलाई करने के मामले में इनकी पत्नी सुमन मीणा का भी कोई नहीं जवाब, जमवारामगढ़ क्षेत्र और आसपास के दूर दराज के इलाकों में इन दोनों पति-पत्नी के व्यवहार और कार्य शैली की हर घर में हो रही चर्चा।

जयपुर। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी डॉ. हरसहाय मीणा अपने कार्य और कर्मों से ऋषि मुनियों की तरह दिख रहे हैं। जैसे अनादिकाल में ऋषि मुनि अपने बाग बगीचे में फूल, फलदार और औषधि युक्त पेड़ लगाने में खुद को ज्यादा व्यस्त रखते थे, ठीक वैसे ही डॉ. मीना पिछले कई सालों से अपनी एक विशाल व्यक्तिगत टीम के दम पर जमवारामगढ़, बस्सी और आसपास के इलाकों में अब तक लाखों की तादाद में फलदार और छायादार पेड़ लगा चुके हैं। इसीलिए इनके पेड़ों के प्रति असीम लगाव को देखकर जो भी इनके बारे में सुनता है और देखता है, दांतों तले अंगुली दबा लेता है। क्योंकि इनके प्रयासों से जमवारामगढ़, बस्सी, तुंगा और आसपास के इलाके में बड़ी संख्या में लगाए गए पेड़ों से एक तरफ जहां इलाके में हरियाली नजर आने लगी है, तो दूसरी तरफ फूल, फलदार, छायादार और औषधियुक्त पेड़ लोगों के लिए काफी फायदेमंद साबित हो रहे हैं। इसी वजह से डॉक्टर मीणा के इस नेक कार्य की गूंज सोशल मीडिया के इस जमाने में भारत के कोने-कोने में सुनाई दे रही है। लोग इन्हें पेड़ वाले बाबा के नाम से पुकारने लगे हैं, जहां भी जाते हैं लोग इन्हें पेड़ वाले आईएएस बाबा पुकारते नजर आते हैं। करीब 28 साल की अपनी हाई प्रोफाइल सरकारी सर्विस में अपनी ईमानदारी, साफ सुथरी छवि और वर्किंग स्टाइल से प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी में अपनी एक अलग पहचान रखने वाले इस ऑफिसर ने सामाजिक सरोकारों के कार्यों और बेजुबान पशु पक्षियों की भलाई और सेवा करने में तो खुद को समर्पित रखा हुआ है ही, साथ ही जमवारामगढ़ पंचायत समिति सदस्य इनकी धर्मपत्नी सुमन मीना भी क्षेत्र के लोगों में अपने अच्छे व्यवहार और जनहित के कार्यों की वजह से इलाके में काफी पॉपुलर हैं। इसे ईश्वर की विशेष कृपा ही कह सकते हैं कि इन दोनों पति-पत्नी का सामाजिक सरोकारों के कार्यों, वृक्षारोपण और बेजुबान पशु पक्षियों की सेवा करने का एक जैसा मन है। भले ही दोनों अलग-अलग प्रोफेशन में हो, लेकिन दोनों का एक ही संकल्प है समाज सेवा, वृक्षारोपण और बेजुबान पशु पक्षियों की सेवा करना।

बचपन से पेड़ों के नीचे पढ़ते और पेड़ों पर खेलते खेलते पेड़ों से हो गई बेपनाह मोहब्बत और लगाव

जयपुर जिले के जमवारामगढ़ के कानडियावाला गांव के एक साधारण से किसान लक्ष्मी नारायण मीणा के घर में जन्म लेने वाले डॉ. हरसहाय मीणा का बचपन कठिन और संघर्ष में परिस्थितियों परिस्थितियों में गुजरा। पीढ़ी दर पीढ़ी इनके परिवार की खेती और पशुपालन ही आजीविका का साधन रहा और इनसे पहले परिवार का कोई और सदस्य हाई प्रोफाइल सर्विस में भी नहीं रहा। इसलिए राजस्थान जैसे सूखे प्रदेश में किसान परिवार के सामने परिवार का पालन पोषण और बच्चों को पढ़ने में कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, यह हर कोई जानता है। इसलिए बचपन से ही डॉ. हरसहाय ने अपने माता-पिता को कठिन संघर्ष और मेहनत करते हुए देखा। हालांकि इनके पिता की ख्वाहिश थी कि बच्चा अच्छी स्कूल में अध्ययन करें, लेकिन परिवार के हालात अच्छी स्कूल में शिक्षा दिलाने जैसे नहीं थे। इसलिए डॉ. मीना की दसवीं क्लास तक की पढ़ाई ग्रामीण इलाके में हुई। इसलिए बचपन से ही इनकी दिनचर्या में खेती कार्य में माता-पिता का सहयोग करना और खेत में ही पेड़ के नीचे बैठकर देर तक पढ़ाई करना और पढ़ाई के साथ-साथ पेड़ों पर ही बच्चों के साथ खेलने जैसा जीवन जिया। इसलिए पेड़ इनकी लाइफ स्टाइल का अभिन्न अंग रहे। पेड़ों के साथ पढ़ाई और पेड़ों के साथ खेलते खेलते इन्हें पेड़ों से असीम प्यार और लगाव हो गया, जो कॉलेज और यूनिवर्सिटी की पढ़ाई के दौरान भी रहा और राजस्थान प्रशासनिक सेवा में शामिल होने के बाद भी पेड़ इनके जीवन का अहम हिस्सा रहे। हर साल जब भी मानसून आता, उससे पहले ही डॉ. मीणा नए पेड़ लगाने की सभी तैयारियां अपने स्तर पर पूरी कर लिया करते थे। राजस्थान प्रशासनिक सेवा से भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदोन्नति होने के बाद भी, लगातार मानसून के दौरान जमवारामगढ़, तुंगा, बस्सी और आसपास के इलाकों में अपनी खुद की व्यक्तिगत टीम को साथ लेकर उन इलाकों में ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगा रहे हैं जहां हरियाली कम है और जहां पेड़ों की संख्या काफी कम है। इनका नए पेड़ लगाने का सफर अब से नहीं, बल्कि कई सालों से निरंतर चला आ रहा है। जिसकी वजह से जमवारामगढ़ और आसपास के इलाके में इनके लगाए पेड़ों से एक अलग हरियाली सा माहौल दिखने लगा है। क्षेत्र का पर्यावरण तो संतुलित हो ही रहा है, इसके अलावा इनकी ओर से लगाए जा रहे फलदार, छायादार, और औषधि युक्त पेड़ों से लोगों को काफी फायदा भी हो रहा है।

अपने दिवंगत पिता के नाम ट्रस्ट का गठन कर ट्रस्ट के माध्यम से पौधरोपण और सामाजिक सरोकारों के कार्यों को कर रहे हैं संपादित

वर्ष 2010 में अपने पिता लक्ष्मी नारायण मीणा के निधन के बाद, इन्होंने अपने पिता की याद में जनहित के कार्यों और पौधरोपण जैसे कार्यों के लिए लक्ष्मी नारायण मीणा मेमोरियल ट्रस्ट का गठन किया। और इन्होंने इस ट्रस्ट से उन लोगों, खास तौर से उन नौजवान लड़कों को जोड़ा जो दिल में समाज की भलाई करने की सोच रखते हैं। डॉ. मीना और इनकी धर्मपत्नी सुमन मीणा की पर्सनैलिटी और व्यवहार को देखकर बड़ी संख्या में इलाके के नौजवान युवा जुड़े हुए हैं, जो पौधरोपण के कार्य में डॉक्टर मीना और उनकी धर्मपत्नी सुमन मीणा के साथ जबरदस्त तरीके से अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। इस ट्रस्ट के माध्यम से पौधरोपण के अलावा बेजुबान पशु और पक्षियों की सेवा भी की जा रही है। इसके अलावा विभिन्न जाति और बिरादरी के लोगों के सामूहिक विवाह सम्मेलन, गौशाला, नंदी शाला, मंदिर निर्माण, धर्मशाला, निर्धन परिवारों के बच्चों को पढ़ाई के लिए समुचित संसाधन उपलब्ध करवा कर उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित करना, नशा मुक्ति, समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के प्रयास करना इत्यादि सभी कार्य इस परोपकारी ट्रस्ट के माध्यम से संपादित कर रहे हैं। क्योंकि सर्विस में होने की वजह से समय की व्यस्तता के चलते नियमित रूप से व्यापक पैमाने पर सामाजिक सरोकारों के कार्य करना अकेले डॉ. मीणा के लिए संभव नहीं था। इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी सुमन मीणा और करीबी दोस्तों का सहयोग लेकर ट्रस्ट का गठन किया, जो आज यह ट्रस्ट जमवारामगढ़ क्षेत्र के लोगों के लिए वरदान कर बन गया है।

कुशल एडमिनिस्ट्रेटर जो देखते ही देखते बन गया "पेड़ वाला बाबा"

डॉ. हरसहाय मीणा के राजस्थान प्रशासनिक सेवा में शामिल होने के बाद से लेकर अब तक प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस पार्टी दोनों दलों की सरकार रही है, लेकिन अपनी ईमानदारी, अनुशासित, साफ सुथरी छवि तथा समर्पित भाव से ड्यूटी करने की अपनी हैबिट से सभी सरकारों ने इन्हें हमेशा महत्वपूर्ण विभागों में काम करने का अवसर दिया। जिसमें इन्होंने हर विभाग में उल्लेखनीय प्रदर्शन करके सरकारों को काफी प्रभावित किया और जहां भी नियुक्त रहे, वहां के लोगों में भी काफी पॉपुलर रहे। इसीलिए राजस्थान की ब्यूरोक्रेसी में इन्हें एक अलग अंदाज वाले ऑफिसर के रूप में देखा जाता है। लेकिन पिछले 15 सालों से इन्होंने बिना सरकारी मदद और बिना किसी स्वयं सेवी संस्था के सहयोग से अपने स्तर पर जमवारामगढ़ और आसपास के इलाके में हजारों की तादाद में जो पेड़ लगाए, उन पेड़ों से निकली शुद्ध हवा, फल और औषधियां क्षेत्र के लोगों के जीवन को काफी आनंदित कर रही है। मोटे अनुमान के अनुसार, डॉक्टर मीणा अब तक अपने खुद के व्यक्तिगत प्रयासों के माध्यम से 7 लाख से ज्यादा पेड़ लगा चुके हैं। और पेड़ लगाते ही नहीं है, बल्कि उनके बड़े होने तक उनकी रखवाली और सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखते हैं। इसीलिए लोग इन्हें एक अच्छे प्रशासक के रूप में तो मानते ही थे, लेकिन लोग इन्हें अब पेड़ वाले बाबा के नाम से भी पुकारते हैं। आजकल सोशल मीडिया का जमाना है, इसलिए सोशल मीडिया पर भी इनके पेड़ लगाने की चर्चा वाले वीडियो खूब वायरल होते हैं। इसलिए डॉ. मीणा पेड़ लगाने के मामले में पेड़ वाले बाबा के रूप में जयपुर में ही नहीं, बल्कि पूरे भारतवर्ष में लगातार पॉपुलर हो रहे हैं। क्योंकि नए-नए लोगों को सोशल मीडिया, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से जब यह पता चलता है कि देश का एक आईएएस अफसर जो खुद नियमित रूप से पेड़ लगाने के लिए जगह-जगह अपने हाथों से गड्ढा खोदता है, और फिर उसमें पौधा रोपता है, और खुद ही पौधे को पानी देता है, तो लोगों को यह यकीन ही नहीं होता कि एक बड़ा अधिकारी इतना सब कुछ अपनी व्यस्त सर्विस में कैसे कर लेता है। लेकिन डॉ. मीणा यह सब करके दिखा रहे हैं, और यह अब से नहीं बल्कि पिछले 15 सालों से, जो वास्तव में अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि और नेक पुण्य का काम है।

करीब 28 साल की सर्विस में प्रदेश भर में कई जिलों में महत्वपूर्ण विभागों में रहे पोस्टेड

वर्ष 1997 बैच के राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी डॉ. हरसहाय मीणा नोखा, सलूंबर, बामनवास, नोहर, नीमकाथाना इत्यादि कई जगहों पर उपखंड अधिकारी के रूप में पोस्टेड रहे। इसके अलावा अतिरिक्त कलेक्टर झुन्झनू, जयपुर ईस्ट पद पर भी रहे। इसके अलावा जयपुर नगर निगम में अतिरिक्त आयुक्त पर रहे। सामाजिक और न्याय विभाग में निदेशक पद पर रहने के साथ-साथ परिवहन विभाग, राजस्व और आबकारी विभाग में भी बड़े पद पर नियुक्त रहे। मुख्यमंत्री कार्यालय में संयुक्त सचिव पद पर भी इन्हें जिम्मेवारी मिली। इसके अलावा सामान्य प्रशासन विभाग में भी महत्वपूर्ण पद पर कार्य किया। वर्तमान में राजस्थान वित्त निगम में एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर पद पर नियुक्त है। इस तरह से डॉ. मीणा के इस लंबे सर्विस के सफर को देखें तो साफ पता चलता है कि राजस्थान की विभिन्न राजनीतिक दलों की सरकारों ने इन्हें हमेशा उनकी योग्यता और उनकी ईमानदारी को देखकर इन्हें महत्वपूर्ण विभागों में काम करने का अवसर दिया। और डॉ. मीणा ने भी अपनी इस लंबी सर्विस में हमेशा ईमानदारी और कड़ी मेहनत तथा समर्पित भाव से नियम और कानून के अनुसार अपने पद की जिम्मेदारी को बखूबी से निभाया और लोगों की खूब सेवा की। बताया गया है कि इतनी लंबी सर्विस में एक बार भी डॉ. मीना की कार्यशैली और ईमानदारी पर किसी ने भी सवाल खड़े नहीं किए, इनकी सर्विस बेदाग रही।

कोरोना की अवधि में औषधियुक्त पेड़ लगाने पर ज्यादा ध्यान आकृष्ट किया

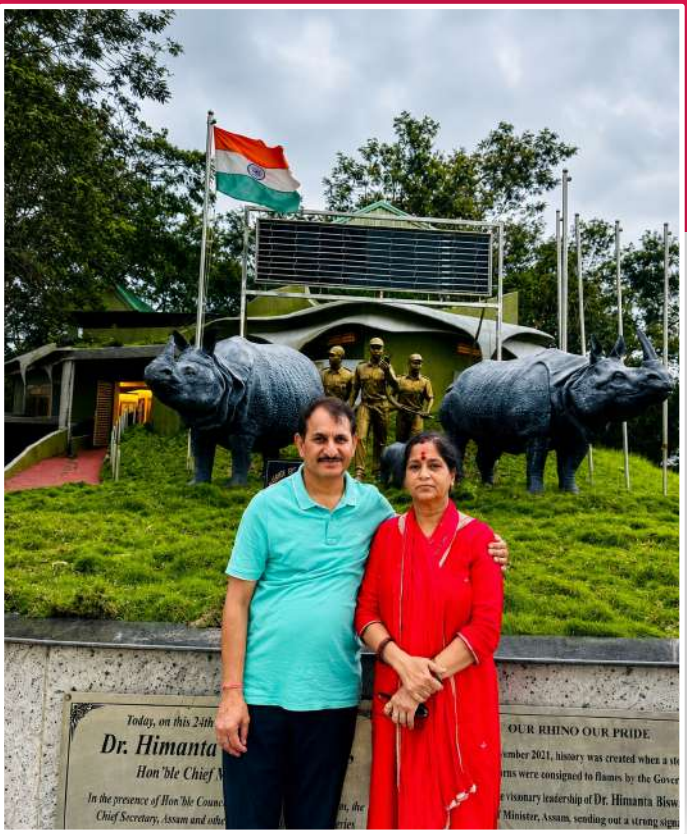

जानकारी के अनुसार, प्रदेश में कोरोना महामारी के दौरान डॉ. मीना ने क्षेत्र में औषधि युक्त पेड़ लगाने पर ज्यादा ध्यान आकृष्ट किया। आंवला, गिलोय, अमरूद, पीपल, नीम, बरगद, आम इत्यादि पेड़ ज्यादा से ज्यादा संख्या में लगाए गए, जिनका लोग अब तक भरपूर फायदा उठा रहे हैं। क्योंकि कोरोना महामारी के दौरान आयुर्वेद औषधि और काढ़े के सेवन पर चिकित्सक ज्यादा सलाह दे रहे थे, इसलिए डॉ. मीणा ने अपने ट्रस्ट, अपनी टीम के युवाओं को साथ लेकर इलाके में बड़ी संख्या में इन महत्वपूर्ण और उपयोगी पेड़ों को लगाया। नए पेड़ लगाने के अभियान को व्यवस्थित तरीके से संपादित करने के लिए डॉ. मीणा मानसून के दस्तक देने से पहले ही पूरी कार्य योजना तैयार कर लेते हैं। कहां, किस इलाके में कौन सी जगह पर पेड़ लगाने हैं, इन सबके बारे में कार्य योजना तैयार की जाती है। पेड़ लगाने के बाद पेड़ की रखवाली कौन करेगा और पेड़ को नियमित रूप से पानी कौन देगा, इन सब की बाकायदा क्षेत्र के लोगों के साथ चर्चा करके जिम्मेदारी भी निर्धारित की जाती है। इसके अलावा, इलाके के किसानों को भी बड़ी संख्या में हर साल मानसून के सीजन में फ्री में पेड़ उपलब्ध करवाते हैं। इसके लिए इलाके की सरकारी और निजी स्कूलों में भी पौधरोपण के लिए छात्रों को प्रेरित करने के विषय पर भी डॉ. मीणा अपनी ट्रस्ट के माध्यम से लेक्चरर्स करवाते रहते हैं, ताकि बच्चे पेड़ के महत्व और पेड़ के लाभों को जानकार पेड़ लगाने के लिए प्रेरित हो सके। बड़ी बात यह है कि लाखों की संख्या में पेड़ लगाने के इस ऐतिहासिक कार्य में डॉ. मीणा ने कभी भी ना तो अपनी सर्विस का प्रभाव दिखाकर किसी से किसी भी तरह की मदद ली और ना ही सरकारों से या किसी भामाशाह और दानदाता से किसी भी तरह की मदद ली। डॉ. मीणा सिर्फ अपने व्यक्तिगत प्रयासों से सालों से इस पौधरोपण अभियान को सफलतापूर्वक संपादित कर रहे हैं, जो अपने आप में एक महान कार्य कहा जा सकता है। बड़ी बात यह है कि आजकल अगर कोई हजार रुपए भी मंदिर में दान करता है तो उसकी फोटो सोशल मीडिया पर डाल देता है, या फिर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में खुद को बड़ा दानदाता बताने की चेष्टा करता रहता है। लेकिन अपने पिछले 15 साल के इस पौधरोपण अभियान और सामाजिक सरोकारों के कार्यों में कभी भी डॉ. मीणा ने मीडिया का सहारा लेकर प्रचार प्रसार नहीं किया। चाहते तो अच्छी हाई प्रोफाइल सर्विस होने की वजह से, मीडिया में भी इनके अच्छे जानकार लोग हैं, खुद को खूब हाईलाइट करवा सकते थे। लेकिन इन्होंने कभी भी अपने इस परोपकारी कार्य को प्रचार प्रसार से हमेशा दूर रखा।

अपने माता-पिता के निधन के बाद खुद को अपनी पत्नी सुमन मीणा के साथ जन सेवा के लिए कर दिया समर्पित

डॉ. हरसहाय मीणा ने काफी हाई प्रोफाइल पढ़ाई की है, दर्शनशास्त्र में एम.ए. किया है, गाँधी अध्ययन में एम.फिल तो नीति शास्त्र में पीएचडी की हुई है। इन्होंने 11वीं कक्षा से लेकर कॉलेज, यूनिवर्सिटी और तमाम तरह की डिग्रियां जयपुर में ही पढ़ाई करके हासिल की। डॉ. मीणा बचपन से ही पढ़ाई में काफी ब्रिलिएंट थे और पढ़ाई में हमेशा कक्षा में टॉपर रहे है। अन्य समाज की तुलना में अपनी बिरादरी के लोगों को हाई प्रोफाइल सर्विस में कम संख्या में देखकर मन को थोड़ा कभी-कभी उदास भी कर लिया करते थे, लेकिन खुद ने कॉलेज और यूनिवर्सिटी की पढ़ाई के दौरान ही संकल्प कर लिया था कि सर्विस करनी है तो प्रशासनिक सेवा की ही करनी है। इसीलिए राजस्थान प्रशासनिक भर्ती परीक्षा में शामिल हुए और पहले ही प्रयास में सफल भी हो गए। इस तरह से वर्ष 1997 से डॉ मीना ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा में अपने सफर की शुरुआत की। प्रशासनिक सेवा के इस लंबे सफर में इन्होंने पूरे प्रदेश में अलग-अलग जगह पर अलग-अलग महत्वपूर्ण विभागों में बड़े पदों पर नियुक्त रहे, और जहां भी पोस्टेड रहे वहां अपनी ईमानदारी मेहनत और लगन से अपने परफॉर्मेंस से क्षेत्र के लोगों का ही दिल नहीं जीता, बल्कि प्रदेश सरकारों को भी काफी प्रभावित किया। बाद में वर्ष 2025 में इन्हें प्रमोशन मिला और भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए। वर्तमान में राजस्थान वित्त निगम में एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर पद पर नियुक्त है। लेकिन इनके बारे में कहा जाता है कि यह जितना अपनी सर्विस को लेकर संवेदनशील रहते हैं, उतना ही सामाजिक सरोकारों के कार्यों में भी खुद को हमेशा आगे रखते हैं। बिना जाति भेदभाव के हर जाति और बिरादरी के लोगों की भलाई और कल्याण के लिए जितना हो सके उतना हर तरह से सहयोग करते हैं। इस कार्य में इनकी धर्मपत्नी सुमन मीणा का भी हर तरह से पूरा सहयोग रहता है। दोनों पति-पत्नी अक्सर सामाजिक सरोकारों के कार्यों में फील्ड में साथ-साथ नजर आते हैं। इसीलिए दोनों पति-पत्नी जमवारामगढ़ और आसपास के इलाकों में अपने अच्छे और माधुरी व्यवहार और अपने जनहित के कार्यों को लेकर अब से नहीं, बल्कि कई सालों से लोकप्रियता की सुर्खियां बटोर रहे हैं। अपने माता-पिता के दुनिया छोड़कर चले जाने के बाद डॉ. मीणा और इनकी धर्मपत्नी सुमन मीणा ने खुद को पूरी तरह से सामाजिक सरोकारों के कार्यों, पौधरोपण और बेजुबान पशु पक्षियों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। हालांकि आईएएस की सर्विस में होने की वजह से डॉ. मीणा की व्यस्तता बहुत ज्यादा

रहती है, लेकिन फिर भी पौधरोपण, ब्लड डोनेशन कैंप, प्रतिभा सम्मान समारोह, वरिष्ठजन सम्मान समारोह, जन जागरण अभियान और अन्य सामाजिक सरोकारों के कार्यों को संपादित करने के लिए इन्होंने अपने पिता के नाम एक ट्रस्ट बनाया हुआ है। इसके माध्यम से ट्रस्ट से जुड़े लोग लगातार इनके मार्गदर्शन से पौधरोपण और अन्य सामाजिक सरोकारों के कार्यों को नियमित रूप से गति देते रहते हैं।

डॉ. मीना की धर्मपत्नी सुमन मीणा भी कंधे से कंधा मिलाकर पति का सामाजिक सरोकारों और पौधरोपण के कार्यों में दे रही है साथ

डॉ. हरसहाय मीणा की पत्नी सुमन मीणा जमवारामगढ़ पंचायत समिति की सदस्य हैं, इससे पहले मानोता ग्राम पंचायत की सरपंच भी रह चुकी हैं। लोकप्रियता के मामले में अपने आईएएस पति से बिल्कुल भी काम नहीं है। पति भले ही हाई प्रोफाइल सर्विस में हो, लेकिन पंचायत समिति बोर्ड में सुमन मीणा ने अपने सरल, मधुर व्यवहार और अपनी पर्सनालिटी से गजब का प्रभाव बनाए रखा। जिसकी वजह से अपने वार्ड में भी इन्होंने काफी विकास कार्य संपादित करवाएं। सरपंच पद पर रहने के दौरान भी अपनी ग्राम पंचायत को विकास की बुलंदियों पर पहुंचाया। इलाके में प्रदेश की विभिन्न बड़ी राजनीतिक पार्टियों के रणनीतिकारों की निगाह सुमन मीणा पर टिकी हुई है। इनकी लोकप्रियता का ग्राफ ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर बढ़ता जा रहा है। लगातार जन संवाद और लगातार लोगों से मुलाकात करके उनकी समस्याओं का पता लगाकर उनके निवारण करने की अपनी कला के दम पर, इलाके में हर जाति और बिरादरी के लोगों में अपना अलग मुकाम बना लिया है। अपने आईएएस पति के साथ कई बार सामाजिक सरोकारों के कार्यों और पौधरोपण के कार्य में फील्ड में काम करते हुए इन्हें आसानी से देखा जा सकता है। इन दोनों पति पत्नियों में ना रुतबे का गुरूर और ना ही पैसों का घमंड, दोनों अपने सहज और सरल अंदाज में हमेशा दिखते हैं। अपने मुस्कुराते हुए चेहरे और माधुरी वाणी से देखते ही सबको अपना बना लेते हैं, यही खासियत इन दोनों पति पत्नियों को सबसे अलग और सबसे जुदा कर देती हैं। अभी यह कहना तो काफी मुश्किल है कि सुमन मीणा कौन से पॉलीटिकल दल की शोभा बढ़ाने वाली है, लेकिन जिस तरह से इलाके में इनकी पापुलैरिटी और इनके सामाजिक सरोकारों के कार्यों और पौधरोपण की गतिविधियों की गूंज जयपुर से लेकर दिल्ली तक सुनने को मिल रही है, उस से ऐसा दिख रहा है कि सुमन मीणा जल्दी ही किसी बड़े राजनीतिक दल की शोभा बढ़ा सकती हैं।

राजस्थान वित्त निगम के कुशल प्रबंधन में अपनी अहम भूमिका निभा रहे डॉ. मीणा

जानकारी के अनुसार, कुछ साल पहले राजस्थान वित्त निगम की हालत काफी खराब थी और यह निगम घाटे में चल रहा था। लेकिन वर्तमान में राजस्थान वित्त निगम अब घाटे में नहीं, बल्कि प्रॉफिट में है। करीब 21 करोड़ रुपए के प्रॉफिट में राजस्थान वित्त निगम एक मजबूत स्थिति में खड़ा हुआ नजर आ रहा है, जो राजस्थान सरकार के लिए भी राहत की खबर है, तो दूसरी तरफ प्रदेश के उन लोगों के लिए भी अच्छी खबर कहीं जा सकती है जो अपने कारोबार के लिए राजस्थान वित्त निगम की ओर देख रहे हैं। राजस्थान वित्त निगम के घाटे से ऊपर उठकर प्रॉफिट में आना अपने आप में चौंकाने वाला सब्जेक्ट जरूर है, लेकिन यह जो अच्छे हालात निगम के बने हैं उसमें आरएफसी में प्रबंधन का काम देख रहे अधिकारियों की कड़ी मेहनत और उनके प्रयासों का ही परिणाम है कि आज राजस्थान वित्त निगम की आर्थिक हालात मजबूत हुई है। डॉ. मीना राजस्थान वित्त निगम में एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर पद पर वर्तमान में पोस्टेड हैं। इसलिए आईएफसी से जुड़े सभी डिसीजन, नवाचार और तमाम तरह के प्रयासों में डॉ. मीना की भी बड़ी भूमिका मानी जा रही है। कहा जा रहा है कि राजस्थान वित्त निगम की ओर से पिछला बकाया वसूल करने की दिशा में प्रभावी तरीके से काम किया, जिसकी वजह से राजस्थान वित्त निगम की तिजोरी में पैसा आया है। निगम की ओर से वसूली के कार्य को बहुत ही ईमानदारी और प्रभावी तरीके से संपादित किया गया, जिसकी वजह से निगम घाटे से ऊपर उठकर आया। वर्तमान में राजस्थान सरकार की ओर से भी राजस्थान वित्त निगम को 50 करोड़ रुपए और रीको से भी 50 करोड रुपए मिलने वाले हैं। इसलिए राजस्थान वित्त निगम अब अपने काम और जिम्मेदारियां को बखूबी से निभा रहा है। इसका फायदा उन लोगों को भी मिल रहा है जो वित्त निगम से लोन लेने का प्रयास कर रहे हैं।

जयपुर नगर निगम, सामाजिक कल्याण और न्याय विभाग राजस्व विभाग इत्यादि कई विभागों में हरसहाय मीणा के उत्कृष्ट कार्यों की प्रशंसा आज भी करते हैं लोग

जानकार लोगों का कहना है कि जयपुर नगर निगम में अतिरिक्त आयुक्त पद पर रहते हुए हर सहाय मीणा ने कई बड़े ऐतिहासिक निर्णय और कई बड़े शानदार कार्य किए, जिन्हें लोग आज भी याद करते हैं। चाहे वह सफाई कर्मचारियों की भर्ती का मामला हो, चाहे वह हर घर कचरा उठाने की बात हो, ऐसे कई बड़े निर्णय लिए जिन्हें लोग आज भी नहीं भूले हैं। जब तक जयपुर नगर निगम में रहे, तब तक अपने नवाचार, नए प्रयोग और बड़े फैसले लेकर जयपुर नगर निगम के कुशल प्रबंधन को गति और नई दिशा देते रहे। सफाई कर्मचारियों में भी डॉ. मीणा के प्रति काफी आदर और सम्मान का भाव रहा, आज भी सफाई कर्मचारी संगठन के नेता इन्हें खूब याद करते हैं। इसी तरह से उपखंड पद पर रहते हुए अलग-अलग जगह पर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की समस्याओं के निस्तारण के लिए हमेशा गंभीरता से काम करते हुए नजर आए। जिसमें आदिवासी इलाकों में इन्होंने आदिवासी लोगों की भलाई के लिए खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया था। केंद्र सरकार और राज्य सरकार की विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं का फायदा हर जरूरतमंद आदिवासी परिवार को मिले, इसके लिए इस पर इन्होंने अपना पूरा फोकस रखा। इसीलिए सलूंबर के आदिवासी समाज के नेता आज भी इन्हें खूब याद करते हैं। राजस्व विभाग में भी बड़े पद पर रहने के दौरान इन्होंने बड़ी संख्या में पुराने विवादों का निस्तारण करने के साथ-साथ, समय समय पर सरकार के निर्देश पर आयोजित किए गए विभिन्न शिविरों में राजस्व संबंधी तमाम तरह की शिकायतों और कार्यों का निस्तारण करने में डॉ. मीना की काफी अहम भूमिका रही। इन उल्लेखनीय कार्यों के लिए इन्हें सरकार की ओर से सम्मानित भी किया गया। इसी तरह से समाज कल्याण और न्याय विभाग में भी पेपरलेस प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संपादित करने में इनकी बहुत बड़ी भूमिका मानी गई थी, इसके लिए भी इन्हें सम्मानित किया गया। झुंझुनू और जयपुर पूर्व में अतिरिक्त कलेक्टर पद पर रहते हुए भी इन्होंने अपने उल्लेखनीय कार्यों से सरकारों को तो प्रभावित किया ही, इसके अलावा क्षेत्र के लोगों को भी काफी राहत प्रदान की। कुल मिलाकर इनके बारे में यही कहा जाता है कि उपखंड अधिकारी और अतिरिक्त कलेक्टर के रूप में जहां भी पोस्टेड रहे, वहां इन्होंने आमजन के साथ निरंतर अपना जुड़ाव बनाए रखा। निरंतर लोगों से मुलाकात करते रहे और उनकी शिकायतों को सुनकर गंभीरता से शिकायतों के निस्तारण के लिए कार्य भी किया। तथा सरकारी योजनाओं का जरूरतमंद लोगों को फायदा मिले, इस विषय पर इनका सबसे ज्यादा फोकस रहा। इसीलिए इनके गहरे पब्लिक टच की चर्चा शासन सचिवालय के गलियारों, सामाजिक और व्यापारिक संगठनों में भी अक्सर सुनने को मिल जाती है।

छोटे से कार्यकाल में बड़ी उपलब्धि

जयपुर पश्चिम में साइबर ठग और गैंगस्टर पर प्रशांत किरण का हंटर

पुलिस मुख्यालय के निर्देशन में प्रदेशभर में शुरू किए गए ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान में जयपुर पश्चिम का शानदार फॉर्मेंस, कई साइबर अपराधी अरेस्ट, करोड़ों रुपए की रकम को करवाया होल्ड, करोड़ों रुपए की राशि पीड़ितों को लौटाई, बड़े-बड़े गैंगस्टरों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई से अपराध जगत से जुड़े लोगों में मची खलबली

जयपुर(कासं.)। वर्ष 2021 बैच के आईपीएस ऑफिसर प्रशांत किरण आजकल खूब चर्चा में है, इनकी वर्किंग स्टाइल और इनकी मॉनिटरिंग में साइबर ठग तथा गैंगस्टर के खिलाफ की जा रही जयपुर पश्चिम के प्रभावी कार्रवाई से लोगों में तो प्रशंसा हो ही रही है, साथ-साथ अपराध जगत से जुड़े लोग इनका नाम सुनते ही छुपने के लिए बिल की तलाश करते नजर आ रहे हैं। यही वजह है कि जयपुर पश्चिम का इलाका जो पहले बड़े-बड़े गैंगस्टर के मूवमेंट और गतिविधियों के लिए जाना जाता था, उस इलाके में अपराधिक गतिविधियों में पिछले कुछ ही महीना में पहले की तुलना में जबरदस्त गिरावट आई है। जिसमें पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर प्रदेश के सभी जिलों में शुरू किए गए ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान में तो प्रशांत किरण की प्रभावी मॉनिटरिंग से जयपुर पश्चिम पुलिस इस अभियान में अब तक पूरे प्रदेश में अग्रणी भूमिका में नजर आ रही है। इस दबंग, जांबाज और आधुनिक टेक्नोलॉजी के मामले में अच्छी जानकारी रखने वाले नौजवान आईपीएस अफसर को जयपुर पश्चिम डीसीपी पद पर कार्य करते अभी मुश्किल से 2 महीने भी नहीं हुए, लेकिन इस छोटी सी अवधि में ही इन्होंने अपने बुद्धि कौशल, नवाचार और अपने बेहतरीन टीमवर्क के माध्यम से पुलिसिंग में उत्कृष्ट कार्य करके जो उपलब्धियां हासिल की है, उन्हें देखते हुए साफ दिख रहा है कि आने वाले दिनों में यह पुलिस ऑफिसर प्रदेश की जनता और सरकार दोनों के लिए जहां कोहिनूर हीरा की तरह साबित हो सकता है, तो अपराध जगत से जुड़े लोगों के लिए भयानक सपने की तरह साबित हो सकते हैं। वैसे फिलहाल तो जयपुर पश्चिम में अपराध जगत से जुड़े लोगों को रात में ही नहीं बल्कि दिन में भी सपने में इस कड़क पुलिस अफसर का चेहरा देख कर इनसे बचने के लिए नंगे पांव दौड़ लगाकर बिल की तलाश करते नजर आते हैं। पहले भिवाड़ी और अब जयपुर पश्चिम में पुलिस की कमान हाथ में लेने के बाद इन्होंने बहुत ही कम अवधि में जयपुर के व्यापार जगत, सामाजिक संगठन, औद्योगिक संगठन और आमजन का जो भरोसा और विश्वास जीता है, वह अकल्पनीय है। क्योंकि राजस्थान में इनकी जैसे कर्मठ, गतिशील और दबंग नौजवान आईपीएस अफसर और भी हैं, लेकिन इन्होंने इतने कम समय में ही जो उत्कृष्ट प्रदर्शन जयपुर पश्चिम में करके दिखाया, उससे पुलिस मुख्यालय में विराजमान तमाम बड़े सीनियर आईपीएस अधिकारी भी इनसे काफी प्रभावित और संतुष्ट है। साथ-साथ आमजन भी जयपुर पश्चिम में इनकी नियुक्ति से काफी खुश और संतुष्ट दिखाई दे रहा है। इसकी वजह यही है कि जयपुर पश्चिम पुलिस की ओर से रोजाना कोई ना कोई अपराधिक घटनाओं का पर्दाफाश करके बदमाशों की गिरफ्तारी की जा रही है, जिसकी वजह से यहां अपराध जगत से जुड़े लोगों में पुलिस को लेकर एक अजीब डर बैठ गया है। उसका ही परिणाम है कि पिछले कुछ महीना में यहां अपराधी घटनाओं में काफी तेजी से गिरावट आई है, जो जयपुर पश्चिम पुलिस की सक्रियता को इंगित करता है।

अपराध जगत से जुड़े लोगों के लिए जयपुर पश्चिम की लोकेशन बनी हुई है वरदान

इस बात को बिल्कुल भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि जयपुर पश्चिम की लोकेशन कहीं ना कहीं अपराध जगत से जुड़े लोगों के लिए बड़ा वरदान बनी हुई है। जयपुर पश्चिम में ग्रामीण और शहरी दोनों इलाके आते हैं, और जयपुर पश्चिम इलाके से राष्ट्रीय राजमार्गों के अलावा छोटा राजमार्ग भी जुड़े हुए हैं। जयपुर में क्राइम की घटना को अंजाम देने के बाद बदमाशों के फरार होने में जयपुर पश्चिम की लोकेशन काफी मददगार साबित हो जाती है, यही वजह है कि यह इलाका बड़े-बड़े गैंगस्टर से जुड़े बदमाशों की गतिविधियों के लिए सुर्खियों में रहता है। इसके अलावा जयपुर पश्चिम मिलकर में जमीन जायदाद और रियल एस्टेट का कारोबार भी बुलंदियों पर है। यह भी सत्य है कि अपराध जगत से जुड़े लोग अपनी काली कमाई को जमीन जायदाद खरीदने में ज्यादा इन्वेस्ट करते हैं, भले ही चाहे वह अपने नाम से नहीं बल्कि अपने परिजनों, रिश्तेदारों या दोस्तों के नाम से प्रॉपर्टी खरीदे हैं, ताकि जरूरत पडने पर पुलिस से बचने के लिए अपने इन ठिकानों पर छुप जाएं। इसके अलावा जहां जमीन जायदाद का कारोबार ज्यादा होता है, वहां अपराध की घटनाएं स्वाभाविक रूप से ज्यादा होती ही हैं। चाहे वह बदमाशों की ओर से वसूली करने का मामला हो, या फिर प्रॉपर्टी का विवाद हो, या फिर प्रॉपर्टी पर कब्जा करने की बात हो, यह सारे इश्यू अपने आप ही क्राइम से जुड़ जाते हैं। इसीलिए जयपुर पश्चिम इलाके में अपराध जगत से जुड़े लोगों की गतिविधियां ज्यादा देखने को मिली है। इसके अलावा चैन स्केचिंग, वाहन चोरी, नकबजनी, लूट, हत्या जैसे गंभीर अपराध यहां ज्यादा होते रहे हैं। जहां तक साइबर क्राइम का विषय है, यह विषय तो राजस्थान नहीं बल्कि पूरे देश में पुलिस के लिए बड़ी चुनौती बन गया है। लेकिन पिछले करीब दो महीना में यहां विभिन्न तरह के गंभीर अपराधों के आंकड़ों का विश्लेषण करें, तो पहले की तुलना में यहां सभी तरह के अपराध की घटनाओं में जबरदस्त गिरावट आई है। इसमें कहीं ना कहीं प्रशांत किरण की प्रभावी मॉनिटरिंग की वजह से छोटे-बड़े सभी अपराधियों के खिलाफ की जा रही प्रभावी कार्रवाई को बड़ी वजह माना जा रहा है। क्योंकि प्रशांत किरण ने कार्यभार ग्रहण करने के पहले दिन से ही थाना स्तर पर घोषित किए गए हिस्ट्रीशीटर और उसके संपर्क सूत्रों की गतिविधियों पर नियमित रूप से अपनी तीसरी आंख से नजर रखे हुए हैं। इसके अलावा फरार वांटेड अपराधियों की तलाश के लिए प्लानिंग के तहत पुलिस कार्रवाई कर रही है, जिसमें कई वांटेड अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। बड़े-बड़े गैंगस्टर सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म के माध्यम से हथियारों के साथ खुद की ताकत का प्रदर्शन करके लोगों में अपने नाम का डर पैदा करने का जो प्रयास कर रहे हैं, या फिर जो गैंगस्टर हफ्ता वसूली के लिए फोन कॉल, व्हाट्सएप कॉल इत्यादि के माध्यम से व्यवसाईयों पर दबाव बनाते हैं, ऐसे अपराधियों को दबोचने के लिए प्रशांत किरण ने जांबाज और दबंग पुलिस अधिकारी और कर्मचारियों की टीम का गठन किया हुआ है, जिन्हें अलग-अलग कार्य की जिम्मेदारी दी गई है। इसमें साइबर फ्रॉड को रोकने के लिए भी जो पुलिस अधिकारी और कर्मचारी आधुनिक टेक्नोलॉजी के बारे में अच्छी जानकारी रखते हैं, उनकी एक विशेष टीम बनाई हुई है। इस टीम ने ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान में बहुत ही शानदार परफॉर्मेंस करके बड़ी संख्या में साइबर अपराधियों को गिरफ्तार भी किया है, और इनकी ओर से डकारी गई करोड़ों रुपए की राशि को पीड़ित लोगों को वापस भी लौट आया है। इसलिए पिछले दो महीना में एक तरफ जहां जयपुर पश्चिम पुलिस की ओर से कई बड़े-बड़े गैंगस्टर ग्रुप से जुड़े बदमाशों को अरेस्ट किया है, तो बड़ी संख्या में साइबर अपराधियों को भी दबोचा है। इसलिए पुलिस की इस सतत कार्रवाई से पिछले दो महीना में जयपुर पश्चिम में गंभीर अपराध के आंकड़ों में जबरदस्ती गिरावट आई।

ऑपरेशन म्युल फंड हंटर अभियान में जयपुर पश्चिम पुलिस का बेमिसाल पर फॉर्मेंस

पुलिस मुख्यालय की ओर से साइबर फ्रॉड की घटनाओं को रोकने और साइबर फ्रॉड की घटनाओं को अंजाम देने वाले लोगों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई करने के लिए पूरे प्रदेश में ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान संचालित किया जा रहा है, जिसमें प्रदेश के सभी जिलों में पुलिस की ओर से यह अभियान संपादित किया जा रहा है। इस अभियान में जयपुर पश्चिम पुलिस ने डीसीपी प्रशांत किरण की प्रभावी मॉनिटरिंग से बड़ी संख्या में साइबर अपराधियों को अरेस्ट किया है। जयपुर पश्चिम पुलिस ने ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान में करीब 35 करोड़ रुपए की ठगी करने का खुलासा किया है, जिसमें कालवाड़, करधनी, बगरू, चित्रकूट, करणी विहार इत्यादि पुलिस स्टेशन में दर्ज विभिन्न मामलों में बड़ी संख्या में साइबर ठग को इस विशेष अभियान के तहत गिरफ्तार किया गया है। करीब 4 करोड़ रुपए की फ्रॉड की राशि जयपुर पश्चिम पुलिस ने होल्ड करवाया भी करवाया है, तथा करीब एक करोड़ 35 लाख रुपए पीड़ित लोगों को पुलिस ने वापस भी करवाया है। इस अभियान में जयपुर पुलिस ने साइबर फ्रॉड करने वाले बड़े ग्रुप के लोगों को दबोचा है। इस ग्रुप के तार देश के महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और कई अन्य जिलों से भी जुड़े हुए हैं। जयपुर पश्चिम पुलिस का कहना है कि जयपुर पश्चिम पुलिस ने ही करीब 35 करोड़ के साइबर फ्रॉड का खुलासा किया है, तो फिर अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस ग्रुप ने अन्य राज्यों में कितने बड़े पैमाने पर साइबर फ्रॉड किया होगा, इसलिए जयपुर पश्चिम पुलिस की इस कार्रवाई को बहुत बड़ी माना जा रहा है। यह कार्रवाई डीसीपी प्रशांत किरण के नियमित प्रभावित मॉनिटरिंग की वजह से ही सफलतापूर्वक संपादित हो सकी। प्रशांत किरण ने इसके लिए बाकायदा तकनीकी रूप से दक्ष पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों की एक टीम का गठन किया था, जो जिले के विभिन्न पुलिस थानों से निरंतर संपर्क और सामंजस्य बनाकर ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान को क्रियान्वित कर रही है। इस अभियान पर प्रशांत किरण नियमित रूप से टीम के अधिकारियों से फीडबैक लेते रहते हैं, और अपनी ओर से आवश्यक दिशा निर्देश भी देते रहते हैं। जहां पर तकनीकी नॉलेज और आधुनिक संचार संसाधनों से जुड़ी कोई समस्या सामने आती है, तो प्रशांत किरण उसका भी निराकरण करते हैं। क्योंकि प्रशांत किरण ने बिट्स पिलानी से बीटेक किया हुआ है, इसलिए तकनीकी रूप से प्रशांत किरण भी काफी दक्ष और कुशल हैं। उसी का परिणाम रहा की साइबर फ्रॉड के इस व्यापक और बड़े नेटवर्क का खुलासा

हो पाया। जानकारी के अनुसार साइबर क्राइम को अंजाम देने वाले अपराधी लोगों से हड़पी गई धनराशि को पुलिस की कार्रवाई से बचने के लिए लोगों के बैंक खाता किराए पर ले लेते हैं, और फिर इन खातों में ठगी गई धनराशि को ट्रांसफर करते रहते हैं। इसमें कई बार साइबर ठग बैंक प्रशासन से जुड़े बड़े लोगों से भी मिलीभगत करके लोगों के बैंक अकाउंट किराए पर ले लेते हैं। इस तरह की साइबर ठगी की घटनाएं देश के सभी राज्यों की पुलिस के लिए बड़ा सिर दर्द और बड़ी चुनौती बने हुए हैं। इसीलिए इस तरह की वारदातों को अंजाम देने वाले साइबर ठग को चिन्हित करके उन्हें अरेस्ट करने के लिए पुलिस मुख्यालय ने ऑपरेशन म्युल हंटर अभियान का पूरे प्रदेश भर में शुभारंभ करवाया, जिसमें जयपुर पश्चिम पुलिस का अब तक बहुत ही अच्छा प्रदर्शन रहा है। इस तरह की वारदातों को अंजाम देने वाले साइबर ठग काफी उस्ताद होते हैं। जयपुर पश्चिम पुलिस ने एक ऐसे गैंग का भी खुलासा किया जो फर्जी तरीके से ईमित्र खोलकर लोगों को जाल में फंसा कर उनके साथ ईमित्र संबंधी काम करने की आड़ में ठगी कर रहे थे।

प्रशांत किरण के अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी पिता को अपने बेटे की उपलब्धि पर है गर्व

प्रशांत किरण के पिता विनोद कुमार सिंह अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी पद पर पोस्टेड हैं। प्रशांत किरण बचपन में ही काफी मेघावी छात्र थे, पढने में काफी इंटेलिजेंट थे। जमशेदपुर में वर्ष 2009 में इन्होंने दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की, और फिर वर्ष 2011 में समस्तीपुर संत जोसेफ से इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करके बिट्स पिलानी से बीटेक किया। और एमएससी अर्थशास्त्र में 5 साल का कोर्स कंप्लीट करके वर्ष 2016 में फ्लिपकार्ट बेंगलुरु में प्रोडक्ट मैनेजर पद पर नौकरी भी की। लेकिन इस पद पर कार्य करने से इन्हें आत्म संतुष्टि नहीं मिल रही थी, लोगों की सीधे तौर पर ज्यादा से ज्यादा सेवा करना चाहते थे। इसलिए नौकरी छोड़कर इन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू की, और वर्ष 2021 में भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा के पहले ही चांस में इन्हें सफलता मिली, जिसमें इन्हें आईपीएस सेवा के लिए चुना गया। आईपीएस की ट्रेनिंग के बाद इन्हें वर्ष 2022 में राजस्थान केडर अलॉट किया गया। अपने प्रशिक्षु अवधि के दौरान इन्होंने सीकर रेंज आईजी दफ्तर में लीव रिजर्व के रूप में कार्य किया। इसके अलावा सर्किल ऑफिसर के रूप में भी सीकर में इन्होंने अपनी सेवाएं दी। बाद में जिला पुलिस अधीक्षक के रूप में इन्हें भिवाड़ी जैसे संवेदनशील जिले में पहले ही पोस्टिंग दी गई, जहां पर इन्होंने अपनी कार्यशैली, नवाचार और जनता से नियमित रूप से अपने गहरे संवाद के माध्यम से भिवाड़ी में कानून और शांति व्यवस्था बनाए रखने में अच्छी भूमिका निभाई। जबकि भिवाड़ी जैसा जिला हमेशा ही क्राइम की घटनाओं को लेकर सुर्खियों में रहता है, दिल्ली एनसीआर, अलवर के मेवात क्षेत्र से जुड़े रहने की वजह से भिवाड़ी में एक अलग ही तरह का क्राइम की घटनाओं का माहौल बना रहता है। लेकिन प्रशांत किरण ने भिवाड़ी में अपनी नौकरी के दौरान बड़े-बड़े गैंगस्टर से जुड़े लोगों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई की, आमजन और पुलिस के बीच दोस्ताना संबंध बनाने में भी बड़ी भूमिका निभाई। इसके अलावा व्यापारियों, उद्योगपतियों और सामाजिक संगठनों इत्यादि से नियमित रूप से संवाद करके जिले में अपराधों पर अंकुश लगाने में जबरदस्त सफलता हासिल की थी। इसीलिए प्रदेश की भजनलाल सरकार ने इनके अच्छे परफॉर्मेंस को देखते हुए जयपुर पश्चिम जैसे संवेदनशील जिले की कमान इनके हाथ में दी। कुछ ही सालों में अपनी आईपीएस की नौकरी में बिहार के इस दबंग नौजवान ऑफिसर ने जो उत्कृष्ट कार्य राजस्थान में करके दिखाया, उस पर इनके माता-पिता और परिजनों को भी काफी गर्व है। यूपीएससी के पहले ही प्रयास में देश के सबसे बड़े एग्जाम में सफलता हासिल करने के बाद प्रशांत किरण ने कहा था कि अगर नियमित रूप से रोजाना 8 घंटे पढ़ाई की जाए और मन में दृढ़ निश्चय कर लिया जाए, तो फिर कोई भी एग्जाम पास किया जा सकता है। प्रशांत किरण ने कहा कि उन्होंने नियमित रूप से नौकरी छोड़ने के बाद 8 घंटे सेल्फ स्टडी की।

डीपी प्रशांत किरण ने गुमऔर चोरी होने वाले मोबाइल के लिए सी.ई.आई.आर. पोर्टल पर तुरंत शिकायत करने की की अपील

देशभर में चोरी और गुम होने वाले मोबाइल फोन के बारे में शिकायत करने के लिए भारतीय दूरसंचार विभाग ने भी साथी संचार पोर्टल की व्यवस्था की है, जिसमें सीईआईआर पर तुरंत अपनी शिकायत अपलोड करने के बारे में सुविधा प्रदान की है। इसके बारे में जयपुर पश्चिम डीसीपी प्रशांत किरण ने भी लोगों से अपील की है कि अगर उनका मोबाइल फोन गुम हो जाता है या फिर चोरी हो जाता है, तो इसकी शिकायत तुरंत दूरसंचार विभाग की ओर से साथी संचार पोर्टल पर अपलोड करें। ताकि उनके चोरी हुए या गुम हुए मोबाइल फोन पर अगर कोई अपनी सिम लगाकर उस मोबाइल फोन का उपयोग करेगा, तो उसकी जानकारी तुरंत पुलिस को मिल जाएगी और उनका चोरी और गुम हुआ मोबाइल फोन उन्हें वापस भी मिल सकता है, और कई अन्य तरह की परेशानियों से भी उन्हें छुटकारा मिल सकता है। इसलिए चोरी और गुम होने वाले मोबाइल फोन की जानकारी तुरंत संचार साथी पोर्टल पर अपलोड करें। प्रशांत किरण ने कहा कि यह सिर्फ 10 मिनट की करवाई होती है, जिसमें आपको अपना चोरी हुआ या गुम हुआ मोबाइल फोन भी भविष्य में मिल सकता है, और पुलिस की जांच को भी इससे काफी संभल मिलता है। उन्होंने कहा कि अगर किसी को ऑनलाइन तरीके से संबंधित पोर्टल पर शिकायत करना नहीं आता है, तो किसी अन्य जानकार व्यक्ति से पोर्टल पर अपनी शिकायत और चोरी हुए मोबाइल फोन का बिल अपलोड करें। इसके लिए पुलिस में मामला दर्ज करवाना भी थोड़ा जरूरी होता है, साथ-साथ पुलिस स्टेशन में जाकर भी अपनी शिकायत पोर्टल पर अपलोड करवा सकते हैं।

मेरे ऑफिस के दरवाजे 24 घंटे फरियादियों के लिए खुले हैं

जिस दिन प्रशांत किरण ने जयपुर डीसीपी का कार्यभार ग्रहण किया था, उस पहले दिन ही उन्होंने संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक करने से पहले ऑफिस में अपनी शिकायत लेकर आए पीड़ित लोगों की शिकायत सुनी। उस दिन ही यह एहसास हो गया था कि प्रशांत किरण फरियादियों के लिए कितने सजक और गंभीर रहते हैं। प्रशांत किरण ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान साफ कहा भी है कि प्रत्येक फरियादी के लिए उनके दफ्तर के दरवाजे 24 घंटे खुले हैं। अगर उनके पास कोई लिखित शिकायत है तो लिखित शिकायत लेकर भी उनसे मिल सकते हैं, और अगर उनके पास लिखित शिकायत नहीं भी हो, तो मौखिक रूप से अपनी पीड़ा उन्हें जाकर किसी भी समय बता सकते हैं, इसके लिए उनके दरवाजे हमेशा खुले हैं। इसमें कोई संदेह नहीं प्रशांत किरण रोजाना समय पर दफ्तर पहुंचते हैं, और दफ्तर पहुंचने के बाद सबसे पहले दफ्तर में मौजूद पीड़ित लोगों की शिकायत को सुनते हैं और उनका समाधान करने का हर संभव प्रयास भी करते हैं। प्रशांत किरण का साफ कहना है कि उन्होंने पुलिस की नौकरी इसी मकसद से ज्वाइन की है कि वे लोगों की ज्यादा से ज्यादा हेल्प करें, ज्यादा से ज्यादा लोगों की परेशानियों का समाधान करें, समाज की सेवा करें, और जो लोग गलत दिशा में भटक रहे हैं उन्हें सही रास्ता दिखाएं।

जयपुर पश्चिम से सीधे जुड़े राष्ट्रीय राजमार्गों और छोटे राजमार्गों पर पुलिस एक कड़ी नाकाबंदी को किया सुनिश्चित

जयपुर पश्चिम इलाके से जयपुर दिल्ली, जयपुर अजमेर, जयपुर सीकर जैसे सड़क मार्ग सीधे जुड़े हुए हैं। इसके अलावा जयपुर पश्चिम में शहरी और ग्रामीण इलाका आता है, जहां ग्रामीण इलाके में एक गांव से दूसरे गांव को जोडने़ वाले छोटे-छोटे सड़क मार्ग भी कई बार अपराधियों को फरार होने में मददगार बन जाते हैं। इसलिए अपराध की घटना को अंजाम देने के बाद अपराधी इलाके से फरार नहीं हो, यह तभी संभव है जब जयपुर से जुड़े छोटे-बड़े सभी सड़क मार्गों पर पुलिस की नाकाबंदी तगड़ी हो, और नाकाबंदी में तैनात पुलिस अधिकारियों के पास अत्याधुनिक हथियार भी जरूरी हो। क्योंकि आजकल छोटे से छोटे अपराधी के पास भी विदेशी कीमती हथियार मिल जाते हैं, जिन्हें दिखाकर या फिर जिसके दम पर वह पुलिस की टीम पर हमला करके फरार भी हो जाता है। इसलिए इस विषय पर प्रशांत किरण ने बहुत ही प्रभावी तरीके से कार्य किया है। क्योंकि प्रशांत किरण पूर्व में भिवाड़ी जैसे संवेदनशील जिले के पुलिस अधीक्षक भी रह चुके हैं, इसलिए उन्हें संगठित अपराध ग्रुप की गतिविधियों और उनकी हरकतों के बारे में अच्छी जानकारी रखते हैं। प्रशांत किरण ने भिवाड़ी में भी संगठित अपराध ग्रुप से जुड़े बदमाशों के खिलाफ बहुत ही शानदार प्रभावी कार्रवाई करके दिखाई थी। इसलिए जयपुर पश्चिम में भी अपराधियों को जयपुर से भागने न दिया जाए, इसके लिए जयपुर पश्चिम में छोटे बड़े सभी सड़क मार्गों पर पुलिस की तगड़ी नाकाबंदी को प्रभावी रूप से संचालित करने के निर्देश दिए, ताकि खूंखार से खूंखार अपराधी को भी भागने से रोका जा सके।

वर्तमान परिपेक्ष में साइबर अपराधों को रोकने के लिए जन जागरण अभियान बहुत जरूरी

प्रशांत किरण का कहना है कि साइबर क्राइम को रोकने के लिए लोगों में जन जागृति पैदा करना बहुत जरूरी है। इसके लिए उनकी भी यह पूरी कोशिश रहती है कि पुलिस की ओर से स्कूल, कॉलेज और अन्य जगहों पर ज्यादा से ज्यादा कार्यक्रम आयोजित करके छात्र-छात्राओं को मोबाइल फोन, फेसबुक, व्हाट्सएप, इत्यादि के उपयोग में छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने की बात को समझाया जाए। हर किसी से और अनजान व्यक्ति से अपने बैंक अकाउंट, अपने परिजनों के बैंक अकाउंट और इत्यादि महत्वपूर्ण जानकारियां बिल्कुल भी शेयर ना करें, और मोबाइल फोन पर अज्ञात फोन नंबर से बात करने से बचे। भूलबस अगर कई बार फोन उठा भी लिया जाता है, तो बातचीत करते समय अपने और अपने परिजनों के बारे में किसी भी तरह की कोई भी जानकारी मोबाइल फोन पर किसी से भी शेयर ना करें, और ना ही किसी के झांसे और बहकावे में आए। और अगर कोई लगातार आपको हरासमेंट कर रहा है, तो इसके लिए तुरंत पुलिस को भी सूचित करें। प्रशांत किरण ने छात्र-छात्राओं और छोटे बच्चों से भी आग्रह किया है कि वह बिल्कुल भी अनजान कॉल पर या फिर व्हाट्सएप, फेसबुक इत्यादि के माध्यम से अपनी और अपने परिजनों की पर्सनल जानकारी को शेयर ना करें और ना ही किसी के लालच में आए। और अगर शुरू में कुछ गलती भी हो जाती है, तो इसके बारे में अपनी गलती को छुपाए नहीं बल्कि अपने परिजनों को बताएं और पुलिस के साथ भी शेयर करें, ताकि सही समय पर पुलिस प्रभावी कार्रवाई कर सके।

CAMBRIDGE SR. SEC. SCHOOL

Admission Open 2026-27

प्रवेश सत्र 2026-27 से

विद्यालय परिवार की तरफ से विशेष योजना का शुभारंभ

25 प्रतिशत निःशुल्क (RTE) के
अलावा 25 प्रतिशत और अतिरिक्त
आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को
ट्यूशन फीस फ्री करने का लिया निर्णय

C-586,587, 588, 589, 4C SCHEME, NEW LOHA MANDI ROAD, JAIPUR

7230022801, 9983322224

राजस्थान सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा विज्ञापन के लिए मान्यता प्राप्त

जयपुर टाइम्स

(जयपुर एवं चूरू से एक साथ प्रकाशित)

दैनिक जयपुर टाइम्स

2 साल में भजनलाल शर्मा ने जो कार्य किया, उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, भविष्य में एक सफल एवम कामयाब मुख्यमंत्री के रूप में भजन लाल शर्मा का नाम लिया जाएगा: राजनाथ सिंह

पाकिस्तान ने फिर से नापाक हरकत की तो उसका ऐसा हाल करेंगे जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी

दैनिक जयपुर टाइम्स

प्रधानमंत्री के सबका साथ, सबका विकास के मूल मंत्र पर राज्य सरकार निरंतर कर रही कार्य: भजनलाल शर्मा

3 राज्य जयपुर टाइम्स

साइबर क्राइम के नेटवर्क की कमर तोड़ने वाले ठंडे दिमाग और विलक्षण प्रतिभा के धनी आईपीएस 'संजीव नैन'

जयपुर टाइम्स

3 विशिष्ठ व्यक्तित्व जयपुर

3 राज्य जयपुर टाइम्स

सीमित संसाधनों से विकास के नए आयाम हासिल करने में माहिर हैं अर्तिका शुक्ला

जयपुर टाइम्स

ऋषि मुनियों जैसे पेड़ों से करते हैं प्यार, जमवारामगढ़ क्षेत्र में नए पेड़ों से ले आए बहार

जयपुर टाइम्स

3 विशिष्ठ व्यक्तित्व जयपुर

जयपुर टाइम्स

3 राज्य जयपुर टाइम्स

जयपुर टाइम्स

3 राज्य जयपुर टाइम्स

मानवता, दबंगता, दानशीलता और युवा शक्ति का अभूतपूर्व संगम है 'विजय पूनिया'

जयपुर टाइम्स समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने के लिए क्लिक करें

www.jaipurtimes.org

https://www.youtube.com/@JaipurTimes

@JaipurTimes2

@jaipurtimes.news

जयपुर टाइम्स में संवाददाता बनने के लिए, विज्ञापन एवं समाचार प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें :-

Email- jaipurtimes2007@gmail.com (समाचारों के लिए)

Email- jaipurtimes.adv@gmail.com (विज्ञापनों के लिए)

मो. 7014217770

प्रधान कार्यालय- सी 588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, रोड़ नं. 14, सीकर रोड़, जयपुर (राजस्थान)